BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 सितम्बर-31 अक्टूबर, 2023 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

खेती-बारी विशेषांक

भाग-2

लौटे के खेती-बारी के ओर !

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र होखब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सताइसवां राष्ट्रीय अध्यक्ष

जमशेदपुर। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, बिहार के राष्ट्रीय प्रवर समिति आ कार्य समिति के 24 सितम्बर, 2023 के 'तुलसी भवन' जमशेदपुर (झारखंड) में भइल अत्यंत महत्वपूर्ण संयुक्त बइठक में निर्णय लिहल गइल कि भोजपुरी-हिन्दी के जानल-मानल साहित्यकार आ समीक्षक डॉ. ब्रजभूषण मिश्र सम्मेलन के सताइसवां राष्ट्रीय अध्यक्ष होखब। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह 'जय' बतवनी कि सत्तर के दशक से भोजपुरी भाषा, समाज, संस्कृति, साहित्य आ शिक्षा के निर्माण, उत्थान आउर वैश्विक पहचान खातिर लगातार सुव्यवस्थित पद्धति से काम करे वाला एह संगठन के इतिहास बहुते गौरवशाली रहल बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से बतौर प्रबंध मंत्री, प्रचार मंत्री आ सदस्य के रूप में लगभग तीन दशक से जुड़ल सुप्रसिद्ध कवि आ भोजपुरी जंक्शन के संपादक मनोज भावुक बतवनी कि डॉ. मिश्र के रूप में एगो सरल-सहज विद्धान, योग्य आ कर्मठ व्यक्तिव आउर भोजपुरी के जीये वाला साधक के अध्यक्ष पद के जिम्मेवारी देहल भोजपुरी के बेहतर भविष्य के ओर इशारा करत बा।

मालूम होखे कि डॉ. मिश्र ओह भोजपुरी सेवी संगठन के भावी अध्यक्ष मनोनीत भइल बानी जवना के एकरा पहिले अध्यक्ष के रूप में डॉ. उदय नारायण तिवारी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, डॉ. विवेकी राय, पाण्डेय कपिल, डॉ. प्रभुनाथ सिंह, डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव जइसन विद्वानन के नेतृत्व प्राप्त हो चुकल बा। डॉ. मिश्र सम्मेलन के छब्बीसवां आ वर्तमान अध्यक्ष संस्कृत, हिन्दी आउर भोजपुरी के वयोवृद्ध विद्वान साहित्यकार डॉ. हरेराम त्रिपाठी चेतन के बाद अइसन अध्यक्ष होखब जे पहिले एह राष्ट्रीय संगठन के महामंत्रियो रह चुकल बानी। आवे वाला 16 आ 17 दिसम्बर, 2023 के जमशेदपुर (झारखंड) में आयोजित सम्मेलन के सताइसवां दू दिवसीय अधिवेशन में डॉ. मिश्र के अध्यक्ष के दायित्व सउँपल जाई।

डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ. हरेराम त्रिपाठी 'चेतन', डॉ. महामाया प्रसाद विनोद, कनक किशोर, कुमार विरल, सुभाष यादव, गंगा प्रसाद अरुण, डॉ. सुनील कुमार पाठक, डॉ. जयकान्त सिंह 'जय', डॉ. ओमप्रकाश राजापुरी आदि लोग डॉ. मिश्र के अध्यक्ष मनोनीत भइला पऽ खुसी व्यक्त करत उहाँ के बधाई देले बानी लो।***

वर्ष :4, अंक : 1-4 | 1 सितम्बर-31 अक्टूबर, 2023

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित । संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा ।

खबर.....02

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र होखब
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
के सताइसवां राष्ट्रीय अध्यक्ष

एह अंक में

सुनीं सभे

काहे राम भक्त बाड़ें ऋषि सुनक ?.....6

आलेख

भगवती प्रसाद द्विवेदी / उगे रे मोर सुगना.....8
डॉ. प्रेमशीला शुक्ल / उपजे धाना.....11
मंजूश्री/ खेती-बारी.....15
दिनेश पाण्डेय/ जुगे-जुगे धान.....19
सुरेश कांटक/ भारत के किसान आ किसानी.....24
कृष्ण मुरारी राय / मानव समाज क आधार बा खेती.....28
विनय बिहारी सिंह/ पहिले कमाए वाला आदमी.....31
डॉ. प्रभाकर पाठक/ हर के हर बात सुनीं.....33
संध्या सिंह / भात.....35

किसान आंदोलन

महामाया प्रसाद विनोद/ बिहार में स्वतंत्रता पूर्व किसान आंदोलन.....37
गोपाल ठाकुर / नेपाल में किसान आंदोलन:श्रुति-स्मृति.....39
गोपाल जी राय / एगो रहलन सहजानंद.....45

संगीत

प्रकाश उदय / खेती-किसानी के लोक धुन.....47
डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल / हरवा जोतत तोर गोड़वा पिरइले.....49
रामेश्वर गोप/ एक मुट्ठी सरसों, पीट-पीट बरसो.....51

विशेष

ओम प्रकाश अश्क / आज के किचन गार्डन, पहिले के फरहरी.....53
पृथ्वी राज सिंह / तीना के खेती.....55
शशिकांत मिश्र / एलोवेरा के डबल धमाल.....58

राउर पाती - 60

डॉ. राजाराम त्रिपाठी, चंद्रेश्वर, हरेराम त्रिपाठी चेतन, हरिंद्र हिमकर, प्रभाकर पाठक, डॉ. दिवा, मिथिलेश गहमरी, गुरुचरण सिंह, अजय कुमार पाण्डेय, सविता सौरभ, वीणा सिन्हा, अनिल ओझा नीरद, कमलेश पांडेय, डॉ. मनोज कुमार सिंह, मंजुश्री, अनिल कुमार दुबे अंशु, मार्कण्डेय शारदेय, शंकर मुनि राय गड़बड़, स्यन्दन सुमन, अंकुश्री, कनक किशोर

The Indian Public School

Dehradun

The 21st century gurukul

- Auditorium with a seating capacity of 1500
- 2 Swimming Pools
- In- House Dairy with more than 200 Cows Supplying pure fresh milk & dairy products to the Mess
- 80 acres of lush green campus
- Co- educational Residential School with qualified & experienced teachers
- Modern Academic Block with laboratories, Music & Art rooms with covered area measuring 60,000 sq. ft.
- Horse Riding Facility
- Smart Classrooms
- Excellent Games & Sporting facilities: Cricket, Football, Chess Badminton, Basketball, Volleyball, Tennis, Rugby, etc.

ADMISSION OPEN

For Classes III-IX & XI - 2022-23

www.indianpublicschool.com

+91 9568012777 | +91 9568012778

संपादकीय

लौटे के खेती-बारी के ओर!

खेती-बारी प लिखे बइठल बानी त हर-बैल, गाय-गोबर, नाद-भूसा, सानी-पानी, खोंप-पलानी, खूँटा-खुरपी, पुअरा-अँटिया, ऊँख-महिया, फूआ-चाची, चिउरा-सजाव दही, दूध के छाल्ही, भइया के साली, माँड़ो-मंडप, माँड़ो के गाली, नेवता-हँकारी, पंडीजी-हजाम, हरदी-धान, कच्ची-पक्की, रिश्ता-नाता, शादी-बिआह...दुका-दुका मन परत बा।

मन परत बा कि पहिले नेह आ नेग बँटात रहे, अब नोट बँटाता। पहिले सामान जोखात रहे, अब रिश्ता-नाता जोखाता। पहिले कउआ उचरे भा चिठ्ठी आवे के रहे त कौतूहल, बेचैनी आ बेताबी रहत रहे। अब त व्हाट्सएप युग में भाव आ भावना अंतस तक पहुँचे के पहिलहीं स्खलित हो जाता।

भाव, भावना, संवेदना, तड़प, बेचैनी जब एक्सट्रीम पर भा एगो लेवल पर पहुँचेला त उहाँ कुछ बात होला। खुदाई कइला पर पानियो एगो लेवले पर जाके निकलेला। मन एगो लेवल तक मथाला त स्वतः स्फूर्त रत्न निकलेला। तब मन ओह अवस्था में पहुँच जाला कि बेकहले बहुत कुछ कहाला, पानी के धार के तरह। महतारियो असह्य दर्द के बादे शिशु के जन्म देली। सतह पर कुछ नइखे। हड़बड़ी आ भागमभाग में कुछ नइखे। आखिर Melting Point, Boiling Point भा Freezing Point का ह? एगो लेवल ह। ना त, हड़बड़ी के बिआह, कनपट्टिये सेनुर।

देखीं, फास्ट भा आधुनिक भइला में कवनो खराबी नइखे। मशीन भा टेक्नोलॉजी समय के माँग बा, उपलब्धि बा। एह से जीवन आसान भइल बा, उन्नत भइल बा। मशीन वरदान बा बाकिर मशीन के साथे मशीन बन गइल अभिशाप बा।

हम नइखीं कहत कि धोती-कुर्ता भा साड़िए पहिन के रहीं। जींस पैन्ट, टी-सर्ट भा टाई में कवनो बुराई नइखे। अंग्रेजी भा फ्रेंच बोलला में कवनो परेशानी नइखे। हमनी के समझे के होई कि हमनी टाई (कपड़ा) भा अँग्रेजी (भाषा) ना हईं। अतने ना, हमनी के डॉक्टर, इंजीनियर भा कलक्टरो ना हईं। ई सब त एगो ओहदा ह, हुनर ह, जवना के उपयोग क के सेवा करे के बा। हमनी के पद्मश्री, पद्मविभूषण, ज्ञानपीठ, दादा साहेब फाल्के, फिल्मफेयर या मैग्सेसे पुरस्कार आवार्डी भी ना हईं जा। ई त चुचकारल-पुचकारल-सराहल ह।

हमनी के हईं जा ऊ, जे एह धरती पर लंगटे आवेला आ लंगटही लौटबो करेला। त आवरण से एतना मोह काहे? डॉक्टर, इंजीनियर, कलक्टर, साहित्यकार, नेता-अभिनेता, बड़का-छोटका, बाभन-बनिया, दाढ़ी-टाई, अंग्रेजी-भोजपुरी के लपेटा में हमनी के एतना ना लपेटाइल बानी जा कि अपना अस्तित्वे के बोध नइखे। आपन मूले भुलाइल बा। मूल से भटक के हमनी के खाली आवरण रह गइल बानी जा। अरे, ई सब ओढ़ल लबादा ह। फेंकी महाराज।

जेतना आवरण, ओतने नकली व्यवहार-आर्टिफिसियल विहैवियर। एही से अब आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस के समय आ गइल बा। असली इंटेलिजेंस में त बनावटीपन आ दिखावा भर गइल बा, काहे कि ऊ खाली लाभ खातिर काम करत बा, मानवता खातिर ना। एह से ओकरा पास सुख के साधन त बा, सुख नइखे।

सुख आ आनंद त नवजात शिशु के पास बा। कोरा में के लइका के पास बा। ऊ नकली हँसी हँसिये ना सके। साँचो के हँसेला, साँचो के रोवेला।

सुख आ आनंद त हमनी से बेसी जानवर आ पशु-पंछी के पास बा। ऊ मकान के ईएमआई खातिर, आईएएस ना बनला खातिर भा कवनो तरह के तथाकथित सफलता खातिर सुसाइड नइखे करत। काहे? काहे कि ऊ प्रकृति के करीब बा। दुनिया भर के आवरण नइखे ओढ़ले, अपना मूल स्वरूप के करीब बा। एही से मस्त बा।

मस्त रहे के बा त लँगटे होखे के पड़ी। दुनिया भर के आवरण उठा के फेंके के पड़ी। आवरण से हमार मतलब कपड़ा से कत्तई नइखे। जाति-धर्म, पद, बड़-छोट, अमीर-गरीब से बा। एह सब आवरण के अपना दिलो-दिमाग पर हावी कर लेला पर आदमी भटकाव आ भूल-भुलइया में फँस जाला। हम डेढ़-दू सौ लोग के इंटरव्यू कइले बानी। एक-से-बढ़-के एक दिग्गज लोग के। अरबपति से कंगाल तक आ आईएएस से लेके संत तक। ...खूब प्यार से केहू के कान्हा पर हाथ धके हाल-चाल पूछीं। अगर आदमी फिल्टर हटा देव त नब्बे फीसदी से बेसी लोग छलक जाई। एतना आवरण बा, एतना कि आदमी खुल के रोइयो नइखे पावत, हँसल त दूर।

त ई हाल बा आदमी के! ... आ इहे हाल बा खेती-बारी के। जइसे आदमी भीतर से दुखी बा, ओइसे मटियो दुखी बा। दरअसल, जइसन आदमी बनल, ओइसने खेतवो बन गइल। विकास के नाम पर, आगे बढ़े के होड़ में, तात्कालिक लाभ खातिर आदमी प्रकृति के साथे खेलवाड़ कइलस। कोरोना सोझा आके खाड़ हो गइल। पूरा दुनिया काँप गइल। तात्कालिक लाभ खातिर आदमी हरित क्रांति के नाम पर खेत से खेलवाड़ कइलस। खेत जहर उगले लागल। अमृत देवे वाला खेत अपना फल आ अनाज से कैंसर आ दुनिया भर के बेमारी देवे लागल।

शुरू हो गइल बा, आपन पुरनका खेती-जैविक खेती। शुरू हो गइल बा गाँव के तरफ लौटल। लोग के समझ में आवे लागल बा – 'उत्तम खेती, मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान'। लोग माटी से जुड़े लागल बा। माटी के आदमी माटी से जुड़ल रही त नकली ना होई।

त लौटे के गाँव के ओर, भलहीं शहरे में गाँव काहे ना बनावे के पड़े। लौटे के खेती-बारी के ओर, भलहीं अपना मकान के छते पर खेत काहे ना बनावे के पड़े। समा जाए के प्रकृति के गोद में, भलहीं अपना आस-पास जंगल काहे ना निर्मित करे के पड़े।

आदमी मशीन हो गइल बा। ऊ आदमी बने। खेती-बारी अपने लहलहा जाई। बात बस अतने बा।

प्रणाम!

मनोज भावुक

***

सुनीं सभे

आर.के. सिन्हा

काहे राम भक्त बाड़ें ऋषि सुनक?

आज पूरा यूरोप में हिंदू आ हिंदू धर्म के करीब से जाने के जिज्ञासा बढ़त जा रहल बा। राम कथा के बाद कई घण्टा तक ब्रिटिश प्रधानमंत्री सुनक भगवान श्री राम के प्रसाद के वितरण करत रह गइलें। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में मुरारी जी बापू के राम कथा में ऋषि सुनक भाग ले के सही संदेश दिहलें कि ऊ ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के साथ-साथ एक आस्थावान सनातनी हिंदू भी बाड़ें। कई दशक पहिले सुनक के परिवार भारत छोड़ के अफ्रिका होत इंग्लैंड में जा के बस गइल रहे। पाश्चात्य संस्कृति के कवनों बुरा असर ए परिवार पर ना परल। एकरा उलट भारत में दू लाइन पढ़ लेवे वाला सबसे पहिले राम आ रामायण पर ही सवाल उठावल शुरू कर देला। ई महज सस्ता लोकप्रियता खातिर कइल जाला।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के कुछ समय पहिले राम कथा में शामिल भइल आ भगवान राम के प्रति आस्था के सार्वजनिक अभिव्यक्ति अनुकरणीय बा। ई साफ बा कि जे जेतने अंश में ही हिंदू बा, ओकर ओतने अंश में ही स्वागत होखे। ऋषि सुनक ना केवल अपना देश ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में राम कथा में "जय सिया राम" के उद्घोष कइलें बल्कि वैश्विक समस्यन से निपटे खातिर हिंदू धर्म के सहारे कार्य करत रहे के प्रण भी लिहलें।

आज पूरा यूरोप में हिंदू आ हिंदू धर्म के करीब से जाने के जिज्ञासा बढ़त जा रहल बा। राम कथा के बाद कई घण्टा तक ब्रिटिश प्रधानमंत्री सुनक भगवान श्री राम के प्रसाद के वितरण करत रह गइलें। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में मुरारी जी बापू के राम कथा में ऋषि सुनक भाग ले के सही संदेश दिहलें कि ऊ ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के साथ-साथ एक आस्थावान सनातनी हिंदू भी बाड़ें। कई दशक पहिले सुनक के परिवार भारत छोड़ के अफ्रिका होत इंग्लैंड में जाके बस गइल रहे।

पाश्चात्य संस्कृति के कवनों बुरा असर ए परिवार पर ना परल। एकरा उलट भारत में दू लाइन पढ़ लेवे वाला सबसे पहिले राम आ रामायण पर ही सवाल उठावल शुरू कर देला। ई महज सस्ता लोकप्रियता खातिर कइल जाला। ई कवनों दोसरा धर्म में कबो ना होला। उहाँ धर्मगुरु के बात पत्थर के लकीर हो जाला, भलही लाख बुराई काहे ना होखे। मगर हमनीं सनातनी त अपनही जड़ खोदे में लागल रहेनीं। सुनक हालांकि खुल के अपना के हिंदू बतावेलें पर उनका पर कबो केहू ई आरोप ना लगावल कि ऊ हिंदू के प्रति कवनों नरम रवैया रखेले।

दरअसल राम जी सिर्फ भारत के ना हईं। उहाँ के प्रति सारा संसार आस्था के भाव राखेला। राम त सारी मानव जाति के हईं। उहाँ के कण-कण में बानीं। संसार के कई देश राम से अपना के जोड़ेला। राम उनके आदरणीय हईं। अयोध्या के कोरिया से 2000 वर्ष पुराना रिश्ता बतावल जाला। उहवाँ भी एक अयोध्या बा जवना के "अयुता" कहल जाला। रामकथा विभिन्न देशन में विभिन्न रूप में प्रचलित बा। ओ सबसे भारतीय लोग के भावनात्मक लगाव भइल स्वाभाविक बा। इस्लामिक देश इंडोनेशिया के संस्कृति पर भी रामायण के गहिर छाप बा। इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप के नामकरण सुमित्रा के नाम पर भइल रहे। इंडोनेशिया के जावा शहर के एक नदी के नाम सेरयू ह। मुस्लिम देश इंडोनेशिया के रामलीला के बारे में अक्सर लिखल जाला। जब उहाँ के राष्ट्रपति सुकर्णो के विरुद्ध साजिश रचल गइल त बीजू पटनायक (उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के पिता) अपना विमान से उनके बचा के ले आइल रहले। सुकर्णो के बेटी के जन्म भइल त श्री पटनायक उनकर नामाकरण सुकर्णपुत्री मेघावती कइले रहले। एही नाम के उहाँ उनके लोकप्रियता मिलल आ अपना पिता के भांति ऊहो सत्ता प्रमुख निर्वाचित भइली।

थाईलैंड में राजा के राम ही कहल जाला। उनके नाम के साथ अनिवार्य रूप से राम लागेला। राज परिवार अयोध्या नामक शहर में ही रहेला। ई स्थान बैंकॉक के करीब बा। का ई कम हैरानी के बात बा कि बौद्ध भइला के बावजूद थाईलैंड के लोग अपना राजा के राम के वंशज भइला के चलते विष्णु के अवतार मानेला? एही से थाईलैंड में एक तरह से आज भी राम राज्य कायम बा।

राम के नाम भारत से बाहर जा बसल करोड़ो भारतवंशी के एक-दूसरा से जोड़ेला। राम आस्था के साथ सांस्कृतिक चेतना के भी महान दूत बानीं। म्यांमार में भी राम बानीं। इहाँ के पोपा पर्वत औषधि खातिर विख्यात बा। मानल जाला कि लक्ष्मण के उपचार खातिर पोपा पर्वत के ही एक भाग के हनुमान जी उखाड़ के ले गइल रहनीं। ऊ लोग ओ पर्वत के मध्यवर्ती खाली स्थान के देखा के पर्यटक लोग के ई बतावेला कि पर्वत के ओही भाग के हनुमान जी उखाड़ के लंका ले गइल रहनीं।

हिंदू प्रतीकन आ संस्कृति के देखे-समझे के बा त थाईलैंड से उपयुक्त राष्ट्र कवनों नइखे हो सकत। दक्षिण पूर्व एशिया के ए देश में हिंदू देवी-देवता अउर प्रतीकन के रउआ चप्पा-चप्पा पर देखीने। थाईलैंड में 90 प्रतिशत आबादी बौद्ध धर्मावलंबी बा। तबो इहाँ के राष्ट्रीय चिन्ह गरुड़ ह। हिन्दू धर्म के पौराणिक कथा में गरुड़ के विष्णु के सवारी मानल गइल बा। गरुड़ के बारे में कहल जाला कि ऊ आधा पक्षी आ आधा पुरुष ह। ओकर शरीर इंसान से आ चेहरा पक्षी से मिलेला। ओकरा पंख भी बा। एही तरे इंडोनेशिया के राष्ट्रीय विमान सेवा के नाम भी गरुड़ एयरलाइन्स बाक कवनों भी हिंदू, चाहे ऊ दुनिया के कवनों कोना में रहत होखे, ऊ राम के बिना संसार के कल्पना भी नइखे कर सकत। सुनक के पते होई कि सारा भारत राम के आपन आराध्य मानेला। भारत के सबसे बड़ा पौराणिक नाम में राम भी बाड़ें। उनके बारे में थोड़ा-बहुत जानकारी प्रायः सबका, कम से कम दू में एक भारतीय के त जरुरे होई। उहाँ के विचार अउर कर्म, चाहे उहाँ के कौन शब्द कब कहनीं, ओके विस्तारपूर्वक दस में से एक त जानते होई। कबो सोचीं कि एक दिन में भारत में केतना बेर इहाँ के जनता प्रभु राम के नाम लेला। ई आंकड़ा त अरबो-खरबो में पहुंच जाई। भारत राम के नाम त लेत रही। राम के नाम भारत असंख्य वर्ष से ले रहल बा आ लेते रही।

गांधी जी भारत में राम राज्य के स्थापना देखे के चाहत रहलें। गांधी जी अइसनके रामराज्य के स्वप्न देखले रहलें जवन पवित्रता अउर सत्यनिष्ठा पर आधारित होखे। राम त हर भारतीय के ईश्वर बानीं। भारत त 'रामराज्य' स्थापित करे के चाहता।

उहाँ के मात्र हिंदू धर्म के भगवान ही नइखीं। बल्कि, उहाँ के भारत के मिट्टी के सांस्कृतिक धरोहर बानीं।

राम के नाम भारत से बाहर जा बसल करोड़ो भारतवंशी के एक-दूसरे से जोड़ेला। राम आस्था के साथ सांस्कृतिक चेतना के भी महान दूत बानीं। म्यांमार में भी राम बानीं। इहाँ के पोपा पर्वत औषधियन खातिर विख्यात बा। मानल जाला कि लक्ष्मण के उपचार खातिर पोपा पर्वत के ही एक भाग के हनुमान जी उखाड़ के ले गइल रहनीं। ऊ लोग ओ पर्वत के मध्यवर्ती खाली स्थान के देखा के पर्यटकन के ई बतावेला कि पर्वत के ओही भाग के हनुमान उखाड़ के लंका ले गइल रहनीं।

***

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।)

आलेख

भगवती प्रसाद द्विवेदी

उगे रे मोर सुगना, माटी में सोनवा!

कतना लहरात बाड़न स ई हरियर-हरियर आल्हर पउधा! हर पल लुटावे के चाहत। देबे आ खिआवे के भाव। सेवे से नू मेवा मिलेला। सचहूं देबे आ लुटावे में जवन सुख बा, संतोख बा, ऊ लेबे आ पावे में कहां! किसान किसानी-खेती का जरिए अब ले इहे नू करत आइल बा।

आजु जबकि देश के अन्नदाता किसान आ किसानी प जोरदार बहस हो रहल बा, हम अपना गांव में खेत-बधार के हरियरी का बीचे ठाढ़ होके चारू ओरि टुकुर-टुकुर ताकत बानीं। छोट-छोट पउधा अबोध लरिकन लेखा किलकारी मारत बाड़न स आ मन उमगि-उमगि उठत बा उन्हनीं के निहारिके। सोझा किछु साग-खोंटनी मेहरारू निहुरि-निहुरि के साग खोंटत बाड़ी स आ अपना डांड़ में बान्हल धोकरी में ताबड़तोर धइले जात बाड़ी स। जब से सरेह में बूंट-मटर के साग खाए लाएक हो जाला, ओकर खोंटाई होखे लागेला। फेरु त साग-भात आउर साग-लिट्टी लोग बड़ा चाव से खाला। बूंट-मटर के फुनुगी के खोंटइला से जब मेह बरिसेला, त पउधा बढ़ला का संगें-संगें फइलहूं लागेलन स आ झोंप के झोंप ढेंढ़ी निकलेली स। बस फरे-फर। फेरु त जमिके कचरी खा, कल्हारि के घुघुनी बनावऽ भा आगि लहकाके होरहा लगावऽ!

कतना लहरात बाड़न स ई हरियर-हरियर आल्हर पउधा! हर पल लुटावे के चाहत। देबे आ खिआवे के भाव। सेवे से नू मेवा मिलेला। सचहूं देबे आ लुटावे में जवन सुख बा, संतोख बा, ऊ लेबे आ पावे में कहां! किसान किसानी-खेती का जरिए अब ले इहे नू करत आइल बा।

विचार के पटरा

खोजी निगाह दोसरा ओरि मुड़ि जात बाड़ी स। सुन्नर के टिउबेल से पानी मोरी के टेढ़-मेढ़ डंड़ार से होके हवलदार काका के खेत में बहत बा। हवलदार काका अपना भतीजा का संगें पटउवा गहूं में पानी पटावे में लवसान बाड़े। किछु बकुला आ कउवा खेत के बहत पानी में निकलेवाला कीड़ा-मकोड़ा के धर दबोचे का फिराक में मंडरात बाड़न स। तलहीं अचके में मोरी एक जगहा से टूटि जात बिया आ पानी उन्हुका खेत से निकलिके दोसरा के खेत में बहे लागल बा। हवलदार काका एकाएक हड़बड़ाके चिहुंकि उठत बाड़न आ काठ के एगो पटरा उठाके धउरकिए प मोरी बन्न करे खातिर लवलीन हो जात बाड़न। हमरो मन के मोरी टूटि जात बिया, बाकिर एने-ओने बहत पानी के रोके खातिर हम विचार के पटरा नइखीं लगा पावत।

कुइआं के बेंग

ओने से निगाह हटाके दूरि-दूरि ले चितवत बानीं। रेलवे लाइन के सामने दरियाव में बटेसर 'छिओराम-छिओराम' के सुरलहरी छेड़त पाट प

पटकि-पटकि के कपड़ा धोवत बाड़न। उहंवें दरियाव के पानी में किछु चरवाह गाइयो-भइंसि धोवत बाड़न स। घाट पर कवनो राही दिशा-मैदान होके हाथ मांजत बा।

तबे पच्छिम से 'पी-पी-पी' के चीख-पुकार मचावत कवनो स्पेशल रेलगाड़ी आके रुकि जात बिया। बुझिला केहू वैकुम काटि देले बा। गांव के दू-तीन गो नवही फाइल लेले उतरत बाड़न स। खेतन में एने-ओने ठाढ़ गंवई लरिका बुढ़िया आन्हीं नियर गाड़ी का ओरि भागत बाड़न स आ उहंवा पहुंचते टरेन के पौदान प टंगाके खिलखिलात एक-दोसरा के निहारत बाड़न स। किछु त सहमल-सहमल निचहीं ठाढ़ होके जात्री लोगन का ओरि आंखि फारि-फारिके चितवत बाड़न स, ठीक ओह तरी, जइसे कवनो सिनेमा देखत होखऽ स। देश-दुनिया से बेखबर ई गंवई नवनिहाल कुइआं के बेंगे नू बाड़न स।

बतकूचन

'का सोचत बाड़ऽ, बबुआ?' हवलदार काका खइनी बनावत हमरा बगल में आके खाड़ हो जात बाड़न। ढेर देरी ले पानी में ठाढ़ रहला के कारन उन्हुका हाथ-गोड़ के चाम सिकुरि गइल बा। गमछी के गुलबंद बनाके ऊ कान के ढंपले बाड़न आ तेल में सउनाइल मोटिया के चीकट चद्दर कान्ह प झूलत बिया।

'किछु ना, काका!' हम हड़बड़ी में हकलाए लागत बानीं। फेरु सहज होखे के कोशिश में कहत बानीं,' चलीं, घरहीं चलबि नू?'

'ना हो! अबहीं हम फराकित होखे जाइबि।'

हवलदार काका खइनी के फटकिके ओठ का बीचे दबावत दरियाव का ओरि बढ़ि जात बाड़न। बाकिर जात-जात ई कहल नइखन भुलात, 'तोहार बतकूचन हमरा बड़ा नीक लागेला, मगर का कहीं, गांव उझंख हो गइल। अब ना केहू नीमन-जबून कहेवाला बा, ना केहू सुनेवाला। हम त बस खेते-बधार में रहेलीं, ए से मन हरियर रहेला।'

हरियर-हरियर महादेव

बूढ़ पुरनिया सुरुजदेव लोहूलोहान होके पच्छिम में ठहरि गइल बाड़न, बाकिर घाम के चेहरा के ललाई अबहुंओं मन में ललक जगावत बिया। किछु मजूर-किसान माथ प घासि के बोझा लेले अपना-अपना घर का ओरि बढ़त बाड़न। कई गो घसिगढ़िन त अबहुंओं खुरपी से खेत सोहे आ घासि गढ़े में मगन बाड़ी। खरिहान में लइका किरकेट खेले में मशगूल बाड़न स। बाकिर पहिलेवाला कुकुहा-के, चिक्का-कबड्डी आ गुल्ली-

डंटा अब कहां! तबहूं कतना जीवंतता बा इहवां। चरवाही से छूटिके रंभात इस्कुलिहा लरिकन-अस गांव का ओरि लवटत गाइयन के झुंड। उछलत-कूदत बाल गोपालन के ओठ से हरसिंगार नियर झरत हंसी-ठिठोली। किलकारी मारत, चहचहात खोंता का ओरि लवटत बकुला, कउवा आउर कबूतरन के जोड़ा। धोवल कपड़ा गदहा पर लादिके घर के तरफ लवटत बटेसर भाई। बाकिर हमरा एह हरियरी का बीच से जाए के इचिको मन नइखे करत। चारू ओरि इहवां से उहंवा ले हरियर-हरियर महादेव साक्षात विराजमान बाड़न। मन करत बा कि एह हरियरी में लोटिआए लागीं आ पुक्का फारिके टांसी मारत गा उठीं-

उगे रे मोर सुगना,
माटी में सोनवा!

जहाज के पंछी

अपना सोच के सोनहुला जंजीर के तार-तार करत हमहूं अब सरेह से घर का ओरि लवटत बानीं। मड़ई-टाटी से उठत धुआं हवा का संगें अटखेली करत बाड़न स। आंतर में विचारन के अटखेली अबहुंओं जारी बा। कबो किशोर मन गांव से नगर-महानगर का ओरि भागत रहे, भागहूं के परल, बाकिर अब ओह मिरिग मरीचिका से दूर हरदम-हरदम खातिर गांवें लवटल चाहत बा-

'जइसे उड़ि जहाज के पंछी, फेरु जहाज पर आवे!' गंवई मन के दोसरा जगह सुख कहां!

चिरई के जियरा उदास

राह में हुलास चाचा के दुआर प एगो गौरैया के जोड़ा देखत बानीं। गौरैया अपना बुतरू के ठोर में दाना खिआवत बिया। पांखि जामते ई बचवा फुर्र-से उड़ि जाई आ दूर देस जाके आपन दोसर खोंता बना ली। फेरु दूनों के कइसन नेह-नाता! हम ओह गौरैए से अपना गांव के तुलना करत बानीं।

कतना असीम लाड़-पियार, सनेह-दुलार देके ई गांव आपन सोन्ह गमक भरल माटी में पालि-पोसिके सेयान कइलस आ फेरु हम नगर-महानगर के भूल-भुलइया में अइसन भटकलीं कि गांव के ऊ पियार-दुलारो भुला बइठलीं। गांव अंकवारी भेंट करे खातिर हमार बाट जोहत रहल। अब लवटलो बानीं, त मशीन बनिके। फेरु मशीन का संगें अदिमी के का रिश्ता!

कतना असीम लाड़-पियार, सनेह-दुलार देके ई गांव आपन सोन्ह गमक भरल माटी में पालि-पोसिके सेयान कइलस आ फेरु हम नगर-महानगर के भूल-भुलैया में अइसन भटकलीं कि गांव के ऊ पियार-दुलारो भुला बइठलीं। गांव अंकवारी भेंट करे खातिर हमार बाट जोहत रहल। अब लवटलो बानीं, त मशीन बनिके। फेरु मशीन का संगें अदिमी के का रिश्ता!

हीरामन के दुआर प कउड़ का चारू ओरि बइठल लोग किसिम-किसिम के बतकही करत बा। हीरामन के हाथ के हुक्का के गुड़गुड़ी हंसी-ठट्ठा में डूबि गइल बा। परभू बतकही के नया अध्याय खोलि देले बाड़े। फेरु ऊ अचके एगो फिलिमी धुन छेड़ि देत बाड़े-

'सोनवा के पिंजड़ा में बंद भइले हाय राम,
चिरई के जियरा उदास!'

टुटही मड़इया सुन्नर लागे

गीत के ई कड़ी हमरा मन के बरछी-अस बेधत बा। हम भितरे-भीतर छटपटा उठत बानीं। ऊ नगर हमरा सोना के पिंजड़ा लागल बा, जहवां हम एगो चिरई लेखा अपना गांव खातिर उदास होके तड़फड़ात रहींले।

दुआर प परल बंसखट का तरफ बढ़ते कुकुर पोंछि हिलाके हमार अगुआनी करत बा। नांद पर खात गाइ के गरदांव में बान्हल घंटी के टुनटुन के मीठ संगीत तन-मन में रचे-बसे लागत बा। बगइचा से कोइलर के बेमौसमी कूक जइसे हमरा गांवें अइला के खुशहाली में गूंजि उठत बा। खूंटा में बन्हाइल बछरू दूध पिए का लालसा में रंभा रहल बा-'अम्मा!'

फेरु त हम अपना के रोकि नइखीं पावत आ शहरीपन के ओढ़ल लबादा के अपना अस्तित्व से परे फेंकिके लोकगीत के एगो कड़ी गुनगुनाए लागत बानीं-

तोहरी महलिया के ऊंची अटरिया
से डर लागे,
मोरी टुटही मड़इया
सुन्नर लागे !

***

आलेख

डॉ. प्रेमशीला शुक्ल

उपजे धाना

कवनो पूजा-पाठ, मांगलिक काम अइसन नइखे, जवना में चाउर के उपयोग ना होखे। चाउर सबकर प्रिय अन्न ह। देवी-देवता, पितर, आदमी, इहां तक कि अशरीरी आत्मा (भूत-प्रेत) का भी चाउर चाहीं। कवनो पूजा बिना अक्षत (सोगहग चाउर) के ना, हवन बिना अक्षत के ना, जनेव-बिआह बिना अक्षत के ना, कलसा के ऊपर ढकनी में अक्षत, दीया के नीचे अक्षत। पितर लोग के पिंडा पराई चउरठ (चाउर के पीस के) से, ओझा-सोखा भूत बिचरिहें चाउर से। बिना चाउर के गति कहां? चाउर से जेतना भी लौकिक मांगलिक काम होला ओमें सबसे मार्मिक बेटी के बिदाई के समय के घर भरल ह। अंचरा में खोइंछा लिहले के बाद बेटी पति के साथे कोहबर में खड़ा रहेली। उनके अंजुरी में चाउर देके पूछल जाला- का भरताडू? हाथ के चाउर सिर का ऊपर से पीछे फेंकत बेटी कहेली- बाबा के घर। अइसन पांच बेर होला। एकरे बाद बिदाई हो जाले। ई बिधि बहुत कुछ कहेले। बेटी नइहर के शोभा हई। उनुका गइले घर सून हो जाई। बेटी आशीर्वाद देके जाताड़ी- बाबा के घर श्री-शोभा से भरल रहे, अन-धन भरल रहे। बिधि इहो कहेले कि चाउर के रूप में बेटी आपन अनगिन स्मृति छीट के जाताड़ी। ऊ चाउर ना ह, बेटी के बचपन ह, बाबा आगे ठुनुकल ह, भइया साथे झगरल ह, माई के अंचरा में लुकाइल ह, सखी साथे खेलल ह, बेबात के हँसल ह। गिनती नइखे का-का ह।

घुघुवा माना एगो खेल ह। ई खेलल ना जाला,खेलावल जाला। लइका के गोड़े पर बइठा के झुलुहा झूलावल जाला। साथे-साथे एगो कविता गावल जाला। कविता खतम भइला पर गोड़ ऊपर उठाके पूलूलूलू कइल जाला। एकर मतलब ह-लइका के जीवन में खूब ऊंचाई मिले। कविता ह-

घुघुवामाना, उपजे धाना।
ओही पड़े आवें, बाबू के नाना।
ले आवें, तिलकिया धाना।
ओही धान के चिउरा कूटवलों।
बाभन-बिसुन के नेवता पठवलों।
बभना के पूतवा दिया असीस।
बाबू जीएं लाख बरीस।
नई भीति उठेले, पुरानी भीति गिरेले।
बुढ़िया माई हो आपन पतुकी सम्हरले रहिह। पूलूलूलू.....

घुघुवामाना के खेल भोजपुर, मगध, मिथिला, अवध, ब्रज, बुंदेलखंड-सब जगह खेलावल जाला आ थोड़-बहुत अंतर का साथे एकर कविता कहल जाले। जहां जवने रूप में ई कविता कहल जाले, ओही रूप में उहां की संस्कृति के बखान करेले। संभव बा, भोजपुरी क्षेत्र में भी ए कविता के कवनो दूसरो रूप होखे, हम अपने गांव-जवार में इहे सुनले बानी।

गांव छोड़ले बरिसन बीत गइल। आज गांव से बहुत दूर महानगर में

बइठल नाती के घुघुवामाना खेलावत के गांव साक्षात हमरा सामने खड़ा हो गइल। आ हमके लिहले ओ बड़का अंगना में पँहुच गइल, जहां बड़हन-बड़हन पालि से भेंवल धान गलिया के तोपल जाता। बरखा नइखे भइल, केतना अगोरल जाए, पानी चला के बीया डारे के पड़ी। बीया तइयार चाहीं। भगवान बरिस जइहें त रोपनी के सुतार रही। बीया पड़ि गइल, तइयार हो गइल, भगवान ना बरिसलें। अब??

चारो ओर हाहाकार बा। बीया सूखता। मेहरारू लोग हड़पड़ौरी गावता। लइके घुमरी क के अरज करताड़ें "अनमन देवता पनमन देवता

धानवां के पड़ल सुखार हो।" देवता के मन! पसीज गइल। झमाझम बरखा बरिसल। सब खेत में भागल-मरद-मेहरारू, हर-बैल। लेव लागता, बीया उखारल जाता। रोपनी सुरु। बनिहारिन चाची लोगन के बोल गूंज रहल बा-

रोपनी करत मोरी कमर पीरइली,
दबाई देत ना पिया पतरी कमरिया।
लामी-लामी केसिया पसेनवन भींजल,
गुही देत ना पिया लामी-लामी केसिया।

कइसे दबाईं धना पतरी कमरिया
से देखें पइहें ना मोरी माई से बहिनियां।
कइसे के गुहीं धना लामी-लामी केसिया
से देखें पइहें ना मोरे साथी से संघतिया।
आधी-आधी रतिया धरेलs मोरी बहियां
से नाहीं अइबों ना, पिया तोहरी सेजरिया।
आवे देहु रतिया दबाई देबों ना
धना पतरी कमरिया।
आवे देहु रतिया गुहि देबों ना
धना लामी लामी केसिया
आवे देहु रतिया मनाई लेबों ना
आपन रूसल धनिया।

सब हमरी आंख का सामने अपूर्व शोभा का साथ झिलमिला रहल बा। खेत में इहां-उहां काम करत लोग, बीया ढोवत, लेव लगावत, रोपत, गावत, हंसी-ठिठोली करत श्रम में सीझल मरद-मेहरारू। प्रकृति से हेलमेल, एक साथ काम कइला के लगन आ अछोर उल्लास-इहे ये लोगन के जीवनरस के रहस्य ह, जवन कठिन-से-कठिन समय में भी हारे-थके ना देला। धान के खेत में जइसे भोजपुरी संस्कृति साकार हो गइल बा। धान के बीया के जड़ सहित उखाड़ के दूसरा खेत में रोप दिहल जाला। धान ए दूसरे खेत के माटी-पानी में आपन जड़ फइला के, बरियार झूर बनाके लहलहा उठेला।

इहे विशेषता भोजपुरियो संस्कृति में ह। जब भोजपुरिया लोग गिरमिटिया मजदूर बना के दूसरा देश में ले जाइल गइल तब ओ लोग के आपन गांव-घर छूट गइल। ना छूटल त पुरुखा-पुरनियां के दीहल संस्कार। एके छोड़वले के ताकत केहू में ना रहे। एही का बल पर गंगा मइया के जल, तुलसी माई के बिरवा आ रामायन जी, गीता जी के पोथी साथे लिहले, हिरदय में भोजपुरी संस्कृति धारण क के, भोजपुरी भाषा बोलत ई लोग मारीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम जइसन देशन में पंहुचल। ई सब ए लोग के आपन मूल, आपन जड़ रहल, जवना के ई लोग छोड़ल ना। फिर त दुनिया ए लोग के कमाल देखलस। नदी का रूप में गंगा जी छूट गइली त उनकर भगीरथ सपूत गंगा तालाब बनवलें, ओकरा घाट पर बाबा बिस्वनाथ के बइठवलें आ महासिवराति के राष्ट्रीय पर्व घोषित कइलें। भोजपुरी के झंडा दुनिया में अनेरे बुलंद नइखे। जड़ के सहेज के, नया माटी-पानी के अपना के, अपनी संस्कृति के सींचे के गुन भोजपुरियन के खून में बा। मारीशस एकर सबसे सुंदर उदाहरण ह।

भोजपुरी क्षेत्र में कच्चा-पक्का भोजन के चलन बहुत ह। पक्का भोजन माने पूड़ी, कच्चा माने भात। पक्का केहू के दिहल जा सकता, केहू से लिहल जा सकता। कच्चा बहुत, बहुते खास से। बिआह में पूरा बारात पूड़ी खाई, माड़ो में भात समधी के खास भयवद्दी। इहां पूड़ी से कामों ना चली। जन्मोत्सव में भाई के भाते चाहीं। देहावसान पर दसगातर के रात के भाई से नूने भाते से मिलल जाई। ब्रह्मभोज के पूरा जवार पूड़ी खाई। अगिला दिन भयवद्दी के भतवान होई। भाई के भात जनम-मरन शुभ-अशुभ दूनू में जरूरी ह। भात के हिस्सेदारी के मतलब ह-सुख-दुख में हिस्सेदारी, अपनापन के डोरी से बन्हाइल। भात के उपस्थिति शुभ-अशुभ दूनू में रहले के मतलब ह-जीवन के शुभ-अशुभ से ऊपर मानके जीवन के पूर्णता में समझल, जीवन के महात्म्य के स्वीकार कइल। भात-चाउर-धान जीवन के जयगान ह।

बुझाता,धनवों ई सब बात जानता, तबे हाथ भर होते पुरुवा के गुदगुदी से खिलखिला के हंसता। ई हंसी भला भुलाइल जा सकेला। हमरे गांव के पूरबी सीवान उत्तर से दक्खिन तक कियार ह। सावन-भादो में इहां-से-उहां तक पसरल धान के गहिर हरीयरी, आसमान में गावत-बजावत करिया-करिया बादर आ ओपर ताल देके नाचत बड़े-बड़े बून। संगीत, नृत्य आ दृश्य के अद्भुत समन्वित रूप...नइखे भुला सकत, कभी ना। नइखे भुला सकत कालीजीरा के भात।

अइसन नइखे कि हमरे गांव आ हमहीं अनूठा बानी। भोजपुरी क्षेत्र के सब गांव अइसन शोभा से भरल बा, सब लोग का अपने गांव से प्रेम बा। जे भी गाँव से दूर बा, सबका मन में टीस उठत होई।

धान भोजपुरी क्षेत्र के प्रमुख फसल ह। धान भोजपुरियन खातिर खाली फसल ना ह, भाव ह, विचार ह, जीए के तरीका

ह। लगभग पूरा क्षेत्र में धान होला। कहीं-कहीं के धान बहुत मसहूर ह। गोरखपुर, कुशीनगर के तराई क्षेत्र के काला नमक, चम्पारन के बासमती आ मिरचइया धान के दुनिया में नाम ह। मिरचइया धान के चिउरा जइसन चिउरा कवनो दूसर धान के ना होला। हमरा गांवें जवन सबसे बढ़िया धान होखे, ऊ रहे कालीजीरा, करिया आ जीरा असपातर। एकर चाउर तनी पिअराहूं,बनला पर झक-झक उज्जर। गंध अइसन कि धान के बालि फुटते राहि गमक उठे। रसोई में बने त दुआर फानि के बंगला तक मह-मह करे। स्वाद के बारे में का कहल जाए, हित-नात तक याद करें। कालीजीरा काला नमक के खास प्रजाति रहे। बाबा एकर बीया हर साल नेपाल से मंगाईं। गांव की माटी में ई दूसरे साल मोट हो जाए। घास-फूस, कीड़ा-मकोड़ा से एके बहुत बचावे के पड़े। बाबा के ना रहला पर ई बोवाइल बन्द हो गइल। के एकर एतना इंतजाम करे। नवका लोग त कालीजीरा के नाम तक ना जानेला। नवका लोग बहुत चीज के नाम ना जानेला। ना नाम ना रूप। ई लोग कुरुई, मउनी, मेटा, तउला, कूंड़ि, ढेंकुल ना देखले बा, ना सुनले बा। सैंकड़ों नाम (शब्द) अइसन बा, जवन जा रहल बा। शब्द रुपया अइसन होला, चलता त ठीक, ना त बेकार। मतलब जवन पदार्थ (वस्तु, चीज) काम में आवत रही, ऊ पद (नाम, शब्द) बोलल जात रही। जवन काम के ना रही, ऊ ना बोलल जाई, धीरे-धीरे खतम हो जाई। पदार्थ बिना पद ना रही। इहां तक त गनीमत। लेकिन जवना पदार्थ का साथे आदमी जीयता, जवना में जिनगी रचल-बसल बा, ऊ पद अगर खत्म हो जाए तब? तब खाली पद (शब्द) खतम ना होई, ऊ समाज, संस्कृति खत्म होई, जवना के शब्द ह। ई प्रक्रिया बहुत धीरे-धीरे सदियन में घटित होले। समाज, संस्कृति आ भाषा आपस में बहुत महीन तरीका से दुहरा-तिहरा-अनिवन घुमाव में जुड़ल होलें। एक सिरा खिंचाई त दूसर टूटी जरूर। धीरे-धीरे सब छिन्न-भिन्न होई।

जवने तरह से भारतीय भाषा में अंग्रेजी के शब्द के प्रयोग बढता, भारतीय समाज में ई संकट बढ़त जाता। उधार लिहल भाषा में बोलल जा सकेला, पढ़ल जा सकेला, सोचल ना जा सकेला। कल्पना कइल जा सकता कि उधारी भाषा बोले वाली संतति में केतना रचनात्मकता होई। का ह उधारी भाषा? जवन भाषा पढ़ि के सीखल जाले, ऊ उधारी ह। जवन भाषा बोलल सीखला के बाद पढ़े के सीखल जाले, ऊ आपन ह। मतलब जवन अक्षर ज्ञान से पहिले घर-परिवार मे सुन के सीखल गइल, ऊ आपन ह। आपन भाषा पार लगावेले, उधारी भाषा ले डूबेले।

धान भोजपुरी क्षेत्र के प्रमुख फसल ह। धान भोजपुरियन खातिर खाली फसल ना ह, भाव ह, विचार ह, जीए के तरीका ह। लगभग पूरा क्षेत्र में धान होला। कहीं-कहीं के धान बहुत मसहूर ह। गोरखपुर, कुशीनगर के तराई क्षेत्र के काला नमक, चम्पारन के बासमती आ मिरचइया धान के दुनिया में नाम ह। मिरचइया धान के चिउरा जइसन चिउरा कवनो दूसर धान के ना होला। हमरा गांवें जवन सबसे बढ़िया धान होखे, ऊ रहे कालीजीरा, करिया आ जीरा असपातर। एकर चाउर तनी पिअराहूं, बनला पर झक-झक उज्जर। गंध अइसन कि धान के बालि फुटते राहि गमक उठे। रसोई में बने त दुआर फानि के बंगला तक मह-मह करे। स्वाद के बारे में का कहल जाए, हित-नात तक याद करें।

अलग-अलग कारण से कालीजीरा के साथे बहुत धान गइल। करंगी, भइंसालोटन, नगीना बाइस, गोभारी, साठी अब ना बोवाला। साठी के बारे में कहल जाए-**बरखा बरसे रात दिन, साठी होखे साठ दिन।** साठी बहुत सुपाच्य आ पौष्टिक रहे। अकेल एही के भात पथ्य रूप में लिहल जाला, दूसर कवनो चाउर के ना। एकर भात लाल आ रूखर होला, मांड़ लाल, गाढ़, बहुत पौष्टिक आ बहुत स्वादिष्ट। आज जब पांच सितारा होटल में मांड़ राइस सूप का रूप में सैकड़न में मिलता, साठी के मांड़ हजारन में मिलित। का जमाना आ गइल, खाली माँड़ पियल जाता। रोग आदमी के भर पेट खाए नइखे देत। भूख कम होत जाता,पेट सिकुड़त जाता। हं, एगो दूसर भूख बढ़ता, पेट फइलता-धन के भूख। लागता, केतना पाई, केतना खाई। आदमी कुछु करता सही-गलत, मार-काट, झूठ-सांच, ई पेट भरते नइखे। जेतने बड़हन पेट ओतने बड़हन घोटाला।

बात कहां मुड़ गइल, बात त साठी के होत रहे।

साठी के सुखाके बखार तक पहुंचावत में बरखा बीत जाले। कातिक में देवठन के एकादशी बीतते लगन सुरु। एही के साथे सुरु 'साठी के चउरा लहालरी दूबि हो' के मंगल गीत। कवनो पूजा-पाठ, मांगलिक काम अइसन नइखे,जवना में चाउर के उपयोग ना होखे। चाउर सबकर प्रिय अन्न ह। देवी-देवता, पितर, आदमी, इहां तक कि अशरीरी

आत्मा (भूत-प्रेत) का भी चाउर चाहीं। कवनो पूजा बिना अक्षत (सोगहग चाउर) के ना, हवन बिना अक्षत के ना, जनेव-बिआह बिना अक्षत के ना, कलसा के ऊपर ढकनी में अक्षत, दीया के नीचे अक्षत। पितर लोग के पिंडा पराई चउरठ (चाउर के पीस के) से, ओझा-सोखा भूत बिचरिहें चाउर से। बिना चाउर के गति कहां? चाउर से जेतना भी लौकिक मांगलिक काम होला ओमें सबसे मार्मिक बेटी के बिदाई के समय के घर भरल ह। अंचरा में खोइंछा लिहले के बाद बेटी पति के साथे कोहबर में खड़ा रहेली। उनके अंजुरी में चाउर देके पूछल जाला-का भरताडू? हाथ के चाउर सिर का ऊपर से पीछे फेंकत बेटी कहेली- बाबा के घर। अइसन पांच बेर होला। एकरे बाद बिदाई हो जाले। ई बिधि बहुत कुछ कहेले। बेटी नइहर के शोभा हई। उनुका गइले घर सून हो जाई। बेटी आशीर्वाद देके जाताड़ी- बाबा के घर श्री-शोभा से भरल रहे, अन-धन भरल रहे। बिधि इहो कहेले कि चाउर के रूप में बेटी आपन अनगिन स्मृति छीट के जाताड़ी। ऊ चाउर ना ह, बेटी के बचपन ह, बाबा आगे ठुनुकल ह, भइया साथे झगरल ह, माई के अंचरा में लुकाइल, सखी साथे खेलल ह, बेबात के हंसल ह। गिनती नइखे का-का ह।

चाउर के आखिर एतना महत्व काहें ?

कई शब्द अइसन होलें, जवन अपना सामान्य, प्रत्यक्ष अर्थ के अलावा विशेष, अप्रत्यक्ष अर्थ भी देलें। अइसन शब्द के प्रतीक कहल जाला। चाउर अइसने शब्द ह। प्रतीक में अनेक अर्थछवि के प्रकाशित कइला के क्षमता होला।

चाउर अइसने शब्द ह। चाउर सात्विकता, पूर्णता, सम्पन्नता, आत्मीयता के प्रतीक ह। ग्रह के विचार से चाउर चंद्रमा के प्रतीक ह। लाल, पीयर, हरियर, करिया रंग रंगि के दूसरे ग्रहन के प्रतीक बनावल जाला। चाउर सफेद रंग का कारण सात्विकता, अक्षत रूप में पूर्णता के प्रतीक ह। सम्पन्नता के एगो पर्यायवाची धन-धान्य ह। धान्य के अर्थ ह धान। ए रूप में चाउर सम्पन्नता के प्रतीक ह। ऊ वैभव, सम्पन्नता जवना के अर्जन सात्विकता से कइल जाला, जीवन के पूर्णता की ओर ले जाला। बेटी-पतोह का खोइंछा में चाउर का साथे हरदी आ दूब पडेला। हरदी सुख आ दूब संतान के प्रतीक ह। खोइंछा के पीछे भाव रहेला कि बेटी-पतोह संतान सहित सुखी आ सात्विक दाम्पत्य जीवन बितावत पूर्णता की ओर बढ़ें।

शास्त्र आ लोक-दूनूं चाउर के महत्व देलें। भारतीय जीवन पद्धति में एके डेगे-डेगे महसूस कइल जा सकता।

भारतीय जीवन पद्धति में आचार-विचार के विधान तनी कठिन बाकी बहुत अर्थगर्भी आ बहुस्तरीय ह। इहां "जथा जोग" के अवधारणा बहुत काम करेला। अलग-अलग आदमी खातिर अलग-अलग विधान। साधक आ गृहस्थ के जीवन पद्धति अलग-अलग। बहुत साधक ओतने भोजन करेलें, जेतना उनके हथेली पर आंटे, बहुत मुट्ठी में आंटे भर। घुमंतू साधू खातिर तीन दिन से अधिक कहीं रहल, गृहस्थ के रसोई में खाइल वर्जित ह। ई चाहे जमात में खालें चाहे स्वपाकी होलें। बहुत गृहस्थ भी स्वपाकी होलें। व्रत-उपवास में एक अन्न खाइल जाला, ओहू में

गेंहू जइसे रोटी-दूध,पूड़ी-हलुवा, पूड़ी-खीर नाहीं। ई गेंहू आ चाउर दू अन्न भइल। खाली पीड़िया में नया चाउर के रसियाव खाइल जाला। व्रती खातिर एक अन्न, गृहस्थ खातिर छप्पन व्यंजन। सुनले में अजीब लेकिन संयम खातिर जरूरी। भोग आ साधना दू अलग राह ह।

अलग-अलग क्षेत्र में आपन अलग विधान भी होला। भोजपुरी क्षेत्र में कच्चा-पक्का भोजन के चलन बहुत ह। पक्का भोजन माने पूड़ी, कच्चा माने भात। पक्का केहू के दिहल जा सकता, केहू से लिहल जा सकता। कच्चा बहुत, बहुते खास से। बिआह में पूरा बारात पूड़ी खाई, माड़ो में भात समधी के खास भयवद्दी। इहां पूड़ी से कामों ना चली। जन्मोत्सव में भाई के भाते चाहीं। देहावसान पर दसगातर के रात के भाई से नूने भाते से मिलल जाई। ब्रह्मभोज के पूरा जवार पूड़ी खाई। अगिला दिन भयवद्दी के भतवान होई। भाई के भात जनम-मरन शुभ-अशुभ दूनू में जरूरी ह। भात के हिस्सेदारी के मतलब ह- सुख-दुख में हिस्सेदारी, अपनापन के डोरी से बन्हाइल। भात के उपस्थिति शुभ-अशुभ दूनू में रहले के मतलब ह- जीवन के शुभ-अशुभ से ऊपर मानके जीवन के पूर्णता में समझल, जीवन के महात्म्य के स्वीकार कइल। भात-चाउर-धान जीवन के जयगान ह। ओही धान -हरियर धान के-सुरुका चिउरा कुटा के ओ बाम्हन पूत के नेवता पठवल गइल, जवन साधना का बल पर बिस्नु रूप हो गइल बा, ऊ साधक ह, द्विज ह। एकर असीस बाबू का फरी। ई दूसरा के घरे ना पक्का खाई, ना कच्चा। एकरा लायक सुरुका चिउरा कुटाई, दही जमावल जाई।

कविता में आगे रूपक का माध्यम से कहल जाता कि जइसे घर बनावे खातिर दीवार जरूरी होले, ओइसे समाज बनावे खातिर परंपरा, विधान जरूरी ह। समय का साथे जइसे दीवार पुरान होले ओइसे परंपरा भी पुरान होले। समय-समय पर दूनू के साफ-सफाई आ मरम्मत करे के पड़ेला। समाज की गतिशीलता खातिर परंपरा में शोधन जरूरी ह। सड़ल-गलल परंपरा समाज के रोगग्रस्त बना देले। फिर समाज धीरे-धीरे जड़ हो जाला। आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के कहल ह कि मरल बच्चा के छाती से चिपका के राखे वाली बंदरिया समाज के आदर्श ना हो सकेले। मृत परंपरा के छोड़े के पड़ी, नई डाले के पड़ी। तबे समाज के कल्याण होई, समाज के बल मिली, आगे बढ़ सकी। पुरान भीति गिरा के नई उठावे के होई तबे घर बची। ई दायित्व नवकी पीढ़ी पर आवेला। लेकिन पुरान परंपरा में सब छोड़ देवे लायक ना होला। उपयोगी -अनुपयोगी के छांटल-बीनल, उपयोगी के सुरक्षित कइल पुरान पीढ़ी के काम ह। बुढ़िया माई के पतुकी के निहितार्थ इहे बा। भोजपुरी समाज के नवकी पीढ़ी ए दायित्व के पूरा करे, एही आशा का साथे- पूलूलूलू।

***

आलेख

मंजूश्री

खेती-बारी

खेती बारी माने जहाँ अन्न आ फल-फूल दूनु उपजावल जाए। ई जीव-जगत के जन्मजात जरूरत हऽ कि ओकरा भोजन चाहीं। लेकिन अउर जीव आ मानव में खास फरक बा कि पशु-पक्षी आ कीड़ा-मकोड़ा आपन भोजन प्राकृतिक रूप से पा लेले सन आ आदमी का आपन भोजन अपने उपजावे के पड़ेला। उपनिषद काल में अनाज के अन्नपूर्णा के श्रेणि मिल गइल रहे। तब पता चल चुकल रहे कि अन्न ही प्राण हऽ। आज जवना के खलिहान कहल जाता तब ओकरा के आयतन कहल जाए, ऊहे यज्ञ स्थल रहे। यानि यज्ञ के असली रूप रहे दवंरी पीटनी ओसवनी। जवन खेतीहर लोग करे।

खेती बारी माने जहाँ अन्न आ फल-फूल दूनु उपजावल जाए। ई जीव-जगत के जन्मजात जरूरत हऽ कि ओकरा भोजन चाहीं। लेकिन अउर जीव आ मानव में खास फरक बा कि पशु-पक्षी आ कीड़ा-मकोड़ा आपन भोजन प्राकृतिक रूप से पा लेले सन आ आदमी का आपन भोजन अपने उपजावे के पड़ेला।

आदमी के अन्तर्दृष्टि आवश्यकता के अनुसार जाग्रत हो जाला, जब जइसन समस्या आवेला, ऊ ओकर समाधान क लेला। आदिम मानव के अन्तर्दृष्टिए ह कि ऊ पहिले पशुपालन सीखलस आ ओही क्रम में.खेती बारी आ ओकरे संगे बाड़ी (घर) बनावे के। लेकिन ऊ पहिले प्रकृति पर आश्रित रहे। तब बाढ़ सुखाड़ अतिवृष्टि अनावृष्टि अकाल से जूझत प्रकृति पूजा करत ऊ बहुत कुछ सीखलस। इहाँ ले कि ऊ ऋत के बूझ लेहलस। भले केहू के कहे ना आवे लेकिन जब ओकर अन्तरदृष्टि जाग जाला तब ऊ बड़ा-बड़ा काम क देला, ऋत के बूझले के संग आर्य लोग वैदिक काल में आ पहुँचल रहे लो। ओ समय ई लोग इन्द्र से प्रार्थना करे लोग कि समय पर वर्षा होखो कि खेती समय पर आ भरपूर होखो। बरखा खातिर, भोजपुरिया क्षेत्र में "हरफरौली" नाम के एगो गीत विधा रहल बा जवन जेठ आषाढ़ में भयंकर गरमी आ उमस रहे ला, जब मृगडाह नक्षत्र रहे ला, इहाँ ले कि जगन्नाथ पुरी के भगवान भी दस दिन ले गरमी से त्रस्त होके बेहोश हो जाइले तब, लोक के महिला लोग बरखा खातिर "हरफरौली" गावे लोग। अपना घरे आँगन में गावे लोग, चाहे ऊ महिला दस हर के मलिकाइन होखस चाहे हरवाह के मलकिन। सबका कंठ से बरखा के आह्वाहन होखहीं के रहे। लेकिन तब बिजली के ई व्यवस्था

ना रहे, बिजली के कारण हरफरौली गीत विलुप्ति के स्थिति में बा।
उपनिषद काल में अनाज के अन्नपूर्णा के श्रेणि मिल गइल रहे। तब पता चल चुकल रहे कि अन्न ही प्राण हऽ। आज जवना के खलिहान कहल जाता तब ओकरा के आयतन कहल जाए ऊहे यज्ञ स्थल रहे। यानि यज्ञ के असली रूप रहे दवंरी पीटनी ओसवनी। जवन खेतीहर लोग करे।

रामायण आ महाभारत काल में भी देश में खेती के उन्नत स्थिति रहे। भरत जी, रामजी के वनवास के समय पर कृषि कर के रूप बदल देले रहले। जब खलिहान में अन्न तैयार क के घरे ले आवे के होला तब तीन सूप अनाज राश तौले के पहिलही निकाल दिहल जाला, पहिला सूप अनाज कूलदेवता के पूजा खातिर, दूसरा सूप अनाज पुरोहित खातिर आ तीसरा सूप अनाज राजकर खातिर। भरत जी कहले कि राज-कर के रूप में अब सूप उल्टा भाग पर जेतना अन्न उठी ओतने कर लिआई। लेकिन ए आदेश से प्रजा मन ही मन नाखुश रहे। ई तब पता चलल जब रामजी वन से वापस अइनीं तब खेतिहर कह उठ लें-भरत के औंधा से मुक्ति भइल ए दादा, रामजी घरे अइनीं।

खैर ई त हमनीं के पुराण हऽ जवन बड़ा प्रेरक बा आ संगे संगे हमनी के लोक भी भरपूर संवेदनशील बा।

खेतीबारी मानव के जन्मजात प्रकृति आ प्रवृत्ति ह। हर तरह के परेशानी सह के भी ऊ एकरा के करे में सुख पावे ला। चूँकि भोजन जीव जगत के जरुरत ह आ भोजन के उपाय खेतिये हऽ। एह से हमनी एकरा खातिर प्रकृति से लड़ के आ बदला में हरिहर फसल पा के खुशी मिलेला।

आदिम मानव आपन भूख मेटावे खातिर पहिले कच्चा मांस, जंगली फल, कंद खात रहे। इहाँ ले कि खून भी पीये, लेकिन समय पा के जंगल में लागल आग में पाकल मांस आ फल खइलस तब ओकरा में कच्चा पका के अन्तर बुझाइल। ओइसहीं ऊ कुत्ता पाले के सीख गइल। कुत्ता हिंसक जानवर के गंध पावते भूँके लागे। ई आदमी का बड़ा सहारा लागल ऊ ओकरा के पोसे लागल। ऐहिगां गाय घोड़ा पोसे लागल। तबले ऊ वने-वने आ पहाड़े-पहाड़े भटकत रहे, लेकिन पशु धन के पाके ऊ जलस्रोत के लगे रहे लागल। फेर अपना अंतर्दृष्टि से खेतीबारी भी करे लागल आ घर बनावे के सीख लेहलस, जवन ओकरा जीवन के क्रान्ति बनल लेकिन ऊ अभी पूर्णतः प्रकृति पर ही आश्रित रहे। बाकी सबकर उपाय भी सीखत गयिल, इ सीखे के कला ओकरा के अन्य जीव जन्तु से अलग कइलस। अन्य जीवजंतु अभी ले प्रकृति से लेके खाता आ आदमी खेतीबारी के बाद फुड प्रोसेसिंग के युग में आ गइल बा, आ अंतरिक्ष में कइसे खाइल जाई, इहो सीख गइल बा।

आदिम मानव आपन भूख मेटावे खातिर पहिले कच्चा मांस, जंगली फल, कंद खात रहे। इहाँ ले कि खून भी पीये, लेकिन समय पा के जंगल में लागल आग में पाकल मांस आ फल खइलस तब ओकरा में कच्चा पका के अन्तर बुझाइल। ओइसहीं ऊ कुत्ता पाले के सीख गइल। कुत्ता हिंसक जानवर के गंध पावते भूँके लागे। ई आदमी का बड़ा सहारा लागल ऊ ओकरा के पोसे लागल। ऐहिगां गाय घोडा पोसे लागल। तबले ऊ वने-वने आ पहाड़े-पहाड़े भटकत रहे, लेकिन पशु धन के पाके ऊ जलस्रोत के लगे रहे लागल। फेर अपना अंतर्दृष्टि से खेतीबारी भी करे लागल आ घर बनावे के सीख लेहलस, जवन ओकरा जीवन के क्रान्ति बनल लेकिन ऊ अभी पूर्णतः प्रकृति पर ही आश्रित रहे। बाकी सबकर उपाय भी सीखत गयिल, इ सीखे के कला ओकरा के अन्य जीव जन्तु से अलग कइलस। अन्य जीवजंतु अभी ले प्रकृति से लेके खाता आ आदमी खेतीबारी के बाद फुड प्रोसेसिंग के युग में आ गइल बा, आ अंतरिक्ष में कइसे खाइल जाई, इहो सीख गइल बा।

खेतिहर संघर्ष, उत्साह आ आशा ह तऽ ओकरा पत्नी सब्र, संतोष, परिश्रम आ एगो गर्व कि अन्न उपजावे वाली के पत्नी हईं। बीज संरक्षण जवना पत्नी के ना आवे उनकर पति सफल किसान ना होलें। आ जहिया पत्नी खेत से मन खीचे लागेली, तहिये से खेती पिछड़े लागेला।

घाघराम दूबे के नाम से हमनी अच्छी तरह परिचित बानीं। घाघ बाबा अपना कहावत में एक जगह कहतानी- जवना किसान के खेत आ घर पास पास बा, त उ ओकरा खातिर स्वर्ग बा।

खेती बारी के पौराणिक काल त एकर स्वर्ण काल ही कहल जाई, जब जौ गोधुम धान्न आदि रहे, लेकिन ब्रह्म ऋषि बने के संकल्प आ ओमें व्यवधान अइला पर विश्वामित्र ऋषि नया सृष्टि करे के ठनले आ भरपूर गुणवत्ता वाला अनाजन के निर्माण क देहलें- जइसे मडूआ, मसूरी, सावां, कोदो, बाजरा आदि आदि। ई सब अनाज विपरीत मौसम में भी हो जाला, पौष्टिकता से भरपूर होला। आज से पचास बरीस पहिले ले जबले हरित क्रांति के बिगुल ना बाजल रहे, हर घर में ई सब भोजन के अंश रहे।

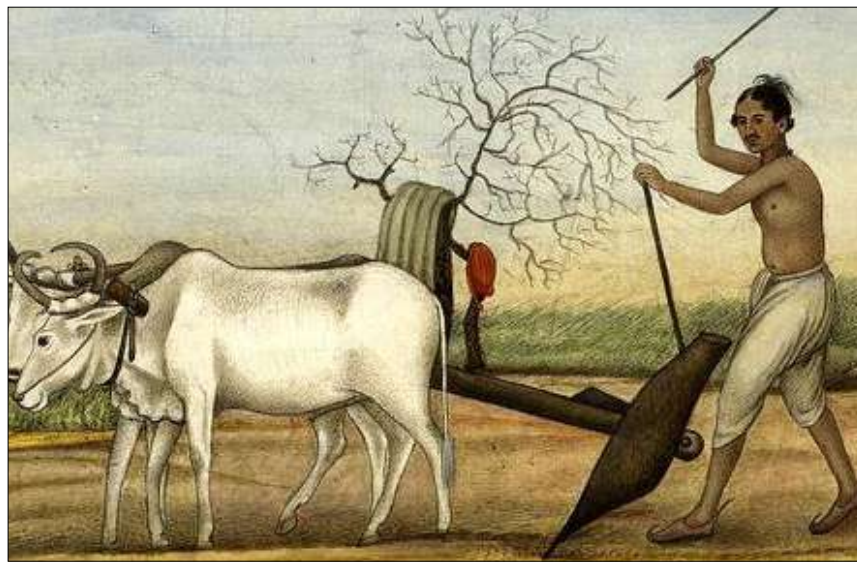

जब से देश लूट मार लड़ाई आ शोषण के शिकार भइल, यानी मुगल काल आ अंग्रेजन के काल, तब से देश के हर बिन्दु पर हरास के हालत रहल बा। खेती बारी भी हद से ज्यादा प्रभावित भइल बा। केतना अकाल झेले के पड़ल बा। 1901 अकाल में पोखरा, तालाब खोनवा के राहत दिआव। ई स्थिति केतना बदतर रहे, सोच के रोंगटा काँप जाला। एही में विश्वयुद्ध के पेराई। लोग गिरमिटिया बन के विदेश मे खेतिहर मजूर बन के गइल।

आजादी के बाद भी हालत ठीक ना रहे। विदेश से कर्जा के रूप में दँतुला मकई आ ललका गेहूँ आवे, बड़ा दयनीय स्थिति रहे। आ अभी ले खेतीबारी 95% भगवान भरोसे आ 5% अपना मेहनत के बले होत रहे। हं, आजादी के बाद भाखड़ा नांगल जइसन बाँधन के निर्माण भइल, नहर खोदाइल, सरकारी ट्यूबेल आ जे सक्षम रहे ऊ निजि ट्यूबेल लगवावे लागल। देश के दूसरा प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी जय जवान जयं किसान के नारा देहलें जवन बड़ा प्रभावी भइल। ओही समय देश में हरित क्रांति के बीजारोपण भी भइल, साथे-साथे खेती बारी खातिर मशीन के प्रयोग बढ़ल, समाज में गजब जागरूकता आइल। राजनीति में ऊ इन्दिरा गाँधी के समय रहे जब जर्मनी से गेहूँ के बीज आ जापान से धान के बीज सरकार मँगववलस आ पंजाब के खेतन में ऊ बीआ बोआइल। पंजाब के खेत आ खेतिहर के आभार व्यक्त करे के चाहीं जहाँ से देश के भूखमरी के दवा मिलल। रेकॉर्ड उत्पादन होखे लागल।

रामायण आ महाभारत काल में भी देश में खेती के उन्नत स्थिति रहे। भरत जी, रामजी के वनवास के समय पर कृषि कर के रूप बदल देले रहले। जब खलिहान में अन्न तैयार क के घरे ले आवे के होला तब तीन सूप अनाज राश तौले के पहिलही निकाल दिहल जाला, पहिला सूप अनाज कूलदेवता के पूजा खातिर, दूसरा सूप अनाज पुरोहित खातिर आ तीसरा सूप अनाज राजकर खातिर। भरत जी कहले कि राज-कर के रूप में अब सूप उल्टा भाग पर जेतना अन्न उठी ओतने कर लिआई। लेकिन ए आदेश से प्रजा मन ही मन नाखुश रहे।

ओह समय में साहित्य के हर विधा, रेडियो से, सिनेमा से, मंच से खेती बारी पर कार्यक्रम देखावल सुनावल जाए लागल। कहे के माने कि हर तरह से खेती के प्रति जागरूकता फइलावल गइल। **'बैलों के गले से जब घूँघरू जीवन का राग सुनाते हैं'** फिल्मी गीत पर सभे झूमे, सभे गुनगुनाए।

1965-66 से लेके 80 तक खेतीबाड़ी के उत्तम मनोवृत्ति के कालखण्ड रहे, लेकिन खेती में मशीनीकरण के साईड इफेक्ट भी जबर भइल, बैल पोसल कम हो गइल, खेत में ट्रैक्टर थ्रेसर आ कंबाइन के अइला से खेती से मिले वाला रोजगार बंद हो गइल। नवयुवक लोग के पलायन शुरू हो गइल। लेकिन बुढ़ऊ लोग गाँव में रहे। हाँलाकि कृषि वैज्ञानिक लोग बहुते जागरूक बा लो। धान के नया-नया बीज, गेहूँ के किस्म, फल मूल सब के नवीनीकरण कर रहल बा लोग, लेकिन आम किसान ओकर लाभ नइखे लेत। हमरा देखे से वर्तमान समय खेती से विरक्ति के समय बा। बड़हन किसान महानगर में जा बसल बाड़े आ छोट किसान पंजाब गुजरात ध लेले बालो। खेत बँटाई आ हूंडा पर दे के ओकर कबाड़ क देले बा लोग। कुछ महिला खेती से जुड़ल बाड़ी, जे ना पढ़ले बाड़ी, ना नया का हो सकता, ईहे

जानतारी। एही से हम कहिले खेती बेईमान के हाथ के खेलवना हो गइल बा।

पढ़ाई-लिखाई के ढर्रा भी उलटि गइल बा। बीटेक, बायोटेक, एमबीए के पढाई क के मल्टीनेशनल के चरण दबावत लोग खेती क सुख का जानी? भले फास्ट फूड खा-खा के बेमार पड़ी लो। लेकिन हरीहरी रोपत हथेली के गुन ना सीखी लोग। हम त ईहे चाहतानी कि खेती के दिन फेर बहुरो। लेकिन होला हरि के चाहल।

अब खेती बारी राजनीति से खराब ढंग से पीड़ित बा। जब देखीं तब खटिया आन्दोलन आ किसान आन्दोलन खड़ा हो जाता, जवना से खेती बारी में कवनो विकास नइखे होखे के, उल्टे ह्रास बा। हं, नेता लोग के फंडिंग हो जाता, आम आदमी खैरात खाता। पहिले हर घर के लड़िका लड़की खेत-खलिहान में जाई, कुछ ना कुछ काम में हाथ बटाई, खेती-बारी के गुर सीखी, लेकिन अब तऽ अस्पताल में पैदा होता लोग, क्रैच में पलाता लो आ हास्टल में पढ़ के मल्टीनेशनल के नौकरी बजावत फ्लैट के सपना देखते क्रेडिट

पहिले हर घर के लड़िका लड़की खेत-खलिहान में जाई, कुछ ना कुछ काम में हाथ बटाई, खेती-बारी के गुर सीखी, लेकिन अब तऽ अस्पताल में पैदा होता लोग, क्रैच में पलाता लो आ हास्टल में पढ़ के मल्टीनेशनल के नौकरी बजावत फ्लैट के सपना देखते क्रेडिट कार्ड के बिल भरत बुढापा वृद्धाश्रम में काटे के तैयारी क लेता लो। कुछ मॉड लो फार्महाउस भी राखता, जहाँ तफरीह होला, फार्मिंग ना।

कार्ड के बिल भरत बुढापा वृद्धाश्रम में काटे के तैयारी क लेता लो। कुछ मॉड लो फार्महाउस भी राखता, जहाँ तफरीह होला, फार्मिंग ना।

अरे भाई, आई, लौट चले के आश्रम के ओर, जहाँ हमनी के पूर्वज वानप्रस्थी लोग जाए। ओह घरी टमाटर प्याज के दाम पर टीपुना ना गारल जाए, गाँव के बेटी अनाज पर चहल के चलऽसऽ।

हालांकि सरकार के कृषि विभाग से अनुदान वगैरह मिलता, जवन किसान खातिर बड़ा सहयोग बा। बस जरूरत बा खेती बारी के नवोदय के।

एगो वातावरण बनावल जरूरी बा। जइसे और सब काम के स्किल सिखावल जाता, ओइसहीं खेती के स्किल सिखवला आ ओह से प्रेम बढ़वला के जरूरत बा। ई संसार जेतने हराभरा रही, ओतने आदमी के जिन्दगी सुरक्षित रही। करोना के आपद में घाम बरखा शीत सहे वाला का खतरा ना भइल ह। मोटा अनाज खाये वाला पीड़ित ना भइल हऽ। आ शरण देहलस हऽ तऽ सभकर गाँव। बड़का शहर आपन फाटक बंद क लेहलस, तब लोग गाँवें पाँव प्यादे दउड़ परल। गाँव अपना लाल के अपना अँचरा में लोकिए ली। आ गाँव के जीविका खेती ह, त ओकरो स्किल आ टेक्निक के विकसित कइल जाव।

***

आलेख

दिनेश पाण्डेय

जुगे-जुगे धान

भारतीय संस्कृति में धान के अहमियत के कबो कम क के ना आँकल जा सके। आहारपूर्ति से लेके पशुपालन तक, घर-बाड़ी से लेके सांस्कृतिक उपादान तक, हर जगह धान के पैठ बा। खानपान, दवा-दारू, वसा उत्पादन, पशुचारा, छप्पर छादन, तख्ती निरमान, खाद, कला-साधन, ऐपन रचना, खोइँछा, धनकुट्टी, धनबँट्टी, लावा मेराई, पूजन, सगुन, हवन, सराध-तरपन, पिंडदान सगरी धान के अखंड राज पसरल बा। धान किसान संस्कृति के धजाधारी ह, बहरिया लोक से भितरिया भाव-संवेदना तक तेकर असर के फैलाव बा।

धान तिरिन जाति के एक मशहूर पौध ह। एह शब्द के व्युत्पत्ति संस्कृत के 'धान्य' से ह। ऋग्वेद में हरमेसे बहुबचन के रूप में प्रयुक्त 'धाना' शब्द 'अन्न के दाना' के अर्थ में आइल बा जेकर एक व्युत्पन्न रूप धान्य ह (वैदिक इंडेक्स)। संस्कृत में 'शस्य' खेत में ठाढ़ फसिल, 'धान्य' भूसी समेते, 'तण्डुल' कूट-पिछोड़ के पावल निरभूस आ 'अन्न' सींझल रूप के बोधक शब्द हवें। भोजपुरी में तण्डुल खातिर चाउर (चावल) शब्द बेवहार में बा। भात (भक्त- सं०) सींझल चाउर के बोधक ह। ऋकसंहिता में चाउर के उल्लेख सीधे-सीधे नइखे। 'वैदिक संस्कृति' (गोविन्दचन्द्र पाण्डेय, पृ०-61) के एक पाद-टिप्पणी के अनुसार उत्तर वैदिक साहित्य में आइल वर्तमान दलिया के समतुल 'ओदन' जव से बनत होखी। पीछे ओदन चाउरे खातिर प्रसिद्ध भइल। अगरचे जव के अर्थ आम तौर प 'धान्य' लिहल जाव त ओमें

चाउरो शामिल मानल जाई, ए तरे 'ओदन' शुरूए से भात के वाचक होखी। धान खातिर प्रचलित एक अउर शब्द 'ब्रीही' एह खास अन्न से जियादह अन्न समूहो के बोधक रहे–

"मुद्गमाषौ धान्यतिला श्यामाकश्चेति पञ्चम।
मसूरश्च कलायश्च सप्तब्रीहीगण स्मृत।।"
(भविष्य पुराण)

[मूँग, उरिद, धान, तिल, साँवाँ, मसूर आ मटर ई सातो सप्तब्रीही गण के रूप में जानल जालें।]

अथर्व०(12.1.42) में जवादि से भिन्न ब्रीही के सोपट उल्लेख बा–**"यस्यामन्नं ब्रीहियवौ यस्या इमाः पञ्चकृष्टयः। भूम्यै पर्जन्यपत्न्यै नमोस्तु वर्षमेदसे।।"**– यानि जवन भुईं में अन्न, ब्रीही, जव आदि पावल जाला, जहवाँ पंचजन बाड़ें, ओहि पर्जन्यपत्नी भुईं के नमस्कार।

बृहदारण्यक (माध्यन्दिन 6.3,22) में अन्न के दस प्रकार के उल्लेख बा। अभिधानचिंतामणि (हेमचन्द्र) में अन्य शास्त्रकारन के मत से लाल धान (ब्रीही), जव (यव), मसूर, गहूँ (गोधूम), हरियर मूँग (मुद्ग), उरिद (माष), तिल, बूँट (चणक, चना), चीना, टांगुन, कोदो, राजमूँग, शालि, रहर (आढकी), मटर (कलाय), कुलथी आ सन, कुल सतरह धान्य (अन्न) के जिकिर आइल बा। हेमचन्द्र धान के कुछ प्रभेद आ उनुकर समार्थी के चरचा कइले बाड़ें। लाल रंग के साठी धान के आशु, ब्रीही, साठी भा सेर्हा धान के गर्भपाकी, षष्ठिक, सरेख कलम धान के शालि, उतिम, लाल धान के लोहित, रक्तशालि आ सुगंधित (कृष्णभोग,ठाकुरभोग, कनकजीर, बासमती आदि) के महाशालि आ सुगंधिक पर्याय हवें। एकरा अलावे संस्कृत में अनते शकुनाह्वत, सुगंधक, कर्दमक, पुष्पांडक, महिष्मस्तक, दीर्घशूक, कांचनक, हायन अउर लोध्रपुष्पक आदि धान के प्रभेद के उल्लेख मिलेला। ई हालत त सुदूर अतीत के बा, वर्तमानो में धान के हर किसिम के एह तरह के कवनो मान्य जानकारी के सूचीबद्ध कइल कठिन बा।

एशिया के समशीतोष्ण इलाकन में दस हजार साल पहिले से धान के खेती के शुरूआत के संभावना कइल गइल बा बाकिर पुरातात्त्विक नजरिया से सभसे प्राचीन मोसोपेटामिया आ हड़प्पा–मोहनजोदड़ो सभ्यता में धान के खेती के पोख्ता सबूत मिलल बाड़ें। मेसोपोटामिया में धान के दवनी करत हरवाह–बैल आ सिंधु सभ्यता से चाउर आ धान के भूँसी के प्रमाण प्राप्त भइल बा। दूनों प्राचीन आ उन्नत सभ्यतन के अध्ययन से सोपट बा कि मानव सभ्यता के निर्माण में धान के खास भागीदारी रहल ह। भारत में हस्तिनापुर में 1000–750 ई० पहिले के समय के धान के सबसे पुरान नमूना मिलल बा। इलाहाबाद के झूसी आ संत कबीरनगर में लहुरादेवा की खुदाई में मिलल पुरातात्विक अवशेषन के अध्ययन से साफ बा कि झूसी में 9000 ई०पू०आ लहुरादेवा में करीब 8000 ई०पू०धान के खेती होत रहे। जहाँ–जहाँ पानी बा उहाँ–उहाँ–धान बा। धान मानुस के भूख मिटावे के संगे ओकरा बीच के संबंध आ सामाजिक जीवन के आकार लेवे में बड़ सहयोगी रहल ह।

'रामायण' में धान के फसिल के मनहारी चित्र उकेरल गइल बा। पंचवटी क्षेत्र में हेमंत काल के बरनन में पियरछहूँ–हरियर अधपक धनखेती के बरनन में वाल्मीकि के सहज प्राकृतिक सौंदर्यबोध देखे जोग बा–

"खर्जूरपुष्पाकृतिभिः शिरोभिः पूर्णतण्डुलैः।
शोभन्ते किंचिदालम्बाः शालयः कनकप्रभाः।।" (अरण्यकाण्ड–16–17)

[खजूर के फूल–गुच्छ जइसन चाउर से पूरन जड़हन धान के सोनहुला बाल कुछ लटक गइल बाड़ें, जे से इनकर शोभा बढ़ गइलबा।]

मनुस्मृति (3.274) में पितर लोग के एह चाहना के शब्द दिहल गइल बा कि उनुका बंस में केहू अइसन पैदा होखे जे भादो के मघा नछत्तर के तिरोदसी के दिन घीव–मधु युक्त खीर प्राप्त क के, हाथी के छाँह जब पुरुब का ओरि जाए लागे (दुपहरी में), उनुका के तिरपित करे–

"अपि नः सकुलेजायाद्यो नो दद्यात्त्रयोदशीम।
पायसं मधुसर्पिभ्यां प्राक्छाये कुंजरस्य च।।"

'अष्टाध्यायी' (पाणिनी) में छव तरह के धान के उल्लेख मिलेला, जवन सिलसिलेवार ब्रीहि, शालि, महाब्रीहि, हायन, षष्ठिका अउरि नीवार हवें। पाणिनी काल में मैरेय, कापिशायन, अवदातिका कषाय, कालिका नाँव के मादक पेय के प्रचलन के जिकिर बा, जवना में से मैरेय पोख्ता तौर प धान के चाउर से बनल शराब रहे।

'राजनिघंटु' के दसवें वर्ग में घान के विभिन्न प्रभेद के गुन के ब्योरेवार बखान कइल गइल बा। कलम, कलामक, रक्तशालि, दीर्घशूक, पुण्ड्र, महिष्मस्तक, पूर्णचन्द्र, महाशालि, पुण्डरीक, प्रमादक, पुष्पाण्डक, शीतभीरु, कांचन, शकुनीह्वत, पांडुगौर, शारिवाख्य, लोध्रपुष्प, सुगंधक, हायन, दीर्घलात, महादूषक, दूषक ई छब्बीस नाँव 'शालि' के भेद के कहल गइल बा। ई सब मीठ, चिक्कन, बलकारी, पित्तनाशक आ मलरोधक हवें। थोरिक कफ आ बाई करे वाला आ शीतल हवें। एन्हनि में से रक्तशालि बलवर्धक, रंग निखारे वाला, त्रिदोषहर, वृष्य आ मूत्रल ह। 'साठी' किसिम में कार्मुक, पीत, आमोद आ मुकुंद ई चारो ओजवर्धक, महाषष्ठिक, केदार, पुष्पांकुर आ बक ई मीठ, ठंढ़ा, मलरोधी, वात–पित्तशामक हवें। ब्रीही कोटि में कृष्णब्रीही, तुरितक, कुकुटाण्डक, पाटल, शालायु, राजीवाक्ष, नन्दी आ जन्तुमुख समान गुण के हवें जवन हलुक, कफ–पित्तहर, वायुवर्धक होलें।

महाकवि हाल (छठवीं सदी के आरंभ) द्वारा प्राकृत भाषा में संकलित 'गाहासत्तसई' (गाथासप्तशती) के मुक्तकन में धान, पयार आ घनखेती के चउगीर्द बेहद सोभन लोक के दरसन कइल जा सकेला जवना में प्रेम, वासना, लालसा, हरख–बिखाद, आनंद, लोक–रीति, दाम्पत्य–सुख, अन्या के हाव–भाव, उजवास आदि के बारीक चितरेखन भइल बा। केहू के केहू से कथन ह–"साँझ मुलुकले ऊ जनी बटोही के आसरा मँगले बहुते तिरस्कार का संगे बिछावे के पुअरा देले रहली। बाद में तेकर रूप–सुघराई भा मासूमियत प अइसन रीझली कि फजिरे ओकरा गइले देह–गंध–परस के अहसास मिलल पुअरा समेटे में आँखि लोराता"–

धान के बिलकुल नया पौध सुई, रोपे वाला पौधा बान, जरि नेरुआ, बाली झंपा, कच्चा धान गदरा भा गड़रा, गदरा के तैयार सुरका ह। धान के पौधशाला बियाड़ी, बियाड़ी से पौधा उखाड़े वाला कबरिया, उखड़ल पौध के छोट-छोट पुलिंदा अँटिया ह। पाकल फसिल के काट के मूठिया, पूलिया भा गट्ठा तैयार कइल जाला। डाँठ के पटरी आदि प पीट के धान झार लेला के बाद बाँचल गट्ठा के पेटाढ़ी भा नेवारी कहल जाला जवन कुट्टी काटे भा पलानी आदि छावे में सुविधाजनक होला। दँवनी क के बाँचल डाँठ पुआल, पयाल, पयार भा पुअरा ह। बे-उसिनल धान से सीधे कूट के बनल चाउर अरवा, उबाल के बनल उसना, उला के बनल भुजिया, उला के आ चिपटा कूट के बनल चिवड़ा ह। धान के सीधे भून के लावा भा खील तैयार होला। धान के बहरिया छिलका के भूसी, भीतरी कोराई, चाउर के टूटल हिस्सा कन, जादे टूटल चाउर खुद्दी भा टुटहन आ बारीक दरदरा पीसल रूप चौरठ ह। भुजिया चाउर के भूँज के फरही, मुरमुरी भा मुड़ी (मुर्ही) आ अरवा चाउर से अरइठ आदि चबेना तैयार होलें। साबुत चाउर से भात, खीर, तस्मई, रसियाव, पुलाव, खिचड़ी, जाउर, बिरयानी, बिरंज आदि आ चाउर के पिसान से रोटी, ठेकुआ, छाँछी, तहरी, बजका, इडली, पिठौरी, दलपिट्ठी, अमरपीठा, अनरसा, कसार, कचवनिया, ककरोल-बुकनी, ढकनेसर, चरौरी, पापड़, शालिचूर्ण पकवान, भा मिठाई आदि बनेलें। अदहन के सींझ चुकल चाउर से माँड़ पसा के भात के फरहर आ बेगर पसवले मँड़गील रूप प्राप्त होला।

"भण्डन्तीअ तणाइं सोत्तुं दिण्णाइँ जाइँ पहिअस्स।
ताइं च्चेअ पहाए अञ्जा आअट्टइ रुअन्ति।।" (गा०स० 4.79)

[लानत-मलामत करत जवन पयार बटोही के सुते खातिर दिहले रहली उहे अनगुते रो-रो के बिटोरत रहली।]

कुछ छाव अजीब होलें। कहे वाला ओकरा से ना कहले जेकरा से कहे के रहे, सुननिहार जवन सुनले त अउरे सुनले, जेकरा से औव्वल में कहे के रहे उहो सुनल आ ऊ उहे सुनल जवन असल में कहल गइल, ई 'अन्यपदेशक सूचना' ह। नायिका के अभिसार जुगुत धनखेती के जानकारी देवे के रहे त पास के केहू दोसर अदिमी के सुनवली-

"पङ्कमइलेण छीरेक्कपाइणा दिण्णजाणुवडणेण।
आनंदिज्जइ हलिओ पुत्तेण व सालिछेत्तेण।।" (गा०स० 6.67)

[पाँक से मइल, इकलौता दुधमुँहाँ पूत सरीखा ठेहुना तक बढ़ के गिरल धान के खेत से हरवाह आनंद से भर जालन।] मतलब जे अब उपयुक्त जगह तैयार बा। बाद बाकी जे बुझे, से बुझे।

एक गाथा में मिलन-थल से इंतिजार क के निराश लौटल नायिका के छोभ-कथन ह बाकिर जाहिरा तौर प इचिको नइखे बुझात। सोझे-सोझे कहे के रहे त कह दी अदिमी कि अरे आभागा! जब खरिहान में कचटाए के डर से बाल से लदरल-झुकल धानो ओस के बहाने रो लेला त आदिमी के के कहो? असल बात त ई कि एने जियरा कुहुँकता-

"कथं मे परिणइआले खलसङ्गो होहिइ त्ति चिन्तन्तो।
ओणअमुहो ससूओ रुवइ व साली तुसारेण।।" (गा०स० 6.68)

['का पाक जाए प हमार खल (दुष्ट, खरिहान) से संगति होखी'-ई चिंता करत ओनतमुँह, शूक (सूआ, शोक) से युक्त धान ओस के बहाने रो रहल ह।]
कुटनी के कुटनपन से के वाकिफ नइखे? हिंहवों कुटनी खबर ले आइल बिया कि अफरात धान उपजे से ओकर मरद अछत अस धपधप चाननी रात में मस्त गावता, संकेत ई कि अबहीं सुलभता के नजरिए ना तेकर घर निरापद बा ना समय अनुकूल बा-

"णिपण्णसस्सरिद्धि सच्छन्दं गाइ पामरो सरए।
दलिअणवसालितण्डुलधवलमिअङ्कासु राईसु।।" (गा०स० 7.89)
[धान के अजीरन बढ़ जाए से गँवार, शरद के मींजल नवका धान के चाउर अस उज्जर चनरिमा वाली रात में आपन मन के गावता।]

लाख चतुराई का बादो गुपुत के कुछ-ना-कुछ भेद उजागर होइए जाला। हिंहा कट चुकल धनखेत में उभरल रखवारिन के तिरिछा पदचिन्ह, जवन अब जोता गइल बा, सारी अतीतकथा के बयान क गइल-

"अलिहिज्जइ पङ्कअले हलालिचलणेण फलमगोवीए।
केआरसोअरुभणत सट्ठिअ कोमलो चलणो।।" (गा०स० 7.90)

[धान के रखवारिन के खेत के बहाव रोके बखत पाँक में उभरल कोमल पगचिन्ह अब हर चले से जोता गइल बा।]

धान के पाके के अनुमाने से किसान के कतिना खुशी होला ई कहे के बात थोरे ह बाकिर एजा त बाते उलटल बा-

"दिअहेदिअहेसूसिसङ्केअअभङ्गवड्ढिआसंका।
आवण्डुणअमुही कलमें समं कलमगोवी।।" (गा०स०7.91)

[संकेत (मिलन के जगह) के भंग होखे के आशंका से भरल, पिअराइल आ झुकल मुँहवाली धान के रखवारिन धाने के संगे दिने-दिन सूखल जात हई।]

कवनो तरह के उत्तेजना, ऊ चाहे छुधा-संवेदना से जुरल होखे, चाहे प्रेमाकुलता से, अदिमी के मगज के हिला देला। उलटा-पलटा त होखहीं के बा-

"णवकम्मिएण हअपामरेण दट्ठूण पाउहारिओ।
मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवहासिणी मुक्का।।" (गा०स०7.92)
[नवहा गँवार हरवाह पवहारी (खेत प भात पहँचावे वाली स्त्री) के देखि के पगहा के जगह नाथे खोल देलस।]

अफरात सुघराई कम जानलेवा ना होखे। देखनिहार प का का बीतेला? ई त देखहीं वाला कही बाकिर देखनउग के जान त हर छन अफदरे में बुझीं-

"अव्वो! ण आमि छेत्तं खज्जउ खाली वि खीरणिवहेहि।
जाणन्ता अवि पहिआ पुच्छन्ति पुणी पुणी मग्ग।।" (गा०स० उत्तरार्ध 815)

[ओह ! सुग्गा खाइयो जास तब्बो धनखेती में ना जाइब। राहगीर जानियो के रहता पूछ-पूछ के हलकान क देत बाड़ें।]

'ह्वेनसांग की भारत यात्रा', आठवाँ अध्याय (मगध पूर्वार्द्ध) में मगध क्षेत्र में खास किसिम के चाउर जेकर दाना बड़, सुगंधित और सुस्वादु होखे, के अलावे रंग चमकीला होखे के उल्लेख आइल बा। एकर नाँव महाशालि आ सुगंधिका बतावल गइल बा।

तीन शैव संतनके गावल 'तेवरम' में तमिलनाडु के विभिन्न भाग में सूखा पड़े के दरमियानी भगवान शिव द्वारा भारी मात्रा में धान अउरि सोना के सिक्का देके संतन के मदद करे के उल्लेख ह, जेकरा के तमिल लोग द्वारा महान चमत्कार माना जाला। लगभग 1400 वर्ष पुरान तेवरम छंद अजहूँ सभ शैव तमिल लोग में गावल जाला। तमिल क्षेत्र में बढ़िया धान, चाउर मुख्य उपज हवें। इहाँ धान के भंडार के स्वामी किसान के 'पेरुनेल पलकुट्टू एस्मै उल्लव' कहल जाला।

मोगलिया एकबालनामा आ तवारिखन में बासमती चाउर के बेरि-बेरि जिकिर भइल बा। 'आइने अकबरी' में लाहौर, मुलतान, प्रयाग, अवध, दिल्ली, आगरा आ मालवा के रायसेन क्षेत्र में मुस्कीन (लाल बासमती) के बहुतायत खेती के उल्लेख मिलेला।

'भविष्यपुराण' में आइल एक कथा के अनुसार जब सुरुज नारायन अमरित पीयत रहन त उनुकर मुँह से कुछ बून छिटक के धरती प गिरल जवना से तीन अनमोल पदारथ पैदा भइलें- दूध, ऊखि आ धान। पुराण शैली में कहल गइल एह प्रकरण के असल मायने बुझल बहुत मोसकिल नइखे। पिरथी प जीवन के हर सुगबुगाहट के पीछे सुरुज के किरदार सिद्ध बा। अमरित तुल इन्ह तीनहुन पदारथन के सुरुज के दिहल उत्तिम उपहार कहे में कवन उलटपंथी? एह पुराण में 'यवक्षीर' आ 'चरु' बनावे के जवन पाक-विधि देल बा ओकरा में धान के चाउर के प्रमुख भूमिका बा-

"शालितण्डुलप्रस्थ तु तदर्थ वा तदर्धकम।
क्षीरेणापि च सभक्त यवक्षीरमिदं स्मृतम।।"

[धान के चाउर पसर भ, भा आधा, भा तेकरो आधा दूध के संगे पाकल होखे ऊ यवक्षीर कहाला।]

क्षीरभागाष्टक ग्राह्य सप्तभागेन संस्थितं।
हैमतिक सिताख्य ताण्डुल प्रपचेच्चरुम।।

[आठ भाग दूध जब सात भाग रह जाय, ओमें हैमतिक, सिताख्य चाउर के पकावे त चरु बनी।]

धान उपजे वाला खेत के धनखेत, धनहर भा धनकियारी कहल जाला। बारीक भा मेंही धान के कुछ मशहूर प्रभेद के नाँव ह-बासमती, कनकजीर, धनियाँ, तुलसीफूल, महाजोगिन, मर्चा, गैरिया, जूही बंगाल, **बर्माभूसी**, लालकेसर, रामजीरा, श्यामजीरा, काला नमक, बहरनी, राम अजवाइन, गोपालभोग, रामभोग, ठाकुरभोग, सुगापंखी, बतासफेनी, दूधगिलास, कमोदी, दौनाफूल, हंसराज, भाटाफूल, बाँसफूल, कमोच, कनकचूर, गोकुलसार, श्रीमंजरी, मालदेही, लौंगचूरा, जलहोर। मोटा

धान के कुछ किस्म ह-करँगा, जगरनथिया, दूधराज, मेघनाद, राटिम, ललदेइया, गहुमा, गड़ेर, मुटुरी, नन्हिया, मनसरी, रमुनी सरिहन, सिलहट, बैतरनी, भेड़कावर, मुटुनी दोलँगी, मुड़रा, गजपत्ता, सेल्हा, जोंगा, कजरधर, दलगंजन, सौंदी (साभार, हिंदी की शब्द संपदा- विद्यानिवास मिश्र)। कृषि विज्ञान के एह अपूर्व उठान काल में रोज-रोज नया-नया प्रभेद के ईजाद हो रहल बा। तेकर नामकरण के तरीको में ढेर बदलाव अइल बा। बतौर बानगी कुछ नाँव लिहल जा सकेला- बाला, कावेरी, किरण, बिरसा, कलिंग, दोन, ब्राउन गोड़ा, रासी, पूसा, अन्नदा, साकेत, रतना, अर्चना, सीता, जया, सुजाता, राजेन्द्र, राजश्री, बासमती, कनक, पंत, महसूरी, पंकज, जगरनाथ, राधा, स्वर्णा, सुगंधा, जानकी, सरसा, उदय, शक्ति सामलाई, नीला, वंदना आदि।

धान के बिलकुल नया पौध सुई, रोपे वाला पौधा बान, जरि नेरुआ, बाली झंपा, कच्चा धान गदरा भा गड़रा, गदरा के तैयार सुरका ह। धान के पौधशाला बियाड़ी, बियाड़ी से पौधा उखाड़े वाला कबरिया, उखड़ल पौध के छोट-छोट पुलिंदा अँटिया ह। पाकल फसिल के काट के मूठिया, पूलिया भा गट्ठा तैयार कइल जाला। डाँठ के पटरी आदि प पीट के धान झार लेला के बाद बाँचल गट्ठा के पेटाढ़ी भा नेवारी कहल जाला जवन कुट्टी काटे भा पलानी आदि छावे में सुविधाजनक होला। दँवनी क के बाँचल डाँठ पुआल, पयाल, पयार भा पुअरा ह। बे-उसिनल धान से सीधे कूट के बनल चाउर अरवा, उबाल के बनल उसना, उला के बनल भुजिया, उला के आ चिपटा कूट के बनल चिवड़ा ह। धान के सीधे भून के लावा भा खील तैयार होला। धान के बहरिया छिलका के भूसी, भीतरी कोराई, चाउर के टूटल हिस्सा कन, जादे टूटल चाउर खुद्दी भा टुटहन आ बारीक दरदरा पीसल रूप चौरठ ह। भुजिया चाउर के भूँज के फरही, मुरमुरी भा मुड़ी (मुर्ही) आ अरवा चाउर से अरइठ आदि चबेना तैयार होलें। साबुत चाउर से भात, खीर, तस्मई, रसियाव, पुलाव, खिचड़ी, जाउर, बिरयानी, बिरंज आदि आ चाउर के पिसान से रोटी, ठेकुआ, छाँछी, तहरी, बजका, इडली, पिठौरी, दलपिट्ठी, अमरपीठा, अनरसा, कसार, कचवनिया, ककरोल-बुकनी, ढकनेसर, चरौरी, पापड़, शालिचूर्ण पकवान, भा मिठाई आदि बनेलें। अदहन के सींझ चुकल चाउर से माँड़ पसा के भात के फरहर आ बेगर पसवले मँड़गील रूप प्राप्त होला। मँड़गील सुपाच्य, गुनकारी आ घोंटे में सुबिस्ता के बावजूद आम चलन में नइखे। भोजपुरी इलाका में नानी के उतावली के चित्र खींचत एगो बालगीत देखे जोग बा-

"नानी गइली पानी भरे, भात भइल गील।
उहवाँ से अइली नानी, गटगट लील।।"

भारतीय संस्कृति में धान के अहमियत के कबो कम क के ना आँकल जा सके। आहारपूर्ति से लेके पशुपालन तक, घर-बाड़ी से लेके सांस्कृतिक उपादान तक, हर जगह धान के पैठ बा। खानपान, दवा-दारू, वसा उत्पादन, पशुचारा, छप्पर छादन, तख्ती निरमान, खाद, कला-साधन, ऐपन रचना, खोइँछा, धनकुट्टी, धनबँट्टी, लावा मेराई, पूजन, सगुन, हवन, सराध-तरपन, पिंडदान सगरी धान के अखंड राज पसरल बा। धान किसान संस्कृति के धजाधारी ह, बहरिया लोक से भितरिया भाव-संवेदना तक तेकर असर के फैलाव बा। धान के पैदावार आर्थिक बढ़ंती का संगे सुविधा में इजाफा कइसे जनमन प असर डालेला कि अगते के सरबस अवधारणा के टूटत देर ना लागे। अगते मोट में गिनती रहे त अगुआ गाहे-ब-गाहे आवस, कम दहेज होखला के बादो, ए से कि खटनी जादे रहे। धनहर इलाका, उसिने सुखावे, कूटे-छँटावे, फटके-बनावे, धोवे पसावे में डेगे-डेगे 'गौरी' के टेरन, बाकिर बखत बदलते देखीं लीला-

"बाकी आग लागो बजर परो करमें अभाग / तहों घरे-घरे मील भइल, टाँठ भइल भाव / तनी चढ़ बढ़ के
आई जी धनहर बा खेत / मोरा दक्खिन के देस !"

(बेटी मरे त मरे कुआँर-प्रकाश उदय)

कुछ कथन ऊपर से अबूझ पहेली अस लागेले बाकिर तनी गौर कइले माजरा खुलत देर ना लागे। घर में धान कट के आ चुकल। मरद बेरि-बेरि घर में जाके धान कूटे में पत्नी के सहायता करत बाड़े, कबो काम में मसरूफ पत्नी के नीचे लरज आइल काकुल के जूराबंध में अटकावत बाड़े। फिर मुखातिब होत बाड़े कि ऊ हाट जाएवाला बाड़े, एह कुछ समय के बिछुरन में जदि कुछ सनेस भेजे के दरकार पड़ गइल त का कहिहें? आखिर धनिया कोमल, अनभ्यस्त, गैरअनुभवी आ देकनउगे त बाड़ी? ए में प्रेम, उमंग, प्राप्ति से उपजल उदारता, दयाभाव, पछतावा, बेबसी आ ना जाने का का भरल बा-

"पुरुष घुसुर-घुसुर धान कूटे, धइ अटकावे केश / हम त धनिया जात बजरिया, का पठवइब सनेस?/
धनिया लता तर के पत्ता, झोरा में के गोली, / उजड़ाडीह के शंख, हाथी के दू दंत।"

('थरुहट के लोकगीत')

देह में बदलाव के संगे गर्भवती के चटोरपन आ भोजन-चाहना में काफी अंतर आ जाला। एक लोकगीत में एह टिसुना के सुर मुखर बा-

भात मोरा भावेला धानहिं केरा, दलिया मुंगहिं केरा हो। (भोजपुरी संस्कार गीत पृ. 53, बि०रा०प०)

लोकमन में धान के चाउर बदे बाकी अन्न के तुलना में सरेखता के भाव होला। घर में उत्सव बा त घरवइया के कवन फिकिर? तनिका ऊँच-नीच चली, बाकिर गोतिया-दयाद संगे आचार-बेवहार में कोताही ना चली-

"सासू के देबों धनइया भात,
ननदो के कोदइया भात हो।
एजी अपना गोतिन के देबों बासमती,
हमहिं गोतिनी पाँइच रे।।"
(भो. सं गी. पृ. 12)

धान-कथा के कवनो उपसंहार नइखे। निरंतर बह रहल धारा के कवनो अंतिम ठहराव ना हो सके। धान त आदिमी के इच्छा-आकांछा, सपन, उमंग, जीवन के धड़कन, पोसन सभके अलम ह। केदारनाथ सिंह जी के एक हिंदी कविता, 'धानों का गीत' के भाव-उलथन में तेकर कुछ परिछाँहि देखल जा सकेला-

"धान उगिहें कि प्रान, हमनिन के खेत में, बादर अइहऽ जरूर!

चान के बान्हल जाई, बाल-गुच्छ में, सुरुज के रेत में। बादर जरूर अइहऽ।
आगे बोलाई सून पगडंडी, पीछे ओनल बन-बेंत, साँझ पुकारी ओदे आँखी, भोरे होते धनखेत, बादर अइहऽ जरूर!

***

आलेख

सुरेश कांटक

भारत के किसान आ किसानी

गाँव के किसानन के दिन-दशा आ दुर्दशा अइसन बा कि ऊ खेतिये के निशा में सूतेलें आ खेतिए के चिंता में जागेलें। उठिये सुती ऊ अपना माल-गोरू, गाय-भँइस (बैल त अब बिला गइलन स चलि गइलन स मांसाहारी लोगन के पेट में) के सेवा में लागि जालन। कुटी-छपाटी काटे आ भूँसा-हरियरी, घास-पात के सानी गोति के, मूत-गोबर काछि के तब झाड़ा फिरे जालन। माथा प घूर-पात उठवले अपना खेत में ले जाके फेकिहें, तब जाके दतुअन पानी करिहें। लवटला के बाद जिनगी के धूने में लागि जइहें। कउड़ी भर मीठा (गुड़) मुँह में डालि के भा एक पउवा माठा पी के चलि जइहें खेत प। खेत से बतिअइहें। ओकर दुख सितम सुनिहें। ओकरा जरूरत के समुझिहें। तब घरे अइहें। सालो भर के इहे दिनचरचा बा उनुकर। चाहे लपलपात लूक चलत होखे चाहे कँपकँपावत शीतलहरी भा झमझमात सावन भादो। ना उनुका साँप से डर बा, ना बीछी से! माथ प पगरी बन्हले, हाथ में लउर लिहले दनदनात खेत प।

हमार देश भारत गाँवन के देश ह। इहँवा गाँवन के संख्या 6 लाख 59 हजार 631 गो बा। देश के 70 फीसदी आबादी गाँवे में रहेला। जेकर रोजी रोजगार खेती से चलेला। देश के अर्थव्यवस्था में खेती के योगदान 15 फीसद बतावल गइल बा। जबकि सकल राष्ट्रीय आय में खेती के योगदान 29% बा। खेती इहँवा के मुख्य धंधा ह। एकरा से 103 करोड़ आबादी के भोजन मिलेला आ उद्योग धंधा खातिर उपयोगी कच्चा माल मिलेला। एह तरह से देखल जाय त खेती हमनी के देश के रीढ़ के हड्डी के रूप में बाटे। एही से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी कहले रहन कि भारत के आत्मा गाँवन में बसेले। उहाँ के ई कहनाम आजो शत प्रतिशत सही बा।

देश के आजादी के बाद खेती के विकास खातिर पंचवर्षीय योजनन में काफी कुछ खरच कइल गइल। पहिलकी पंचवर्षीय योजना त खेती के विकासे प आधारित रहे। ओकरा बाद के बारह गो योजनन में से चउथा योजना खेती में खूब जोर दिहलस। ओह घरी सकल योजना खर्च के 25% राशि मतलब कि 3814 करोड़ रुपिया खेती के विकास प खरच भइल। ओही घरी हरित क्रांति के खूब जोर लागल आ ओकर फलो परापत भइल।

बाकिर सही तरीका से देखल जाव त एह खरच के लाभ खेती करे वाला किसानन के ना मिलल। किसान जिनगी में कवनो बदलाव ना आइल। आ ऊ कहाउत जस के तस रहि गइल कि "भारतीय किसान करजे में पैदा होला, करजे में पलाला आ करजे में मरि जाला।" बात ई एकदम साँच बा। पूरा देश विदेश जानत बा कि पिछिला बरिसन में कतने किसान करजा के बोझ से परेसान हो के जहर खा लिहलें आ कतने फँसरी लगा के मरि गइलें।

गाँव के किसानन के दिन दशा आ दुर्दशा अइसन बा कि ऊ खेतिये के

निशा में सूतेलें आ खेतिए के चिंता में जागेलें। उठिये सुती ऊ अपना माल-गोरू, गाय-भँइस (बैल त अब बिला गइलन स चलि गइलन स मांसाहारी लोगन के पेट में) के सेवा में लागि जालन। कुटी-छपाटी काटे आ भूँसा-हरियरी, घास-पात के सानी गोति के, मूत-गोबर काछि के तब झाड़ा फिरे जालन। माथा प घूर पात उठवले अपना खेत में ले जाके फेकिहें तब जाके दतुअन पानी करिहें।

लवटला के बाद जिनगी के धूने में लागि जइहें। कउड़ी भर मीठा (गुड़) मुँह में डालि के भा एक पउवा माठा पी के चलि जइहे. खेत प। खेत से बतिअइहें। ओकर दुख सितम सुनिहें। ओकरा जरूरत के समुझिहें। तब घरे अइहें। सालो भर के इहे दिनचरचा बा उनुकर। चाहे लपलपात लूक चलत होखे चाहे कँपकँपावत शीतलहरी भा झमझमात सावन भादो। ना उनुका साँप से डर बा ना बीछी से! माथ प पगरी बन्हले हाथ में लउर लिहले दनदनात खेत प।

पहिले के जमाना रहे कि हर जुआठ कान्ह प धइले बैलन के हाँकत जात रहन। काहें कि खेती के आधारे रहन स बैल। धवरा सोकना। गरदन में घंटी टुनटुनावत ध लीहें स राह। नाधा पैना नरइली किसान के हाथ में आ आतर प आतर जोतात रहे खेत।

तब बड़ा मान रहे बैलन के। साल में एक बेर पुजातो रहन स। सभे किसान बतिआवत रहन अपना अपना बैलन से। ओकनी के दुख सितम समुझत जानत रहन। बाकिर जबले आ गइल ई ट्रैक्टर, रोटोबेटर, पलाऊ, आ हरबेस्टर तबले बैलन के मान मरजाद आ इज्जत हुरमत खतम हो गइल। ओकनी के गवत आ चारा पानी जुटावल डाँड़ लागे लागल। अतने ना, जवन गाय बाछा बिआत रहे ओकरो इज्जत होत रहे। अब त बाछी बिआये वालिन के मरजाद बढ़ि गइल।

पहिले दिन दिन भर हर जोतात रहे। एक चास, दू चास, तीन चास। तब बीया छिंटात रहे भा टाँड़ से टँड़ात रहे पूरा बधार गूँज जात रहे। "हरियर हरियर महादेव, हरियर !"

अब ऊ जबाना गइल। बैल गइलन बबुरा बूँट लादे। अब त धान के कटनी होते खेत के पुअरा में आग लगा दिआता आ खेत में बीया छिंटा जाता। ट्रैक्टर से जोता जाता। कइसन तीन चास आ कइसन धान के दँवरी। गइल सब ताखा प। सरकार चिचियात रहो कि पराली जरवला से परदूषण फइलत बा। अन्हाधून जरत बा पुअरा। खेत के मित्र कीट जरत भुनात बाड़न। जल्दी से जल्दी खेत खाली क के गेहूँ बूँट मसुरी जौ खेसारी बोवे के बेचैनी बा सभके। जेकरा माल गरू बाटे ऊ पुआरा बटोर के कुटी कटवा लेता। ऊहो होता मसीने से। ना त पहिले धान के कटनी के बाद पलिहर छोड़ाई। बोझा बन्हाई। खरिहान तक ढोआई झपर झपर। खरिहाने में बोझा गँजाई। खटउर लागी। खरिहान अगोराई महिनवन ले। बोअनी के बाद फुरसत मिली त भँजहर के बैल माँगि के हफ्तन दँवरी होई। पुअरा के गाला गँजाई। राति राति भर काथा कहानी गीत गवनई करत धान के राशि अगोराई। गोबर के बढ़वना धराई। पंडीजी के अँगऊ निकलाई। नाऊ बारी के कमाई दिआई। ओकरा बाद बनिया के तीन महीना के करारे तउलाई भा घर के कोठिला भराई।

अब ऊ जबाना गइल। बैल गइलन बबुरा बूँट लादे। अब त धान के कटनी होते खेत के पुअरा में आग लगा दिआता आ खेत में बीया छिंटा जाता। ट्रैक्टर से जोता जाता। कइसन तीन चास आ कइसन धान के दँवरी। गइल सब ताखा प। सरकार चिचियात रहो कि पराली जरवला से परदूषण फइलत बा। अन्हाधून जरत बा पुअरा। खेत के मित्र कीट जरत भुनात बाड़न। जल्दी से जल्दी खेत खाली क के गेहूँ बूँट मसुरी जौ खेसारी बोवे के बेचैनी बा सभके। जेकरा माल गरू बाटे ऊ पुआरा बटोर के कुटी कटवा लेता। ऊहो होता मसीने से। ना त पहिले धान के कटनी के बाद पलिहर छोड़ाई। बोझा बन्हाई। खरिहान तक ढोआई झपर झपर। खरिहाने में बोझा गँजाई। खटउर लागी। खरिहान अगोराई महिनवन ले। बोअनी के बाद फुरसत मिली त भँजहर के बैल माँगि के हफ्तन दँवरी होई। पुअरा के गाला गँजाई। राति राति भर काथा कहानी गीत गवनई करत धान के राशि अगोराई। गोबर के बढ़वना धराई। पंडीजी के अँगऊ निकलाई। नाऊ बारी के कमाई दिआई। ओकरा बाद बनिया के तीन महीना के करारे तउलाई भा घर के कोठिला भराई।

तेकरा बाद पारी आई पवटा तूरे के। पछेआ के हलकोरा में बैलन से पवटा तूरे के काम अब खतम बा। बैले नइखन त पवटा का होई? अब त सभ काम मसीने क देता। बाकिर खरच होता। जोताई, कटाई, दँवरी सभ मसीने से। पइसा चाहीं। मेहनत कम खरचा अधिक। देह के आराम बाकिर लागी खूब दाम!

एतना सभ कामन में लगला का बादो किसान गीत गवनई करत रहन। राति राति भर झलकूटन होई। फगुआ गवाई। चइता गवाई। हरिकीर्तन गवाई। दू सेर गूर आ गाँजा के टान प पूरा रात कट जाई। अवरू ना त ओमें भाँगो डलाई पीस के। झूम भाई झूम ! झूम बराबर झूम ! हाहा हीही हूहू !

ऊ दिन बीत गइल। ना रहल होरी ना चइता। फुरसते नइखे। सभ काम भाड़ा प हो जाता। हरिकीर्तन के दल पइसा लेता। हरिकीर्तन गा देता। पहिले अस गँउआध ना रहल। कीरतन

अब त छठे छमाहे परबो तेवहार प नाया बस्तर नइखे नू चढ़त देह प! एगो समय आई कि बनिहारी करे के परी ए सोंढ़र! रोवले लोर ना गिरी! घोटले थूक ना घोंटाई! आवे द मल्टीनेशनल के खेती में। अपने खेतवा में अपने मजूरी करे के परी आ रामोदइब बोले के अधिकार ना रही। हियाव ना रही कि मेमिया सकऽ! .... चलाव खूब हर कुदार! बोआव धान, गेहूँ, बूँट, मसुरी, मकेया,जोन्हरी! अगोरिहऽ मचान प बाकिर कचरी कबारे खाये के परमीशन लीहऽ । खाये के ना मिली घेंवड़ा! कटहर के कोआ ना मिली। मोटकी मुगँरवा मीली। ना त सुथनी मुरई कबरिहऽ!

गावे खातिर ना, खाली परसादी खाये खातिर लोग जाता। एकाध घंटा में लवटि आवत बा।

बात बा कि सभके निनान्बे के चक्कर लागल बा। खरची के चिंता चढ़ल बा कपारे प। कहँवा से खाद आई कहँवा से बीया? कहँवा से कीट नाशक कहँवा से पटवन। हरसठे बेमार पड़ही के बा। दवाई के पइसा खातिर करजे काढ़े के बा। ऊहो आगि के मोले। पैदा पैदवार के बाजार भाव गिरले रहत बा। मततब कि सरकारी भाव मिलत नइखे। गरज मरद ह। बनिया अपने भावे लीहें। किसान का करिहें? देबे करिहें। ना त टप्पर गइहें।

साल में बिआह शादी लगबे करी। बेटी के बिआह में एकाध बिगहा बेचाई तबे दुआरे बरात लागी आ गीत गवाई–

"आपन खोरिया बहार ए फलाना बाबा,
आवतारें दुलहा दामाद हो।
बइठे के माँगेंलें लाल गलइचा,
लड़े के माँगें मैदान हो!"

एकरा बादे गुरहत्थी होई आ सेनुरदान होई। तबे जाँघ पवित्तर होई। इ त अपना घर के बिआह ह। हितई नतई में नेवता हँकारी अबहीं बड़ले बा। काढ़ीं करज आ पुराई देनदारी !

एगो समय रहे। कहात रहे, रोहिणी रवे, किरिकटा तवे। अदरा में बदरा मड़राय। पूख पुनरबस झापस झूपस, खेतिहर घर बइठल अगराय। बाकिर अब सब फेल बा। किसान के खेत में केना खेखसा साई मोथा के अलावे अतना किसिम के घास उपज जाता कि सोहले सोहात नइखे। घास जरावे के दवाई छिरिके के परत बा। एह से जव के साथे साथे घूनो पिसा जाता। चारा केंचुआ जइसन खेती के मीत कीट सभ सोआहा हो जात बाड़न।

सावन मास बहे पुरवइया बैला बेंचि किनहु धेनु गइया। त घाघ के पुरान कहाउत ह। अब सभ फेल बा। कब केने से एक झटका आ जाई केहू नइखे जानत। बाकिर बिजुली ना रही त खेती ना होई। कहँवा से आई अतना महँगा के तेल के खरचा। जतना के बबुआ ना ओतना के खेलवना लाग जाई। के करी डँड़तोड़ खेती। एही से सभ खेत वाला खेती छोड़त बाड़न। बँटइया मालगुजारी प खेत बंदोबस्त क देत बाड़न आ धोती के खूँट बगली में खोंसि के राजनीति में ढुकि जात बाड़न। आई आम कि जाई झटहा। जमीन के दलाली एह घरी खूबे बरियार लगहर भइल बाटे। रातोंरात लखपति बना देत बिया।

जहाँ तक पानी पटवन के सवाल बा, सभ पुरनका गायब बा। रेहँट, दोन, ढेंकुल, मोट, सएर, दमकल सभ गायब बा। एगो बोरिन के असरा बा। ना त सरगसरा बा। जे सँवँगर बा उहे बड़का खेतिहर बा। ना त खेती छोड़ि के भाग जाता दिल्ली, पंजाब, सूरत बंबई! बारह चउदह घंटा खटत बा। आ जीव जियावत बा। परले हरले काजे परोजन करजा कढ़ाता आ बाकलम खास होता। थाकि जाता त रामजी के सरन में आ जाता। आ गावे लागत बा, "सियाराम सियाराम सियाराम कहिए। जाहि बिधि राखे राम ताहि बिधि रहिए।"

बेटा बेटी बेमार बा त पूजा करीं। भखउटी भाखीं। अछत भभूत खातिर बाबा सोखा लोग केहें दउरीं। छूँछा के के पूछा! समय से पहिलहीं गंगा जी में जाईं। "रामनाम सत्त है मुअला में गत्त है।" कहेवाला मिल जइहें। लाश के परवाह क के, गंगाजी में डुबकी लगा के, सीकम भर पूड़ी जिलेबी खइहें आ हँसत खेलत घरे अइहें। उनुका त कवनो गम बा ना। केहू मूए वाह वाह! केहू जिए वाह वाह!"

इहे ह हमरा देश के किसान जिनगी ! रोंवे रोंवे करजा गँथाइल। तबो धरम करम में अझुराइल। जात–पात के बात त बस पुछहीं के नइखे। सभका कपारे चढ़ल बा जात–पात के बात। भलहीं मत मिले भोजभात। हम हई हँई! ते हऊ हवे! हम सेसर हँई! ते दोसर हवे! हम ऊपर हँई! तें नीचे हवे। हम बड़की पाँत वाला। तें छोटकी पाँत वाला। हमरा सोझा तोर का मजाल रे! मारत मारत देही के चाम

छोड़ा देब! तोर मजाल हतना! हमरा सोझा बोलबे! आँखि निकाल के हाथ में धरा देब! नीच नान्ह बरोबरी बोली रे! जोलहो के छेरि मरखाह! आँय! सहत्तर गो छेद वाला गंजी आ किरकिट वाला लूँगी बा देह प सालो भर बाकिर मोछि प ताव ऊहे बा खानदानी कि जब दादा हाथी राखत रहन। हथिया के भारी भरकम लोहा के सिकड़ अबहियों सोझहीं रखल बा। आँखी देखीं। साखी का पूछे के बा।

अरे फलानावा बो। तोर जबान चली कँइची अस! वाह रे! हई ना देखअ! आजू बनिया काल्हू सेठ! अँगुरी धरत धरत हाथ पकड़े लगले! अपना औकात में रहु, ना त अँइठल छोड़ा के छोड़ब! पाँच कीत्ता लड़त बानी अबहीं एक कीत्ता तोरो सँगे सही!

अइसन बइरकंटी में अझुराइल, अन्हुआइल, धधाइल, किसान समाज के के ना बोका बना दीही! चढ़ि जा बेटा सूली प! आपस में मरत रहऽ ! कटत रहऽ! जात-पात के नाम प वोट देत रहऽ! हम त अपना सात पीढ़ी के कल्यान कइये लेब। तू लीहऽ सठउरा! छीलीहऽ पियाज सात रुपिया सैकड़ा प। तहरा हूब बा अपना कल्यान खातिर लड़े के। सरकार तक आपन बात पहुँचावे के! भुखाइल कुकुर माड़े प आनंद! आ भुखला सियार के महुआ मिठाई! बनत रही जोजना। झोंकात रही अरबन-खरबन। बाकिर तहरा देही प रोहानी ना चढ़ी ए हीत! सुनलऽ कि ना सचनलऽ?

अब त छठे छमाहे परबो तेवहार प नाया बस्तर नइखे नू चढ़त देह प! एगो समय आई कि बनिहारी करे के परी ए सोंढ़र! रोवले लोर ना गिरी! घोटले थूक ना घोंटाई! आवे द मल्टीनेशनल के खेती में। अपने खेतवा में अपने मजूरी करे के परी आ रामोदइब बोले के अधिकार ना रही। हियाव ना रही कि मेमिया सकऽ!

चलाव खूब हर कुदार! बोआव धान, गेहूँ, बूँट, मसुरी, मकेया, जोन्हरी! अगोरिहऽ मचान प बाकिर कचरी कबारे खाये के परमीशन लीहऽ। खाये के ना मिली घेंवड़ा! कटहर के कोआ ना मिली। मोटकी मुगँरवा मीली। ना त सुथनी मुरई कबरिहऽ!

अब देखीं कि सरकार का ओर से जवन अनुदान आ बढ़ावा के पइसा आवत बा ओकर कतना कहँवा उपयोग होता! एक त कि सभ किसान के सभ नियम मालूम नइखे रहत। जेकरा मालूम होता ऊ ओकर उपयोग ठीक से करत नइखे। खेतन में पैदावार बढ़ावे खातिर अतना ना खाद डलाता कि खेत के कबाड़ा निकल जाता। हर साल खाद के मात्रा बढ़ावे के पड़त बा। रोगो बेआध अतना बा कि महँगा महँगा दवाई डाले के पड़त बा। अनुदान के रूप में जवन मिलत बा ऊ दोसरे जरूरत प खरच हो जात बा। समस्या जस के तस खाड़े रहत बा। खेती के घाटा के भरपाई हो नइखे पावत। नतीजा बा कि सेहत के सुधार नइखे हो पावत।

आ चादर के खींच तान जारी रहत बा। एह में खाज में कोढ़ के रूप में बेरोजगारी आ बेकारी सुरसा के मुँह अस। गाँवन में कल कारखाना बा ना। नवही कमइहें कहँवा! पढ़ि लिखि के मजूरी करे प मजबूर बाड़न। ना त सीमा प जा के मरात बाड़न।

एह से किसान के जिनगी में उजबुजाहट लउकत बा। ऊ आंदोलन करे प विवस हो जात बाड़न। पिछला बेर के किसान आंदोलन एगो ऐतिहासिक घटना रहे। अतना लमहर आंदोलन इतिहास में खोजला प मुश्किल से भेंटाई। अइसे त किसान आंदोलन के एगो लमहर परंपरा रहल बा देश में। आजादी के पहिलहूँ आ आजादी के बादो। बाकिर बैतलवा लटकल बा ओही डार प। एह पर सभका सोचे समुझे के पड़ी।

***

आलेख

कृष्ण मुरारी राय

मानव समाज क आधार बा खेती

पहिले गाँव आत्मनिर्भर रहलन स, सब एक दूसरा से मिलि जुल के गाँव क भलाई क काम करे। लेकिन आज सार्वजनिक स्वार्थ का ऊपर व्यक्तिगत स्वार्थ हावी हो गइल बा। पहिले खेती होखे आज व्यापार हो रहल बा। पहिले लोग कहस कि हमरा हेतना मन धान गेहूँ पैदा भइल बा, आज कहता लोग कि हेतना लाख क अनाज बेचनी ह। एह मानसिकता का पीछे कहीं ना कहीं बाजारवाद क प्रभाव भी बा।

हमनी क देश के गाँवन क देश कहल जाला। काहें से कि एगो अनुमान लगावल गइल बा कि लगभग साठ-सत्तर प्रतिशत आबादी गाँव में निवास करेले। यानि खाद्यान्न आ राजनैतिक ऊर्जा क स्रोतन क अधिकांश हिस्सा क आपूर्ति गाँवन से ही बा। लेकिन आज वास्तविकता कुछ अलग बा। पुरनिहा साहित्यकार लोग गाँवन क जवन भयावह दुर्दशा क वर्णन अपना रचनन में कइले बाड़न, ऊ स्थिति आज भी जस क तस बा। गाँव से पलायन क रफ्तार एतना बा कि अधिकांश घरन में ताला लटक गइल बा।

जइसे देश माने कागज पर खाली खींचल लकीर भर ना होला, खाली भौगोलिक सीमा भर ना होला ओइसहीं गाँव माने खाली खेत आ खरिहान भर ना होला। गाँव क आपन एगो स्वभाव होला, संस्कार होला, संस्कृति होले आ सबसे बढ़ि के लोक मानस होला। आजादी मिलला पचहत्तर साल गुजर गइल, केतने सरकार बदल बदल के देख लिहल गइल, केहू भी गाँव-किसान क दुख दरद बूझे क कोशिश तक ना कइल, दुख दूर कइल त दूर क बात बा। गाँव के खाली वोट बैंक से अधिका केहू नइखे बूझत। एमा हमनियो क यानि किसान लोगन क भी चूक बा, एगो किसान का रूप में वोट ना दे पाई जा। आज हालत ई हो गइल बा कि गाँव त बा लेकिन गँवईपन खतम हो रहल बा, खेत त बा लेकिन खेती आ खेतिहर खतम हो रहल बाड़न। एकरा पीछे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बड़े बड़े ज्ञानी लोगन से लेके एकदम निरा अज्ञानी लोगन क भी हाथ बा। केहू एगो का कपारे एकर दोष नइखे मढ़ल जा सकत। जेतना दोषी सरकार बा, शासन-प्रशासन बा, सिस्टम बा, छोट बड़ नेता आ स्थानीय जनप्रतिनिधि बाड़न ओसे कम दोषी गाँव क लोग भी नइखन। आ जहाँ तक बात प्रकृति क बा, त खेती के बनावे बिगारे में प्रकृति क बहुत बड़हन हाथ होला आ प्रकृति के बिगारे में हमनी क। ई कूल्हि के देख के हम प्रकृति के दोषी माने में थोड़ा संकोच करब। एगो अउरी बात, प्रकृति नियम से संचालित होले आ अउरी सब नीयत से। एगो किसान प्रकृति से त ताल मेल बइठा लेला लेकिन नीयत से पटरी ना बइठा पावे, काहें से कि 'नीयत बदलत देर ना लागे'।

सरकार, शासन-प्रशासन क उपेक्षा क दंश सहत अगर एगो किसान अभी जिंदा बा त केहू का एहसान का चलते ना बल्कि अपना जिजीविषा का बूते जिंदा बा। बहुत मजबूत करेजा क होला एगो किसान। कभी कभी अगर ऊ आत्महत्या भी करेला त कायरता वश ना बल्कि एकरा पीछे राजनीति क भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हाथ होला। जब सरकार आन्हर बहिर हो जाले त आपन जान देके आ जुबान बंद कइके अपना दुर्दशा के देखावे, सुनावे के कोशिश करेला। आमतौर पर किसान, मजदूर आ गाँव क लोग स्वभाव से गैर राजनीतिक होलन। अइसना में राजनीति क ई दायित्व बनत बा कि ऊ एह लोगन क महत्व, दुख दर्द आ समस्या के समझे आ जड़ तक पहुँचे। लेकिन कुर्सी का आगे कुछ सूझे तब न।

खेत, किसान आ गाँव कई मायने में एक दूसरा क पूरक आ मानव समाज क जीवन अउरी जियका क आधार बाड़न। किशन पटनायक जी क किताब 'किसान आंदोलन-दशा एवं दिशा' का अनुसार मानव समाज में खेती के महत्वपूर्ण बनावे में तीन गो महत्वपूर्ण कारण हमेशा से रहल बा-1)-तमाम विकास आ औद्योगिकरण का बावजूद आज भी मानव जाति क बहुत बड़ हिस्सा गाँवन में रहेला आ खेती तथा पशुपालन पर निर्भर रहेला, 2)-खेती से ही भोजन क आपूर्ति होला, दूसर विकल्प नइखे आ 3)- मानव समाज खातिर जेतना भी आर्थिक गतिविधि, हलचल होला ओमा खेती ही अइसन बा जेमा वास्तविक

उत्पादन आ सृजन होला। एगो बिया से बीस तीस दाना तइयार। जबकि अउरी क्षेत्रन में कच्चा माल क बस स्वरूप बदलेला, नया कुछ पैदा ना होला।

पहिले गाँवन क स्वरूप कुछ दूसर रहे। एगो विचारक 'सर चार्ल्स मैटकाफ' सन 1830 में भारतीय गाँवन के 'लघु गणराज्य' संज्ञा देले रहलन। उनका विचार से गाँव पूर्णतः आत्मनिर्भर रहलन स, कवन साम्राज्य ढहल या के आक्रमण कारी आइल ए कूल्हि से ढेर अंतर ना पड़े (कुरूक्षेत्र-फरवरी 2011, पृ. 16)। लेकिन आज राजनीत आ बाजार क नजर लाग गइल बा। गाँव नजरिया गइल बाड़न स। कवन बैद जी झारे फूँके अइहन जब बैदे जी खुद नजरिअवले बाड़न। गाँव बस माँस क लोथड़ा भर बाड़न स एह कूल्हि गीधन का नजर में, बस लूट ल, नोच ल, बकोट ल आ एह कूल्हि लूट खसोट में मजबूरी में ही सही हमनियो क बहुत बड़हन सहयोगी बानी जा।

पहिले गाँव आत्मनिर्भर रहलन स, सब एक दूसरा से मिलि जुल के गाँव क भलाई क काम करे। लेकिन आज सार्वजनिक स्वार्थ का ऊपर व्यक्तिगत स्वार्थ हावी हो गइल बा। पहिले खेती होखे आज व्यापार हो रहल बा। पहिले लोग कहस कि हमरा हेतना मन धान गेहूँ पैदा भइल बा, आज कहता लोग कि हेतना लाख क अनाज बेचनी ह। एह मानसिकता का पीछे कहीं ना कहीं बाजारवाद क प्रभाव भी बा।

व्यापक पैमाना पर बाजार के दूगो रूप देखल जा सकत बा- अंतर्राष्ट्रीय बाजार आ वैश्विक बाजार। अंतर्राष्ट्रीय बाजार क दायरा सीमित होला। राष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग देशन में अलग-अलग तरीकन से आपन पईठ बनावेला, आक्रामक त ई भी होला लेकिन तनी दूसरा तरीका से। ई ओह देश क संस्कृति, आर्थिकी, सामाजिकता, नागरिकन क मानसिकता आदि क थोड़ा अनुरूप होला जबकि वैश्विक बाजार (ग्लोबल मार्केट) पूरा दुनिया के एगो गाँव का रूप में देखेला आ सबका के एके लउरी हाँकेला। ई उपभोक्ता क जरूरत का अनुसार उत्पाद ना बलुक अपना उत्पाद का अनुसार उपभोक्ता क मानसिकता गढ़े क क्षमता राखेला। खेती आ किसानन का चारू ओरी सुविधा का नाम पर जवन कँटइला तार घेरल जा रहल बा ऊ सुरक्षा घेरा ना होके नजरबंद करे क हथियार बन गइल बा। खेतिहर चाहे अनचाहे एह घेरा के अब तोड़ भी नइखे सकत। एक ढंग से मानसिक गुलामी भी कहल जा सकत बा। एह वजह से गाँवन क निर्दोष लोक संस्कृति, पुरान परंपरा, पर्व, त्योहार, संगीत,कला,खेल-कूद आदि सब प्रभावित हो रहल बा। सब्सिडी, कृषि ऋण, उन्नत बीज आदि तरह-तरह क खेलौना एही घेरा में डाल दिहल जाता। एगो किसान क आवश्यकता आ भावना क कवनो महत्व नइखे। बाजार अपना उत्पाद का हिसाब से हमनी के चला रहल बा। एह सब का पीछे राजनीति आ बाजारवाद क बहुत बड़हन घालमेल बा। खेती किसानी का नाम पर हमेशा से घिनौनी राजनीति होत चलि आइल बा काहें से कि गाँव, किसान या खेती का शोषण पर ही पूरा व्यवस्था टिकल बा। सबसे बड़ा ज्यादा गड़बड़झाला जमीन-खेत के लेके बा। एगो बहुत पुरान किताब 'ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार' में एक जगह लिखल बा "हमनी का आस पास जेतना चीज देखतानी जा, सब जमीन क धन क लूट से खरीदल गइल बा... सब तरह क लुटेरन में शहर सबसे निर्दयी बा"। शहरी होखल बाउर नइखे लेकिन गाँव का कीमत पर ना। गाँवन क शहरीकरण ना होके आधुनिकीकरण होखे के चाहीं। गाँवन में जब मड़ई उठावल जाला त ओह मड़ई का भीतरी कुछ लोग रहेलन आ कुछ लोग बहरी से जोर लगावेलन तब जाके मड़ई उठेले। अइसहीं गाँव क भलाई करे के बा त खाली गाँव में रहि के ना हो पाई, शहर नगर में रहि के बहरी से जोर लगावे के परी। एगो खेतिहर बदे खेती के अलावे भी अन्य धंधा जरुरी बा, खेती के सम्हारे खातिर काहें से कि खेती खुद में धंधा ना ह जबकि आज व्यापारी वर्ग खाली मुनाफा खातिर खेती में हाथ आजमावल चाहत बा। जहिया मुनाफा बंद ओही दिने खेती बंद करि दी ऊ। एसे खेती अव्यवसायिक होखे के चाहीं।

पहिले खेती किसानी के ढेरे बढ़िया मानल जात रहे। पढ़ाई लिखाई में कवनो कमी ना लेकिन नोकरी.. हरगिज ना। नोकरी त अब न अगिला पौदान पर खड़ा भइल ह। आज ई हाल भइल बा कि जेकरा घर में नोकरिहा नइखन ऊ घर पिछड़ल मानल जाता। एकरा पीछे बहुत बड़हन नकारात्मक मानसिकता हावी हो गइल बा। आप ध्यान देईं- अधिकांश बाप मतारी अपना लइकन से कहतारन जा कि अरे बचवा मन लगा के पढ़ु, ना पढ़बे त कुदारिये न चलइबे। एकर मतलब खुद किसान बाप मतारी खेती के बदनाम करत बाड़न ई कहि के कि 'खेती में का बा'। शायद एहू पर केहू गाना बना दे।

हमरा देखला से मजबूरी में ही सही गाँव क लोग भी गाँव के छल रहल बाड़न, खेती के बदनाम कर रहल बाड़न। देखा देखी में खाली क्षणिक सुविधा भोगे का चक्कर में सुख बिलवावत जा रहल बाड़न। जेकरा ढेर खेत बा ऊ मालगुजारी पर दे देत बा। जे लेत बा ओकरा ओह खेत से प्रेम नइखे, अधिकाधिक उत्पादन का चक्कर में, तात्कालिक लाभ का

चक्कर में बहुत कुछ अइसन डालता कि खेत क स्वास्थ्य खराब हो रहल बा। ठीक अइसहीं राजनीति बिया, ईहो एगो खेतिये बा। ईहो मालगुजारी पर लिहल जाता, पाँच साल खातिर हई पार्टी, पाँच साल हऊ पार्टी। तात्कालिक लाभ (वोट) खातिर अइसन अइसन रसायन(धार्मिक उन्माद, जातिवाद आदि) क छिड़काव होता कि उत्पादन त मिल जाता लेकिन खेत (समाज) खराब हो जाता।

प्रधान हरिशंकर जी क लिखल एगो किताब 'खेतिहर समाज' का पृष्ठ 80 पर लिखल बा- 'अंग्रेजी हुकूमत से पहिले हिंदुस्तान क लोगन क सबसे महत्वपूर्ण काम रहे खेती। आमदनी क जरिया भी ईहे रहे'। पहिले खेती किसानी के ढेरे बढ़िया मानल जात रहे। पढ़ाई लिखाई में कवनो कमी ना लेकिन नोकरी.. हरगिज ना। नोकरी त अब न अगिला पौदान पर खड़ा भइल ह। आज ई हाल भइल बा कि जेकरा घर में नोकरिहा नइखन ऊ घर पिछड़ल मानल जाता। एकरा पीछे बहुत बड़हन नकारात्मक मानसिकता हावी हो गइल बा। आप ध्यान देईं-अधिकांश बाप मतारी अपना लइकन से कहतारन जा कि अरे बचवा मन लगा के पढ़ु, ना पढ़बे त कुदारिये न चलइबे। एकर मतलब खुद किसान बाप मतारी खेती के बदनाम करत बाड़न ई कहि के कि 'खेती में का बा'। शायद एहू पर केहू गाना बना दे।

नोकरिहा लोग रिटायरमेंट का बाद भी गाँव में नइखन रहल चाहत। शहर में मकान (घर ना) बना के रहतारन, आ एने बूढ़ बाप-महतारी अपना बाप-दादा क डीह छोड़े के तइयारे नइखन। आ कुछ बूढ़ा-बूढ़ी लोग के उनकर लायक शहरी बेटा पतोह लोग अपना सँगे राखले नइखन चाहत। अब एइजा एगो विडम्बना कहीं चाहे कुछ अउरी कहीं, अगर केहू शहर में रहत बा आ बाप महतारी कइसहूँ आ कतहूँ रहता त दूसरका गाभी बोले खातिर आपन तर्क तइयार रखले बा। बाप महतारी गाँव में बाड़न त कहाला कि लइकवा लावारिस छोड़ देले बाड़न स, पूछते नइखन स। अगर कवनो एगो का पास रहतारन त कहाला कि दूसरका से पटते नइखे, अगर बाप एगो लइका का पास आ महतारी दूसरका का पास तबो आफत- केनियो से चलाव नइखे। लेकिन ई केहू का नइखे बुझात कि एक दिन सबका बूढ़ भी होखे के बा आ ईहे हाल भी होई, अकेले रहे के परी। अभी एह पीढ़ी का गाँव नइखे भावत त अगली पीढ़ी जब ढेर पढ़ि लिख लेई त ओकरा आपन ऊ शहर भी ना नीक लागी आ ई सिलसिला लगातार चली, मूल जगह 'लान्चिंग पैड' का रूप में प्रयोग होइहन स, सेटेलाइट उड़िहन स आ कहीं दूर अपना अलग कक्षा में स्थापित हो जइहन स। एसे कहीं रहीं, केतनो महल अँटारी बना के रहीं लेकिन आपन मूल गाँव से संबंध मत छोड़ीं।

हम आपन गाँव टुटुवारी, बलिया (यू. पी.) क एगो परंपरा क उल्लेख कइल चाहब- हमनी क खानदान में कवनो लइकन क बार (मुंडन) गाँव में ही उतारे क परंपरा चलल आ रहल बा। एकरा वजह से हरेक परिवार अपना गाँव से गहराई से जुड़ल बा जवना क नतीजा बा कि कवनो घर क ताला में न मुर्चा (जंग) लागल बा आ ना कवनो घर ढहत ढिमिलात बाड़न स एकाध घर अपवाद भी बा। सबका अपना गाँवे घरे आवे जाये क बहाना खोजत रहे के चाहीं तबे गाँव बाँची, खेती बाँची, किसानी बाँची, मानव जाति आ मानवता बाँची।

***

आलेख

विनय बिहारी सिंह

पहिले कमाए वाला आदमी, गिरहत के पूरक होत रहल ह

आज से तीस साल पहिले तक ले कमाए वाला लोग पास-पड़ोस के जरूरतमंद लोगन खातिर धोती, लुंगी आ गंजी कीन देत रहल ह, सादी-बियाह में मदद क देत रहल ह। जे गरीबी का बाद भी अहंकारी रहत रहल ह ओकरा के नेवता भा कौनो बहाना से कमाए वाला/नोकरिहा लोग ओकर मदद क देत रहल ह। केहू अनाज से मदद क दी त केहू कपड़ा-लाता से। घर में लकड़ी नइखे त दोसरा घर के जरत चूल्हा पर खाना बना लेत रहल ह। समाज में एक दोसरा के मदद करे के भाव हावी रही।

अब त जे कमाता, ओकरे नइखे आंटत। त ऊ दोसरा के का दी। अपने में परेसान बा। कबो कुछ घटल रहता त कबो कुछ। ऊपर से बेमारी–हेमारी, नेवता–हांकारी आ हजार गो जरूरत। खरचे खरचा। बाकिर ई परिस्थिति हरदम ना रहल ह। आज से तीस साल पहिले तक ले कमाए वाला लोग पास–पड़ोस के जरूरतमंद लोगन खातिर धोती, लुंगी आ गंजी कीन देत रहल ह, सादी–बियाह में मदद क देत रहल ह। जे गरीबी का बाद भी अहंकारी रहत रहल ह ओकरा के नेवता भा कौनो बहाना से कमाए वाला/नोकरिहा लोग ओकर मदद क देत रहल ह। केहू अनाज से मदद क दी त केहू कपड़ा–लाता से। घर में लकड़ी नइखे त दोसरा घर के जरत चूल्हा पर खाना बना लेत रहल ह। समाज में एक दोसरा के मदद करे के भाव हावी रही। ईहे ना केहू अतिथि आ जाई त ओकर खूब आदर सत्कार होई। आजकाल त – "ई कब जइहें" वाला भाव रहता।

बाकिर एगो दोसरो आयाम रहत रहल ह। रउरा सब के मालुमे बा कि पहिले कई गो लोगन के परिवार एकही आंगन में रहत रहल ह। कई गो देयाद एक ही घर में रही लोग। आंगन साझ रही। त जौना परिवार के लोग तनी बड़

पद पर रही लोग, ढेर कमाई लोग ओकर लइकन के पहिरल-ओढ़ल, कापी-किताब आ बस्ता देखि के गिरहत परिवार के गांव में झोरा लेके पढ़े जाए वाला लइका हसरत से देखिहें सन आ सोचिहें सन कि ई कुल लइका केतना भाग्यवान बाड़े सन, केतना सुखी बाड़े सन। ओही में जौन दृढ़ इच्छा शक्ति वाला लइका रहले ह सन ऊ मन में संकल्प करिहें सन कि हमहूं खूब पढ़ब, खूब मेहनत करब आ बड़का अफसर बनब। खूब पइसा कमाइब। अब त सब अलगा-अलगा घर बनाके रहता। केकरा रसोई में का बनता आ केकरा घर में कौन नया सामान आइल बा, एकरा से केहू के मतलब नइखे। धीरे-धीरे गांव में शहर के "आत्मकेंद्रित" भाव ढूकि रहल बा। महानगर में एक दोसरा से जरल-खउराइल लोग बहुते कम मिलिहें। बाकिर गांव में तनी बेसी मिलिहें।

पहिले कमाए वाला लोगन के लागी कि खाली कमइले से आ पत्नी-बच्चा के देखभाल कइला से काम ना चली। गांव-घर से भी रिश्ता राखे के परी। ऊहे हमनी के जरि (जड़) बा। ऊहे आधार बा। ओइजा से कटि गइनी त कटइला पतंग नियर कहां जाके गिरब पते ना चली। आजुओ ई भाव बा, बाकिर आर्थिक दबाव गांव से महानगर का ओर पलायन करवा देता। एक बार केहू महानगर में कमाए लागल त बस ऊ महानगर के होके रहि जाता। पहिले दू भाई में एक भाई कमाता आ एक भाई खेती-गिरहती करता त दूनो एक दूसरा के पूरक रहत रहल ह। कमाए वाला भाई भाई-भउजाई खातिर कपड़ा-लत्ता से लेके दवाई-बीरो के इंतजाम करी। आ गिरहत भाई कमासुत भाई के भूंजा, सतुआ, गुर से लेके चाउर, गेहूं आ नाना प्रकार के चीज दे दिही। कमाए वाला भाई खाद आ बीज के पइसा पहिलहीं से अलगा राखि दीही। कमाए वाला भाई के पत्नी आ लइकन के देवता नियर आदर होई। कमाए वाला भाई एतने से अपना के धन्य महसूस करी। दूनो भाई परिवार के गाड़ी के पहिया बूझात रहल ह। हालांकि अबो कुछ परिवारन में ई परंपरा बांचल बा। बाकिर अगर

गांव-घर से भी रिश्ता राखे के परी। ऊहे हमनी के जरि (जड़) बा। ऊहे आधार बा। ओइजा से कटि गइनी त कटइला पतंग नियर कहां जाके गिरब पते ना चली। आजुओ ई भाव बा, बाकिर आर्थिक दबाव गांव से महानगर का ओर पलायन करवा देता। एक बार केहू महानगर में कमाए लागल त बस ऊ महानगर के होके रहि जाता।

समग्रता से देखीं त अब ई परंपरा खतम हो रहल बा। अब कुछ घरन में एक-दूसरा के प्रति शक पैदा हो गइल बा। ई प्रवृत्ति मरद-मेहरारू दूनो में बा। जब इनार (कुआं) में भांग घोरा गइल बा त केहू कइए का सकेला। एक हाली जब शक के बीज बोआ गइल त ऊ हमेशा फलत-फूलत रही। ठीक ओही तरे जइसे जब आदमी में डर समा जाला त हवा चलला पर जब सूखल पतई उधियात का घरी खड़खड़ आवाज करेला त ओकरा लागेला कि भूत आवता।

पहिले बहुते लोग गीता आ भागवत पढ़ी। भागवत कथा के आयोजन करी। लोग भागवत बड़ा मन लगा के सुनी। पाप-पुण्य के बोध करी। गलत काम के प्रति एगो डर रहल ह। कतने आदमी झूठ गवाही देबे ना जात रहल ह। ओकर सिद्धांत रही कि हम झूठ ना बोलब। पाप परी। बेईमानी आ घटियाई ना करब, पाप परी, नरक भोगे के परी। नैतिकता के एगो भाव रहल ह, चेतना में सही-गलत के मूल्यांकन बराबर चलत रही। सबका घर में धार्मिक, आध्यात्मिक किताब रहिहन स। ओकर लोग पाठ करी। संध्या वंदन करी। संझवत के दीया जराई। बिजली के आ गइला पर भी पूजा स्थान पर दीया जरूर जरी। हर घर में बल्ब जरला का बावजूद संझवत के दीया देखावल जात रहल ह। अब ऊ कुल खतम हो रहल बा। अब नैतिकता के मानदंड ईहे बा कि रउरा लगे कतना पइसा बा। कतना धन बा। ऊ धन रउरा ईमानदारी से कमइले होखीं भा बेईमानी से। रउरा भले बड़का भ्रष्ट होखीं, जदि रउरा लगे धन बा आ झूठ-सांच के प्रपंच बा त रउरा आगा पीछा घूमे वाला लोग मिल जइहें।

पहिले के समय में आ अब के समय में जमीन-आसमान के अंतर आ गइल बा। अब त गांवो के लोग बैंक्वेट हाल में सादी-बियाह करता। कैटरर राखता। पहिले लोग अपना आंगन में बियाह कइल शुभ मानत रहल ह। अब किराया पर लिहल मैरेज हाल में बियाह कइल शुभ मनाता। गांव-कस्बा में मिलजुल के खियावे वाला, पत्तल चलावे वाला आ सूते खातिर आपन खटिया बिछावना देबे वाला परंपरा बहुत पहिलही खतम हो गइल बा। भोजपुरिया समाज में ई बदलाव कई बार सोच में डाल देता।

***

आलेख

डॉ. प्रभाकर पाठक

हर के हर बात सुनीं

हम हर हईं, एकवचन, बहुवचन ना। हम माने त अकेले रउवा, बाकिर हर माने त सभे, प्रत्येक। समस्त जनता, हम जनतंत्र हईं। हम हर आदमी के मूल प्रवृत्ति के पूरक हईं- 'आहार' के, जे भर्तृहरि जी कहले बानीं- 'आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्येतत पशुभिर्नराणां।' तऽ हम हर हईं-हर आदमी के आहार के आधार। फारसीये में ना हम संस्कृतो में 'हर' हईं माने महादेव, भगवान शिव, देख लेब, पर्याय कोश में-'महादेव शिव शंकर शंभू उमाकान्त हर त्रिपुरारि।' हम त हइलें हईं महादेव आ जे हमरा के खींचेला उ तऽ छछाते 'महादेव' कहाला। मजेदार बात त ई कि महादेवे महादेव के सवारी हउवन। हर हर महादेव युद्धघोष से हो ह माने ललकार। पानी के जोरदार धार के लोग हरहराईल कहेला। तऽ हर हर महादेव कहे के मतलब का? इहे नू कि- 'दुश्मन के खून के हरहरा दीं हे महादेव।' एगो बात आउर जान लीं, हम खाली खेते ना जोतीं।

अच्छा, सामान्य रूप से खेत जोतला के रउवा कवना रस में लेब। एकरा के हम तऽ शान्त रस में राखब, एह से कि हम त वैराग्य भाव से लोग खातिर आपन कर्म करीलें। बताईं लोगन कि एको दाना उपजावे वाला चाहे खाये वाला से हमरा भेंटाला? हम त बस-परोपकाराय सतां विभूतयः। खाये के पहिले स्मरणो 'अन्नपूर्णा' के करेला लोग- 'अन्नपूर्णे सदा पूर्णे'। इ त शान्त रस के बात भइल। रउवा तनी मजेदार, मजगर शिकारी होखेब, अच्छा शिकारी ना रसिकराज होखेब त ई कहाउत जरूर सुनले होखब कि फलाना भाई चाहे रघुनी भाई फलाना भाई चाहे फगुनी भाई के खेत तऽ आजकल खूबे जोतात बा। ई पुरान कहाउत उटकेरला पर एगो बात जान लीं कि बीसा-तीसा के भले असली रस ना भेंटाइल होखे बाकिर साठा-पाठा, सत्तर-निछत्तर से ले के असिया रसिया त हहा के उदन्त हो गइल होखी लोग। ई कहाउत भोजपुरी में कब से संस्कृत में गइल कि संस्कृत से भोजपुरी में आइल, हम नइखीं कह सकत बाकिर रामजी बाबा जे पुरान 'हराही' रहलें, हराहीयो शब्द विचित्रे हऽ जेकर प्रयोग रामजी बाबा ओह आदमी खातिर करस जे दोसरा के खेत जोते में काफी तेज होखे आ जेकरा कूदला-फानला खातिर रोज संझलौका में मोहल्ला 'घेर' 'धर' शब्द के गोहार करे।

रउवा नइखीं जानत त जान लीं कि 'हड़ाह' शब्द हराही के अपभ्रंश ह। 'र' आ 'ड़' एकमेक वर्ण ह। घोड़ा, घोरा, सड़क, सरक सुनत होखब। मिथिलांचल में त बड़ी 'र' आ छोटी 'र' चलेला। 'र' उहां मजे में 'ड़' होत रहेला। खैर, त हम हराह आ हड़ाह लोग के बात कहत रहनी जेकरा बारे में ठीक भोजपुरिये कहाउत के समानान्तर ऊ संस्कृत में एगो अद्धार्ली कहस-'निशाकाले ये कर्षन्ति ते नरा भगतो भलो'। होशियरा के इशारा काफी ह तबो मन नइखे मानत कि ह्यजो लोग रात में जोतते हैं वे भले 'भगत' हैं'। ई श्लोकांश ते नराः तक त एकदम संस्कृत बा बाकिर भगतः भलो के देशज कह सकीलें। हमार मत बा कि शुद्धाशुद्ध के विचार छोड़ के विद्वान लोग एह पर विचार करीं कि रात में आकर्षण भले होखे कर्षण दिने में होला हमरा से। एकर मतलब छुपा रुस्तम लोग खातिर हम श्रृंगारो रस में उपस्थित बानीं।

अब वीर रस में, रौद्र रस में हमरा के देखे के होखे तऽबलराम जी के याद करीं जेकर हम हथियारे रहनीं। उहाँके हलधर कहाइलें। रणक्षेत्र में जब हमरा के ले के उहाँ के निकलीं त जरासंध जइसन योद्धा के खून सूख जात रहे। भीम जब दुर्याधन के जाँघ पर गदा मार के गिरा देहलें, तो उनकर बध करे खातिर हमरे के ले के उहां के दउरनीं। उ मुरलीवाला ना रहीं तें त भीम के हलधरजी हलाइये देले रहींतीं। अब देखीं, हमरा हलावल शब्द याद आईल। कवनो चीज के बढ़िया से गाड़ल 'हलावल' कहाला, एह शब्द में व्यंग्यार्थ यानी व्यंजना बा हमरा फाल के धार। एगो आउर बात सेना के सबसे अगिला पाँत में जे सैनिक रहेलें उ दस्ता 'हरावल' कहाला। इहवों आगे लड़े में हमीं बानीं। कहल तऽ इहो जाला कि बलराम जी जरासंध से लड़े खातिर हमार आविष्कार कइले रहीं आ हमरे साथे नीतीश जी जेकरा पर पाबंदी लगवले बानीं ओकरो पहिल छान-बान आ पान उहें के कइनीं। ओं ग त हमर आविष्कार के कईल, इ हमरा बहुत झंझटियाह बुझाता। कारण जे बात इहो बा जे हम ना रहतीं त फेर सीताजी कहाँ से अइतीं आ जनक जी महाराज हमरा के चलइतीं कइसे। तऽ एकर त मतलब ई कि हम तऽ त्रेतायुग में से हो रहनीं त द्वापर में हमार आविष्कार कइसे भईल? लोहा के प्रयोग रामायण-युग में होखे लागल रहे आ

हमरा फाल के नोक के 'सीत' कहल जाला त ओहसे उत्पन्न भइलीं जानकी त उनकर पहिल नाम, ओरिजिनल नाम सीता भईल। जनक जी से भी पहिले सीता जी के उत्पादक तऽ हमहीं भईं, उहां के पालक-पोषक भले भइनीं. हम ना रहतीं त उहाँ के 'भूमिजा' कइसे कहइतीं। भूमि त सीता जी के लुकवले रहली, परगट त हमहीं कइनीं न। हमार त इहो कहल बा जे लाखे बरखा-बूनी होईत, हम ना रहतीं त खेतवा जोतीत के, आ तब सीता माई ज्योतित होइती कइसे आ विवाह के बाद लंकादहन आ रावण-मारण होईत कइसे?

ऋग्वेद में गृत्समद ऋषि के उल्लेख बाटे। एतने ना ऐतरेय ब्राह्मण आ महाभारत जइसन- 'यदिहास्ति दहन्यत्र यन्ने हास्ति न तद् क्वचित'- ग्रंथो में उनकर जिक्र मिलेला। ऋषि होखला के साथें उ भारतवर्ष के पहिल कृषि-विज्ञानियो रहलें, जे कपास के खेती कइलें आ हमनी के नंगटई के तोपे के जोगाड़ कइलें, रुई के खोज कऽके रउआ लोनी यानी मनुष्य जाति के लज्जारक्षण के बेवस्था कइलें, जवना लज्जा के त्याग दियाव त हम सब विश्वविजयी बन सकी लें- 'एकां लज्जां परित्यज्य, सर्वत्र विजयी भवेत्'। संस्कृतवाला पंडिते ना, अधनंगा रहेवाला अंग्रेजो लोग लज्जा त्यागे के लाभ से परिचित बाड़ें-'shamelessness has thousand advantages'

एह तरे साँच पूछीं तऽ गृत्समद ऋषि हमनीं के कपड़ा देके त एक तरह से हानिये कइलें काहे कि आज तऽ लाज कइला से disadvantages होला। हमरा त इहे कहे के ह कि पेट के चलते हमनीं घेंट काटी ले, पाप करी ले बाकिर लाज छोड़ दीं त महाराज हो जाएब। हो सकत बा कि पहिले भिखारी चाहे दुखारी बने के पड़े बाकिर बाद में चमचागीरी पटिया लीं त कोठा-अमारी आ सोफा-तोहफा त राउर चरण पखारी। जे लाज छोड़ देहल ऊ परवाज हो गइल, जे बेशर्म हो गइल उ धर्मधुरीण हो गइल। देखीं-

चोर बनोर छिछोर छिनार छछात ऊहे अब धाकड़ भारी।
शोषक संत अनेत ही नेत सुशासक होत है लाकड़ मारी।
पंडित पोंग जो ढोंग धरे अरु तोंद फुलाय प्रवचन प्रचारी।
लाज दीं त्याग सुराज सजै अब काज बनाउ जी लाज हमारी।

-तऽ हम गृत्समद जी के कोसत रहनी हँ जे बेकारे उहाँ के रुई के उत्पादन कइनीं आ काठ के नोकदार सरूप दे के हमार इतिहास रचनी। अब जे हमरा रउवा पूछब कि उहां के कोड़ल-झोरल कइसे कइलें होखेब तऽ ई खुरपी के बियाह में हँसुआ के गीत हो जाई। हँ, कबो मौका लागी त खुरपीयो के धुर्छक आ हँसुओ के आरती उतारल जाई।

हर हईं त हम महादेव हईं, बल्कि नटराज महादेव आ साहित्य हईं त शिव हईं। रउवा वैयाकरण लोग के कहत एगो श्लोक सुनत होखब- 'नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपंचवारम, उद्धतुर्कामः समकादिसिद्धान एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम'। महावैयाकरण पाणिनी के तपस्या से जब भगवान शंकर प्रसन्न हो गईनीं, तब उहां के आपन डमरू बजवनीं। कए बेर, त चौदह बेर। इ चैदह बेर डमरू बजवला से महामुनि पाणिनी के चौदह गो सूत्र भेंटाइल, जेकरा माहेश्वर सूत्र कहल जाता। इहे माहेश्वर सूत्र उहां के व्याकरण 'अष्टाध्यायी' के आधार बनल आ कहे के चाहीं कि व्याकरण के धरती पर शब्दन आ पदन के बीज बोआइल। जेतना लोग आज ले भाषा आ ओकरा विज्ञान में शुद्धाशुद्ध के बकैती करत बा न, ई माहेश्वर ही सूत्र के चमत्कार हऽ। अब रउवा हमरा से पूछब कि- 'ऐ भाई हर, एह में तू एतना काहे छाँटत बाड़ अकरहर'। तऽ हमरो बात रउवा ठेठियाइले सुन लीं,-'ई बात रउवा पहुंच के बाहर'। माहेश्वर सूत्रे में पांचवा सूत्र 'ह य व र ट' में हम बानी, आ अंतिम चौदहवों में आपने उपस्थिति दगले बानीं- 'ह ल'। रउवा बकझक कऽ सकीलें कि पांचवां में त खाली 'ह' बा आ 'र' कहाँ गइल? ठीक बा हमहूँ थोड़ी देर खातिर मान लेत बानीं बाकिर चौदहवां में त रउवा साफे 'ह ल' देखत बानीं नू?

आ व्याकरणे के एगो सूत्र हऽ 'रलयोरऽभेदाः'। यानी 'र' आ 'ल' एक ही ह। मतलब चाहे कवनो शब्द में 'र' कहीं चाहे 'ल' बात बराबर बा। रउवा कवनो छोट बच्चा से जे बोल सकत बा, राम कहलवा के देखीं त। ऊ 'राम' ना कह के 'लाम' कही, एकदम कही। कवनो तोतराह (तोतराह भाई लोग बुरा मत मानीं) आदमी से भी 'राम' कहलवाईं। ऊ लाम ही कहिहन। बच्चा चाहे तोतराह भाई 'लाम लाम' ना कहस त एक दू तीन, हँ। कम पढ़ल लिखल लोग भी ईहे कही। रउवा बिचार के आ शोध कऽ के देखब, रउवा 'र' आ 'ल' के लीला भेंटाई। अब आईं पाँचवा सूत्र के 'ह' पर। 'ह' ए अइसन वर्ण बा जेकर प्रयोग एह सूत्र में पाणिनी महाशय दू बेर कइले बानीं। जे तरह भगवान शिव प्रलयंकर आ सृष्टि के विनाशक हईं, 'ह' भी उहे ह। रउवा कवनो अक्षर सङे एकरा जोड़ के (संधि कऽ के) देख लीं, ओ अक्षर के ना खा जाय त एक-दू-तीन। जइसे क में ह जोड़ेब त ख, ग में ह जोड़ेब त घ। जादे फेर में पड़े के जरूरत नइखे। जेतना अल्पप्राण वर्ण बा, ओह में 'ह' जाई त ऊ महाप्राण, महादेव हो जाई, एकरा से बढ़कर कोई ना। साँच पूछीं त हमरा नाम में 'ह' ओइसहीं नइखे। हम प्राण देहबो करीले आ प्राण लेहबो करीले। 'ह' दग्धाक्षर कहा ला, एही से बूझ लीं। बियाह आ सराध दुनूँ कराइलें। 'ह' अक्षर से कवनो काव्य वा महाकाव्य के आरम्भ कइल दोष मानल जाता। बियाह जनेव में हम अपना सब दोस्त लोग के सङे (परिहत, पेंढा, फाल, हरिष, जुआठ इत्यादि) वा अकेले कहीं ना कहीं रहबे करी लें।

व्याकरण के त छोड़ीं, हम काव्यो में 'हर्ह' धातु के रूप में बानीं- 'हरति सकल दोषा काव्य विश्रामदाता'। काव्यशास्त्री मम्मट त काव्य-प्रयोजन के प्रसंग में लिखबे कइलें, 'काव्यंयशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेत रक्षतये'। एह सूक्त में रउवा ध्यान से देखेब त 'शिव' के नाम मौजूद बा। 'हर' के माने शिव होला नू आ शिव त बड़ले बाड़ें अमंगल के नाश करेवाला। एह तरहे काव्यो में 'हर' के पर्याय जइसन उपस्थित होके हम भइनीं- अमंगलनाशक। हर माने हल माने खेती के औजार के तरहें हमार अस्तित्व हऽ आ आपन सभे अंग-उपांग साथे हम मंगल काज में से हो पूजित बानी। व्याकरण में हलन्त बानी।

एह तरहे हम बानी हर, हर-हर महादेव, हर-हर शंभो, सभे शास्त्र, व्याकरण आ साहित्य साथे खेती के बोझा उठावे वाला-हर, हल, हल, ह-ल आउर हलन्त। रउरा सभ कें, हरेक के-सत्यं शिवं सुंदरम।

***

आलेख

संध्या सिंह

भात

अब त घर में प्रेशरकुकर में भात बनता त माड़ निकलते नइखे। कुकर के भात नुकसान करेला। एगो त ऊ प्रेशर में बनेला त चाउर स्वाभाविक रूप से ना गलेला। दोसर, जब ई तसली में बनत रहे तब जऊन झाग होत रहे ओकरा के कलछुल से निकाल के फेंकल जात रहे मगर कुकर में ई ना निकलेला त इहे आजकल लोग में यूरिक एसिड के बहुत बड़ा कारण बनता।

आज हम भात (Boiled rice) के बारे में बात करे जातानी। भात चाउर के पानी में उबाल के बनावल जाला, ई सब केहू जानेला। पहिले के जमाना में भात तसली में बनत रहे। ओकरा में से माड़ पसावल जात रहे, जे कि भात से कहीं जादा पौष्टिक होला। आजकल रेस्टोरेंट में सूप के तौर पर इहे हजार-पाँच सौ में मिलता। खैर, अब त घर में प्रेशरकुकर में भात बनता त माड़ निकलते नइखे। कुकर के भात नुकसान करेला। एगो त ऊ प्रेशर में बनेला त चाउर स्वाभाविक रूप से ना गलेला। दोसर, जब ई तसली में बनत रहे तब जऊन झाग होत रहे ओकरा के कलछुल से निकाल के फेंकल जात रहे मगर कुकर में ई ना निकलेला त इहे आजकल लोग में यूरिक एसिड के बहुत बड़ा कारण बनता।

भात खाली चाउरे के ना बनेला, मकइयो के बनेला। चाउरो में कई तरह के चाउर होला आ सबकर भात के स्वाद अलग-अलग होला। मोटका चाउर, मेहिका चाउर, अरवा, उसीना, बासमती, सोनम, कतरनी, साठी अउर भी बहुत तरह के। दुनिया भर में चाउर के चालीस हजार से अधिक किसिम बा। भारत में बासमती के सबसे बढ़िया मानल जाला। समुद्री इलाका में चाउर के खूब पैदावार होला त ओहिजा के लोग चाउरे जादा खाला। का रउवा लोग के पता बा दाले-भात के सर्वश्रेष्ठ भोजन मानल गइल बा। स्टूडेंट लोग में त डीबीसी माने दाल-भात-चोखा खूब लोकप्रिय बा। तबीयत ढीला भइला पर खिंचड़ी भा माड़-भात खाये के सलाह पुरनिया लोग देला।

माड़-भात से मनोज भावुक जी के एगो शेर इयाद आइल -

अगर जो प्यार से मिल जा त माड़ो-भात खा लीले
मगर जो भाव ना होखे, मिठाई तीत लागेला

ई त बात भइल भोजपुरिया तेवर आ माड़-भात के। एगो भात त अइसन होला कि ओपर नून छीट के खा लीं, आत्मा तृप्त हो जाई। साठी के भात।

साठी चाउर नाम त सुनलही होखब। नामे से बुझाता कि साठे दिन में तइयार हो जाला। चाउर के ई किसिम अब लुप्त होखे के कगार पर बा। इ चाउर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश अउर हरियाणा के नदियन के जलग्रहण क्षेत्र में उगावल जाला। देखे में ई भूरा भा लाल रंग के मोट चाउर होला। एकरा के बनावे में बाकी सब चाउर से जादा समय लागेला बाकिर ई बहुत ही स्वास्थ्य वर्धक होला काहेकि पर्याप्त मात्रा में वसा, विटामिन, मिनरल आदि होला एहमें। स्वाद में मीठा होला। बच्चा लोग के विकास में अहम भूमिका निभावेला। पचे में आसान होला अउर वायु विकार पैदा ना होखे देला। एकर इतेमाल बिहार में छठ पूजा के प्रसाद के खीर बनावे में होला। इ थोड़ा चीपचिपा होला, एही से खिचड़ी या खीर में ही जादा इस्तेमाल होला। किसान भाई लोग के अब एकर पैदावार बढ़ावे के चाहीं काहेकि आजकल हेल्थ कंसिस लोग ब्राउन राइस के खूब डिमांड करता आ शहर में ई बहुत महंगा मिलता। इ चाउर शुगर से पीड़ित लोग खातिर भी बहुत

अच्छा बा। त सब मिला के एह चाउर के पैदावार पर किसान भाई के ध्यान देवे के चाहीं। एकरा तइयार होखे में भी समय बहुत कम लागेला, फर्टिलाइजर ना डलाला आ महंगा बिकइबो करेला त किसान भाई लोग के त लाभे लाभ बा।

भात कई तरह से बनेला एगो मड़ सटका भात होला जे कि पेट खराब भइला में खाए से पेट के आराम मिलेला। अगर साठी के बने त सोने पर सुहागा। दही के साथ खाईं आ स्वाद के साथे स्वास्थ्य लाभ लीं।

भात के मेजन भी बहुत बा जइसे राजमा-चावल, दाल-भात, कढ़ी-भात, दही-भात, तरकरी-भात, भात-चोखा, रसम-भात।

भात से जुड़ल बहुत सारा रस्म रिवाज भी होला जइसे कि बियाह में भतवान। जेह दिन बारात जाला ओह दिन भात दाल सब्जी बजका फुलवरा पापड़ घीउ के भोज दियाला भर गांव के। पहिले के जमाना में लइकी वाला लइका वालन से पूछत रहन कि "का चली कच्ची कि पक्की?" पक्की मतलब पूड़ी बुनिया कच्ची मतलब भात दाल बजका फुलवरा। आजकल के लइकन के इ बात पते ना होई।

भात से जुड़ल बहुत सारा रस्म रिवाज भी होला जइसे कि बियाह में भतवान। जेह दिन बारात जाला ओह दिन भात दाल सब्जी बजका फुलवरा पापड़ घीउ के भोज दियाला भर गांव के। पहिले के जमाना में लइकी वाला लइका वालन से पूछत रहन कि "का चली कच्ची कि पक्की?" पक्की मतलब पूड़ी बुनिया कच्ची मतलब भात दाल बजका फुलवरा। आजकल के लइकन के इ बात पते ना होई। एही तरे एगो अउर रिवाज बा। बियाह जब खतम हो जाला तब दूल्हा के परिवार से 5 आदमी मड़वा में आके खालें, ओह में भी भाते-दाल खियावल जाला मतलब की पक्की।

एही तरे एगो अउर रिवाज बा। बियाह जब खतम हो जाला तब दूल्हा के परिवार से 5 आदमी मड़वा में आके खालें, ओह में भी भाते-दाल खियावल जाला मतलब की पक्की।

हमनी के कई गो रीति-रिवाज जुड़ल बा भात से आ चाउर से लेकिन हमनी के थारी में भात आवेला कहाँ से तनी सोचीं!

अमीर-गरीब सब के अन्न देवे वाला हमनी के अन्नदाता के ह ? जी हां अन्नदाता ह लो-किसान भाई। उहे किसान भाई जे दिन-रात, बरखा-बूनी में, घाम-शीतलहरी में मेहनत करेलें ताकि हमनी के पेट आ पलेट खाली ना रहो। प्रकृति के मार, बाढ़-सुखार के दर्द उहे समझी जे किसान परिवार से होई। ई सब झेलला के बाद फसल खराब भइला पर किसान के अउर ओकरा परिवार के मऊवत के दिन सुरु हो जाला। किसान भूख से आत्महत्या तक करे लागेलन।

लेकिन एह देश में आ पूरा दुनिया में कुछ लोग अन्न बर्बाद करे से पहिले कुछु ना सोचेला। अन्न बर्बाद करे से पहिले ओह लोग के बारे में जरूर सोचे के चाहीं जेकरा दू जून के रोटी खातिर तड़पे के पड़ता।

मनोज भावुक जी के गीत के एह पंक्तियन के साथ अन्नदाता के आबाद रहे के कामना करत आपन बात खतम करत बानी -

नइखी माँगत दिन सोना के, आ चांदी के रात
बाकिर सभका थरिया में, होखे के चाहीं भात।
भूखमरी से मरे ना अब, भारत के कवनो लाल
अबकी आवे अइसन नयका साल,
सबका थाली में हो रोटी दाल।

नोट त केहू खाई नाँही, खाई आखिर रोटी
भूखे रही किसान त भावुक, कहाँ से रोटी होखी
जिनिगी बा तबले ही जबले, बा गेहूँ में बाल।
अबकी आवे अइसन...

***

आलेख

डॉ. महामाया प्रसाद विनोद

बिहार में स्वतंत्रता पूर्व किसान आंदोलन

एगो ऊ दिन रहे जब किसानन के दुर्दशा देख के समाजवादी-साम्यवादी विचार के लोग बिटुराए लागल। ई घटना बा स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व के। ओह समय नारा लागे 'कमाए लंगोटी वाला आ खाए धोती वाला' । एकरा बाद नारा लागे 'कमाने वाला खाएगा।' लंगोट वाला प्रतीक रहे किसान मजदूर के आ धोती वाला प्रतीक रहे जमीन मालिक, जमींदार, सामंतन के।

एगो युग रहे जब किसान माघ के पाला में ठिठुरत, कांपत, जेठ के दुपहरिया में तर तर चूअत पसेना से लथपथ, सावन-भादो के बरसात में भींजत, थरथरात खेतन में मेहनत करे बाकिर ओकरा नीमन दाना ना भेंटाए। ऊपजावे किसान आ ऊपज पर अधिकार होखे मलिकार, जमींदार आ सामंतन के। एगो ऊ दिन रहे जब किसानन के दुर्दशा देख के समाजवादी-साम्यवादी विचार के लोग बिटुराए लागल। ई घटना बा स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व के। ओह समय नारा लागे 'कमाए लंगोटी वाला आ खाए धोती वाला'। एकरा बाद नारा लागे 'कमाने वाला खाएगा।' लंगोट वाला प्रतीक रहे किसान मजदूर के आ धोती वाला प्रतीक रहे जमीन मालिक, जमींदार, सामंतन के। धीरे-धीरे किसानन के दुख देख के प्रगतिशील विचार के लोग बिटुराए लागल।

एगो समय आइल जब स्वामी सहजानंद सरस्वती किसान आंदोलन के अगुआई करे खातिर आगे अइलन। ई समय रहे 1927 के। एकरा पहिले 1917 में राजकुमार शुकुल के प्रयास से गाँधीजी के नेतृत्व में चम्पारण में भयंकर प्रताड़ना आ पीड़ा में डूबल किसानन के उबारे खातिर ऐतिहासिक आंदोलन भइल रहे जवना में एगो कठिन आ लमहर संघर्ष का बाद निलहा गोरा साहेब लोग से किसानन के निजात मिलल रहे। ओह आंदोलन में राजकुमार शुकुल का संगे गाँधी जी, राजेन्द्र बाबू, आचार्य कृपलानी, ब्रजकिशोर बाबू, रामनवमी बाबू, पत्रकार मुनीर आदि अगुआई कइले रहलें।

एगो समय आइल जब स्वामी सहजानंद सरस्वती किसान आंदोलन के अगुआई करे खातिर आगे अइलन। ई समय रहे 1927 के । एकरा पहिले 1917 में राजकुमार शुकुल के प्रयास से गाँधीजी के नेतृत्व में चम्पारण में भयंकर प्रताड़ना आ पीड़ा में डूबल किसानन के उबारे खातिर ऐतिहासिक आंदोलन भइल रहे जवना में एगो कठिन आ लमहर संघर्ष का बाद निलहा गोरा साहेब लोग से किसानन के निजात मिलल रहे । ओह आंदोलन में राजकुमार शुकुल का संगे गाँधी जी, राजेन्द्र बाबू, आचार्य कृपलानी, ब्रजकिशोर बाबू, रामनवमी बाबू, पत्रकार मुनीर आदि अगुआई कइले रहलें ।

जब सहजानंद सरस्वती किसानन के आंदोलन के नेतृत्व करे खातिर मैदान में अइनी त सबसे पहिले किसानन के अधिकार खातिर, ओकरा बेहतरी खातिर लोगन के संगठित कइनीं। तब के किसान आंदोलन सचमुच किसानन के हित खातिर होत रहे तब संगठन के अगुआई करत लोग के मन किसानन के दशा देख के पसीजत रहे। ऊ लोग जमींदार आ सामंतन के खिलाफ आपन परवाह ना कके किसानन

बिहार में किसान आंदोलन से एगो आउर प्रमुख व्यक्ति जुड़लन। राहुल सांकृत्यायन जी। बिहार के कोना-कोना में उहों का किसान आंदोलन के अलख जगवनी। किसानन के उत्थान खातिर लगातार लड़त रहलीं। सारण जिला के परसागढ़ मठ में रहत राहुल जी जमींदारन के खिलाफ किसानन के संगे मैदान में उतरलीं। अमवारी गाँव में जमींदारन के गुंडा लोग लाठी से उहाँ के सिर पर प्रहार कइल। खून के धार बह चलल। एह घटना पर हिन्दी भोजपुरी के जानल- मानल कवि साहित्यकार प्राचार्य मनोरंजन बाबू कविता में घटना पर क्षोभ व्यक्त कइलें ।

खातिर लाठी खाए जेल जाए, बड़-बड़ लोगन के कोप भाजन बने बाकिर आपन सिद्धान्त से एको डेग पीछे ना हटे। तब आंदोलन में तड़क-भड़क कम आ क्रांतिकारिता अधिका रहे। आज के किसान आंदोलन के रूप कुछ आउर लागत बा। लागता कि ऊ किसान ना कुछुओ आउर बाड़ें। पहिले के किसान आंदोलन के क्रम में एक बेर हमरा घर से कुछ दूरी पर लमहर किसान सभा के आयोजन भइल रहे आ ओह में बिटुराएल लोगन खातिर बड़-बड़ हंडा में अलुआ (शकरकंद) उवालल गइल रहे। आज के आंदोलन त एगो पिकनिक लागेला। आंदोलन के पीछे बिचौलियन आ समृद्ध व्यापारियन के हाथ लागेला ।

1927-28 में स्वामी सहजानंद सरस्वती किसान आंदोलन के नेव रखलें। बाद में किसान सभा के गठन भइल। ऊ समय रहे जब बिहार में काउन्सिल के गठन भइल रहे आ ओह में रहनीं राम दयालु सिंह, श्री कृष्ण सिंह, बलदेव सहाय आदि। काउन्सिल के सदस्य लोग काश्तकारी कानून में सुधार खातिर बेचैन रहें। सहजानंद सरस्वती के अध्यक्षता में विधिवत किसान सभा के गठन 1929 में भइल। स्वामी सहजानंद सरस्वती अध्यक्ष आ डॉ. श्री कृष्ण सिंह महामंत्री बनावल गइलें। आउर कुछ नेता लोग डिविजनल सेकेट्री बनावल गइले। आगे चल के किसान सभा से जयप्रकाश नारायण, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामनंदन मिश्र, राजेन्द्र बाबू, बलदेव सहाय, किशोरी प्रसन्न सिंह, मुगलकिशोर सिंह, अब्दुल वारी, यमुना कार्यो, अम्बिका प्रसाद बद्रीनारायण सिन्हा आदि बहुत लोग जुड़ल। पटना डिवीजन के सचिव बनावल गइलें अम्बिका प्रसाद आ तिरहुत डिवीजन के किशोरी प्रसन्न सिंह।

यद्यपि एह आंदोलनो में कुछ कांग्रेसी विचार धारा के लोग जमींदारन के तरफदारी करत किसानन से समझौता के प्रयास कइल। बाकिर समझौता किसानन के हक में ना देख

के किसान सभा के पुनर्गठन करे के निर्णय लिहल गइल। फेर 1934 में सहजानंद सरस्वती के अध्यक्षता में बिहार प्रांतीय किसान सभा के बइठक भइल। एकरा कार्यकारिणी में गंगा शरण सिंह आ बद्री नारायण सिंह के शामिल कइल गइल। एकर कार्यालय पटना में खोलल गइल आ गंगा शरण सिंह के एकरा सचिव के दायित्व दिहल गइल।

नव गठित समिति किसानन के हालत पर गया जाँच समिति के रपट किताब का रूप मं छपवावल। जमींदारन के खिलाफ किसानन के समस्यन के समाधान के माँग उठावल गइल। एकर अगिला तिसरका सम्मेलन गया में 1934 जुलाई में भइल, जवना में सरकार द्वारा ईख एक्ट ना बनवला पर असंतोष व्यक्त कइल गइल। धीरे-धीरे किसानन के मौलिक अधिकार खातिर माँग उठावल गइल जवना में मांग कइल गइल कि-

--जमीन पर किसानन के अधिकार होखे के चाहीं।
- बलुसाही दलदली, पर्वतीय जमीन पर मालगुजारी ना लागे के चाहीं।
- हरेक किसान के पाले कम-से-कम भरण-पोषण लाएक जमीन होखे के चाहीं ।
- टेनेन्सी कानून किसानन के हित में बने के चाहीं।

किसान आन्दोलन चलत रहल बाकिर जमींदारन आ भूपतियन के काम-धाम में कवनो विशेष अंतर ना आइल एकरा बाद जमींदारी प्रथा खमत करे खातिर एकजुट होके किसानन के लड़े खातिर आह्वान कइल गइल। जिला-जिला में सम्मेलन होत रहल। सिलाव में पटना जिला के किसान सभा के सम्मेलन में सहजानन्द सरस्वती जी किसान के भगवान के सही रूप बतावत कहलें कि किसान जवन फसल उपजावेलन ओह पर उनकरे अधिकार पहिले बा। एह से फसल के उपयोग करे के पहिले किसान आ उनकर बच्चन के बा। गया में 1934 में प्रदेश किसान सभा के दोसरका सम्मेलन भइल जवना के पुरूषोत्तम दास टंडन, खाँ अब्दुल गफ्फार खाँ जइसन लोग संबोधित कइल। समाजवादी लोगन के प्रभाव बढल आ जमींदारी प्रथा के खतम करे के माँग जोर पकड़लस।

बिहार में किसान आंदोलन से एगो आउर प्रमुख व्यक्ति जुड़लन। राहुल सांकृत्यायन जी। बिहार के कोना-कोना में उहों का किसान आंदोलन के अलख जगवनी। किसानन के उत्थान खातिर लगातार लड़त रहलीं। सारण जिला के परसागढ़ मठ में रहत राहुल जी जमींदारन के खिलाफ किसानन के संगे मैदान में उतरलीं। अमवारी गाँव में जमींदारन के गुंडा लोग लाठी से उहाँ के सिर पर प्रहार कइल। खून के धार बह चलल। एह घटना पर हिन्दी भोजपुरी के जानल- मानल कवि साहित्यकार प्राचार्य मनोरंजन बाबू कविता में घटना पर क्षोभ व्यक्त कइलें ।

***

आलेख

डॉ. गोपाल ठाकुर

नेपाल में किसान आंदोलन: एक संक्षिप्त संस्मरण

नेपाल के कम्युनिष्ट आंदोलन में किसान, विद्यार्थी आ सांस्कृतिक मोर्चा के जिला से केंद्र तक के नेतृत्व-पंक्ति में रहत अपना तालीम आ रूची के हिसाब से मुख्य रूप से भाषाविद आ गायक के रूप में स्थापित डॉ. गोपाल ठाकुर के जन्म मधेश प्रदेश, बारा जिला के सिम्रौनगढ़ नगरपालिका वार्ड नं. ८, कचोर्वा में १० जनवरी १०६२ ई. के दिन पिता श्री अफिमीलाल ठाकुर आ माता श्रीमती परमेश्वरी देवी के जेठ सुपुत्र के रूप में भइल बा। इहाँका त्रिभुवन विश्वविद्यालय से 'अ ग्रामर ऑभ भोजपुरी' विषयक शोधप्रबंध पर भाषाविज्ञान में विद्यावारिधि के उपाधि प्राप्त कइले बानी। इहाँका भोजपुरी भाषा, साहित्य तथा संगीत के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देले बानी। इहाँका मौलिक सर्जक आ रेडिओकर्मी का साथेसाथ अनुवादक, वैयाकरण, कोशकार, अनुसंधाता, संपादक आ पाठ्यपुस्तक लेखक हईं। वर्तमान समय में इहाँका भाषा आयोग के अध्यक्ष का रूप में आपन सेवा प्रदान कर रहल बानी। इहाँका स्वरचना का साथ-साथ सहलेखनो कइले बानी जे में स्वरचित का ओर अ ग्रामर ऑभ भोजपुरी (सन २०२१),जीवंत भोजपुरी मजबून (सन २०२२), जनता के गीत गावत रहेम (भोजपुरी जनगीतमाला, सन २०२२), भोजपुरी व्याकरण (जीवंत मजबून का साथे, २०७९) भोजपुरी सहज बर्तनी (२०७९) आ उत्पीड़ित मधेश आ भोजपुरी (शोधात्मक आलेखमाला, २०७९) शीर्षक कृति प्रकाशित बाड़ें स त सहलेखन का ओर भविष्य निधि (जनगीत, २०४२, हरिहर यादव के साथ), जय किसान (जनगीतमाला, २०४७, हरिहर यादव के साथ) प्रज्ञा भोजपुरी-भोजपुरी-नेपाली-अङ्रेजी शब्दकोश (गोपाल अश्क आदिनेश गुप्ता के साथ सहसंपादन) शीर्षक कृति प्रकाशित बाड़ें स। एकरा साथे-साथ इहाँका हमर भाषा भोजपुरी कक्षा १-५ आ ऐच्छिक भोजपुरीकक्षा ९-१० के पाठ्यक्रम आ पाठ्यपुस्तक के सहसंपादन आ सहलेखन कइले बानी त कक्षा ११-१२ के भोजपुरी पाठ्यक्रम निर्माण कइले बानी। प्रस्तुत आलेख नेपाल के किसान आंदोलन के दिशा आ दशा का बारे में इहाँका आपन श्रुति आ स्मृति के आधार पर तइआर कइले बानी। - **संपादक**

१९७१-७२ के करीब के बात होई। हमरे टोला के साधुबाबा (बाबूलाल यादव) एक दिन हमरा के इसारा से बोलौलें। निअरा पहुँचला पर एगो किताब देत कहलें, 'तनिका पढ़के सुना त।' तब हम इहे चउथा-पाँचवा क्लास में पढ़त होखेम। बाबा के आदेश पावते पढ़े लगनी। करीब आधा-पौन घंटा में ऊ किताब सुध गइल। बाद में फेर साधुबाबा पुछलें, 'कुछ समझले?' बाँकिर हमरा त ना अक चले ना बक। ऊ एह से कि ओह किताब में भाग-भगवान, राजा-महाराजा, राज्यसत्ता समूचा कुछ मानव सिर्जित कहल गइल रहे जे के हम अपना पूर्वजन से ईश्वरीय अंश से निर्मित सुनले रहनी। बाँकिर जे-जे तर्क परोसल गइल रहे, उहो मन के छुअत रहे। अंत में जवाब देनी, 'कुछ बुझनी, कुछ बाँकी बा।' साधुओ बाबा तनिका मुस्काके रह गइलें। बाद में ओह किताब क उलिट-पलिटके देखे लगनी। किताब के नाँव रहे मुक्ति-मार्ग आ लेखक के नाँव देखनी हरिहर यादव, कचोरवा, नेपाल यानी कि हमरे गाँव। तब हम हरिहरजी का बारे में जानेके चहनी। साधुबाबा कहलें कि हरिहरजी किसान आंदोलन के नेता रहलें। कुछ साल पहिले राजा द्वारा पंचायती व्यवस्था लेअइला पर जे लोग ना मानल ओह लोग के बंदी बनावल गइल। हरिहरजी देश छोड़के भारत में रहे लगनी।

तब हमरा तनिका इआद पड़े लागल। बाबुजी कबो-कबो रात में खाए का बेरा चर्चा करत रहनी, 'आज हरिहरजी से भेंट भइल रहल ह। आज कुछ ढेउआ-कउड़ी उनका के सहयोग कइनी ह। आज फलानावा पर बहुत खिसिआइल रहनी ह। आदि आदि ... ...।' ओह दिन सँझिआ खाए के बेरा बाबुजी से हरिहरजी का बारे में पुछनी। उनको से दबल जुबान में कुछ जानकारी मिलल। बाद में अपना बाबा का सङे बूढ़-पुरान लोग के सङत में कुछ बात पता चले लागल। कबो-कबो माइओ सुनावत रहली। कुल मिलाके हमरा जन्मधरती पर

भइल किसान आंदोलन का बारे में आ ओह आंदोलन के नेता हरिहरजी का बारे में सुने लगनी ओह आंदोलन के नारा का बारे में कुछ अइसन सुनेके मिलल–

'मन के नौ कर्जा दे, ना त गद्दी छोड़ दे। बैठ–बेगारी बंद कर। बटइआ हक कायम कर। हरौरी–जनौरी खारिज कर। रे ना, अब जी कह। आदि आदि।'

कबो–कबो टोला–मोहल्ला में बूढ़–पुरान लोग के मुँह से सुनी कि किसान आंदोलन में महाजन लोग अपने से तमसुक लेके नेता लोग किहाँ जाए आ किसान कार्यकर्ता लोग धधात धुनी में फेंक देवे। हमरा त कबो–कबो विश्वासे कइल मोस्किल हो जात रहे। कारण ई कि एतना निमन काम कइला पर भी ओइसन नेता लोग के देश में जेल में आ ना त देश बाहर शरणार्थी बनेके काहे पड़ल।

अइसनके उधेड़बुन में १९७८ में हम मैट्रिक पास कके १९७९ में अपने पढ़ल विद्यालय, श्री जय किसान माध्यमिक विद्यालय, धरहरी, रौतहट में किरानी के नौकरी करे लगनी। दू–तीन महीना बितलो ना रहे तब तक पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधान मंत्री शेख जुल्फिकार अली भुट्टो के ओतहाँ के सैनिक राष्ट्रपति जेनरल जिआउल हक फाँसी लटका देलें। ओह बात के लेके नेपाल में विद्यार्थी आनंदोलन उठ गइल आ राजा वीरेंद्र के जनमत–संग्रह के घोषणा करेके पड़ल। ओह जनमत–संग्रह के विषय रहे— निर्दलीय पंचायती व्यवस्था में क्रमिक सुधार कि ओकरा जगह पर बहुदलीय व्यवस्था?

जब ई घोषणा भइल तब जाके राजनीतिक पार्टी आ नेतन के खुलेआम घुमल सुरू भइल। धीरे–धीरे राजा के करिआ करतूत का बारे में जाने–सुने लगनी।

बहुदलीय व्यवस्था के पक्ष में जारी प्रचार–प्रसार अभियान में हमहु अपन बाँकी समय लगावत चले लागल रहीं। एही क्रम में गर्मी छुट्टी में घरे आइल रहीं कि हमरे गाँव में नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी के प्रचार सभा होई कहके एक दिन माइकिङो सुननी। बाद में इहो पता लागल कि ओह आमसभा में जनकवि हरिहर यादव भी संबोधन करिहेन।

आमसभा साँझ के मात्र सुरू भइल। हमहु उत्साहित होत कचोर्वा बाजार पर पहुँचनी। सभा में हमरा कल्पना में रहल हरिहर यादव के तस्वीर खोजते–खोजते कुछ देर बित गइल। जइसन कि हम सोचले रहीं, हरिहर यादव के भौतिक स्वरूप तनिका मोटझोंट, लालगड़ाका, चमकदार कपड़ा पहिरल आदमी होखेके चाहत रहे। बाँकिर उहाँ केहु के हम ओइसन व्यक्तित्व ना देखे सकनी। हम मने–मने उमेद पर पानी फेर लेनी। हमरा बुझा गइल हरिहरजी नाअइलन। ओतने में खादी के कुर्ता आ मदार्नी पेनल्ले एकजने अधेड़ आदमी हमरा नजर परल। ऊ कुछ नौजवान लोग के डाँटत रहस। कारण रहे लाउडस्पीकर के बैट्री। नौजवान लोग प्रचारे में बैट्री ओरवा देले रहे। आमसभा का बेरा लोग आइल रहे बेसी आ लाउडस्पीकर बैट्री बिना चलते ना रहे। आज के जइसन भगजोगनियो लेखा बिजली ओह बेरा हमरा गाँव भा एरिए में ना रहे। बाँकिर उनका के हम जानत ना रहीं। बाद में थाह भइल उहे हरिहर यादव रहस।

नाट कद, दुबर–पातर शरीर, बिलकुल साधारण लउकेवाला आदमी जनकवि हरिहर यादव होई, ई हमरा पतिआरे ना होत रहे। तइओ हम आमसभा के वक्ता लोग के संबोधन सुनते गइली। बाद में पलहा हरिहर यादव के भी आइल।

भोजपुरी सानल गाँवघर के हिंदी भाषा में ऊ बोलल सुरू कइलन। बीच–बीच में कथा, परतोक, मुहाबरा आ गीत सुनावत अपन संबोधन के अगाड़ी बढ़ौलन। उनकर संबोधन से श्रोता के भीड़ बढ़ते गइल। ऊ पंचतंत्र के बकुला आ कोंकड़ा के कथा सुनाके सामंतबाद आ ओकर नायक राजा आ राजतंत्र के गरीब श्रमजीवी सर्वहारा वर्ग एकदिन सर्वनाश करिएके छोड़ी, ई पूरा ठोक बजाके कहलन।

ओहीलेखा ओह क्रम में ऊ जातीयता, छुआछुत आ वर्गीय चेतना से ओतप्रोत रहल गीतो समावेश रहल एगो छोट कथा एहलेखा प्रस्तुत कइले रहसः

कौनो गाँव में सेढ़ुमल नाम के एकजने पंडित जी रहत रहस। ऊ सामंत, जमींदार आ पुरोहित सबकुछ रहस। उनके जानाजुटी के रूप में बिपत महरा चमारो ओही गाँव में रहस। फगुआ बितते गहुँ के कटनी आ दउनी होए लागल। सेढ़ुमल पंडित जी के भी गहुँ काट–दाँके बिपत महरा बेरी, ठेक आ कोठी भरके पंडीजी के घर भर देलन। कुछे दिन में लगेपास में सिग्रौनगढ़ में लागेवाला रामनवमी के इसरा मेला आइल। मेला देखे बिपत महरा के घर में भी कुछ कुटुम लोग आइल। कर–कुटुम के सत्कार करे खातिर ऊ पंडीजी किहाँ गहूँ माङे अइलन। बाँकिर कोठी–डेहड़ी, ठेक–बेरी में सइँतल गहूँ शास्त्रसम्मत विचार से शूद्र के पहिले ना देवेके चाहीं कहके पंडीजी माईराम के सलाह से बिपत महरा के खालिए हाँथे लौटे पर मजबूर कर देलन। एह प्रसङ के हरिहरजी आपन गीत में एहलेखा प्रस्तुत कइले रहसः

ई त हउअन गहुँआ देवता शूद्र के घर में ना जइहेन
जब रहिहन त विप्र का घरे बेरी-कोठी मुना जइहेन

बेचारा बिपत के बिपते पर गइल। निराश होके घरे लौट गइलन। कुछ दिन का बाद जेठ में बिरनिआ पानी परल। किसान लोग हरबैल लेके खेते पहुँचल। पंडितो जी बिपत के बोलावे अइलन। बाँकिर बिपत के घर से ऊ बेमार बाड़न कहके पंडीजी के खबर मिलल। दोसरो बेर ओहीलेखा भइल। तीसरका बेर बरखा भइला पर त आषाढ़ आ गइल रहे। बाँकिर बिपत बेमारिए रहे। पंडीजी के खेत पर्तीए रहे। आखिर में पंडीजी के अपने जाएके परल। ऊ बिपत के हर जोते खातिर बहुते जोर कसलन। बिपतो बड़ा बुद्धिमानी से जवाब देलकः

हर त हउअन साक्षात महादेव शूद्र के कान. पर ना चढ़िहेन
जब चढ़िहेन त विप्र के कान पर ना त चुली में जर जइहेन

बाद में पंडित जी आपन गलती सकरलन आ बिपतो हर जोतल सुरू क देलक।

ओह दिन के ऊ भाषण आ मुक्ति मार्ग के लिखाई से हम फेर दोसर काल्पनिक दुनिआ में भूला गइनी। हमर कल्पना में अब हरिहर यादव निश्चिते एकजने उच्च शिक्षा हासिल कइल प्रज्ञिक व्यक्तित्व होखेके चाहत रहे। बाँकिर जब उनका से साक्षात्कार भइल आ प्रत्यक्ष बुझत गइनी त हमर उहो कल्पना निराधारे साबित भइल। आखिर में हरिहर यादव त औपचारिक शिक्षा में पहुँचलही ना रहस।

काहे कि ओह बेरा आम लोग खातिर शिक्षा त मनाहिए जइसन रहे। बहुत नज्दीक में स्कूल रहे सीमावर्ती भारतीय बाजार घोड़ासहन में। बड़ा-बड़ा धनिक-धरवइआ के लड़िका लोग ओतहीं पढ़े जाए। एने पढ़े के गँवही तरीका रहे पाट-शिक्षा। गाँव के खाता-पीता साव-महाजन लोग के गोठउली-भुसउली में भुइएँ में अधिक से अधिक बीताभर ऊँच पाट भरात रहे। ओकरा के तनिका मेहीन ढङ से बराबर कइल जात रहे। बाद में गेलआिवल जात रहे। ओह समय के अनुभवी बूढ़-पुरान लोग के अनुसार गेलआिौला पर पाट हो जात रहे ऐनक के समान। लोग सुनावेलन ओह पर मुँह लउकत रहे। गाबिस के भाठा बनावल जात रहे। ओही भाठा से पाट पर लिखात रहे। पटवाड़ी के लड़िका भइला के नाते तनिका छटहेड़ भइला पर हरिहरजी अपने घरे पाट भरके पढ़े लगलन। तत्कालीन प्रचलन के अनुसार हरिहरजी के शैक्षिक योग्यता में नाँव-गाँव, चिट्ठी-पतरी लिखल-पढ़ल रहे। गणित के क्षेत्र में पहड़ा-बिटकहड़ा, सवइआ, डेढ़ा, अढ़इआ, रुआ, पौना, पसेरी पढ़के ओही अनुसार के हिसाब-किताब यानी अंकगणित के ज्ञान रहे उनका लगे। बाँकिर आजीवन जनपाठशाला में एगो कुशल शिक्षार्थी का रूप में अनुभव के शिक्षा लेते रह गइल रहस हरिहर यादव।

जनमत-संग्रह में त बहुदल के जीत नसीब ना भइल, बाँकिर राजनीतिक दल अपना नाँव से पहिले 'पुराना' भा 'प्रतिबंधित' शब्द जोड़के गतिविधि सुरू करे लागल रहे। बाँकिर हरिहरजी फेर शरणार्थी के जीवन में लौट गइलन। हमरो प्राथमिक शिक्षक के स्थायी नौकरी मिल गइल रौतहटे में। एकरा बावजूद गाँव के नागेंद्र यादव, परमानंद साह आ बतहु यादव के अनुरोध पर हम चोरी-चूपे हरिहरजी से भेंट करे लगनी। उनका राजनीतिक-स्कूल के विद्यार्थी बन गइनी, पार्टी के कार्यकर्ता बन गइनी।एह दौरान उनकर विभिन्न व्यक्तित्व से परिचित होत गइनी। हरिहर यादव एगो कुशल किसान नेता, जनकवि, जनगायक आ कुशल राजनीतिक प्रशिक्षक रहनी। लिखे-गावे के सौख त हमरो में रहे। हरिहर यादव के सान्निध्य में शारीरिक-सौंदर्य आ अध्यात्मिक स्तुति का जगे हमरो लेखन आ गायन के दिशा श्रम-सौंदर्य आ द्वंद्वात्मक भौतिकवादी यथार्थवाद का ओर मुड़ गइल। एह क्रम में ओ समय के हमनी के गाँव पंचायत के मुखिआ के शोषण के तरीका बड़ा अजीब रहे। देह पर सादगी, चेहरा पर अभिमान आ बोली-वचन आदमी अनुसार के मिसरी से मीठ, इमली से खट्टा आ नुनो से बेसी नुनछराह रहे। फलतः ऊ सरकारी बचत-बखारी से लेके सिफारिसनामा घूस में घर-खेत तक लिखाके भी बहुते भलादमी के जीवन जिअत रहे। आंदोलन में आवे से पहिले हमहुँ उनका के आपन आदर्श मान रहीं। बाँकिर उनका असली बेहवार से परिचित हो चुकल रहीं जे में आंदोलन से जुड़ाव हमरा में साहस पैदा चर चुकल। लिख देनी एगो नाटक 'मुखिआ जी चोर कइसे' आ अपने बाजार पर सानदार प्रदर्शनो भइल। एह नाटक में हरिहरजी के परसादी मिलल रहे एगो गीत-

हम त मुखिआ बानी गाँव के भइआ सब से इमनदार।। हम०।।

विधवा-निर्बल के करीं भलाई चाहे चुए पसेना
परोपकार के पथ से भइआ पिछे कभी हटी ना
अइसन हिरदा के उदार भइआ सब से इमनदार।। हम०।।

सीधा-सादा से कबुलियतनामा, बचत-बखारी पचइनी जमा
का करी केहू उपरवाला, कागज में बा टोटल गाला
भेषभूषा से सीधा-सादा, चटकी में होसिआर भइआ सब से इमनदार।। हम०।।

बउआ हमर उत्तराधिकारी, छप्पनछुड़ी तेज कटारी
तस्कर-जुवाड़ी युवक के बइसाखी मारग बतावनहार भइआ सब से इमनदार।। हम०।।

अखिल नेपाल किसान संघ के बारा जिला सम्मेलन १९८४ में संपन्न कइनी स। सम्मेलन में राजा के भूमि सुधार के जगे क्रांतिकारी भूमि सुधार, कम से कम चार किलो बनिहारी, पंचायती के खारिजी आ न्यूनतम रूप में बहुदलीय व्यवस्था के पुनः स्थापना, जनता पर लागल ऋण के माफी-मिनहा, जनता से उठावल बचत फिर्ता जइसन राजनीतिक प्रस्ताव का साथे भाषिक प्रस्ताव में हिंदी के दोसरका राष्ट्रभाषा आ विकास-निर्माण के क्षेत्र में हुलाकी सड़क के पक्की राजमार्ग में बदलाव के प्रस्ताव पास कइनी स। उहे सम्मेलन हमे अखिल नेपाल किसान संघ के

बारा जिला समिति के सचिव चुनलख।

सम्मेलन के दस्तावेज नियमतः काठमाड़ो केन्द्रीय कार्यालय लेके गइल रहनी। पता चलल कि सम्मेलने के बेरा मूल कॉपी नेता लोग काठमाड़ो लेके चल गइल रहे लोग। अतः अपना लगे रहल प्रतिलिपि लेके घरे अइनी। बाँकिर ऊ दस्तावेज ओह बेरा घरे राखल खतरा से खाली ना रहे। ओही दस्तावेज के फेर से भारत में पहुँचावे खातिर अपना घरे (कचोर्वा) से हरिहरजी के आश्रयस्थल (पूर्वी चंपारण के बनकटवा) जाए के गाँव कमिटी के बइठक में योजना बनल। बाँकिर जे ओह बेरा गाँव कमिटी के नेता रहे, उहे एकर सूचना पुलिस के दे चुकल रहे। फलतः सेमरवनगढ़ से आगे बढ़े के क्रम में उहाँ के थानदार बतहु यादव सहित गिरफ्तार कर लेलस।

बड़ा गजब के अनुभवो कइनी पुलिस हिरासत में। दस्तावेज के भाषा हिंदी रहे जेकरा कारण से भारतपरस्त कहके यातना देलन स। कहीं-कहीं पर नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी लिखाइल रहे जेकरा कारण के चीनपरस्त कहके भी यातना देलन स। अंचलाधीश कार्यालय में बयान का बेरा के अनुभव आउरो दिलचस्प रहल। हम काठमाड़ो से आई. ए. के परीक्षा देके आइल रहनी आ शिक्षक त रहबे कइनी। हमरा से जब पेशा आ शैक्षिक योग्यता पुछलन स आ हम बतइनी त बहुते डपेटत एगो पुलिस अधिकारी कहलस, 'मूर्ख! पढ़-लिखके राजनीतिए मिलल ह करेके?' एहीतरे बतहु यादव से फेर ओकर काम आ पढ़ाई के बारे में पुछलन स। ओकर जवाब रहल, 'जी, हम आठ क्लास में पढ़िले, विद्यार्थी बानी।' फेर ओकरो के उहे पुलिस अधिकारी कहलस, 'मूर्ख! पढ़ले-लिखले कुछ ना आ चल देले राजनीति में?'

एकरा बाद बतहु यादव ६ महीना १० दिन में आ हम ७ महीना २१ दिन में जेल से बाहर अइनी। बतहु यादव के स्कूल से निकाला होखेके पड़ल आ हमरा नौकरी से। बाँकिर हमनी दूनू जने में ई दृढ़ता आउर बढ़ गइल कि पंचायती व्यवस्था आ राजतंत्र जब तक बा आम जनता के कल्याण नइखे। कम्युनिष्ट आंदोलन के प्रति हमनी के लगाव आउर मजबूत होत गइल। हरिहर यादव के सान्निध्य हमनी के चरित्र-निर्माण खातिर नया जनवादी सांस्कृतिक पाठशाला सावित भइल।
एह क्रम में हरिहर यादव से राजनीतिक क्लास के दौरान जानकारी मिलत गइल। नेपाल के तत्कालीन नारायणी अंचल में आ फिलहाल के मधेश प्रदेश में रहल बारा आ रौतहट में भइल किसान आंदोलन का बारे में विस्तृत जाने के मिलल। भारत में १९४७ में आजादी मिलला के बाद नेपाल में राणाशाही संकट में त आइए गइल रहे। प्रतिबंधित रूप में १९४८ के आसपास नेपाली काँग्रेस के आ १९४९ में नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी के गठन हो चुकल रहे। १९५०-५१ में नेपाली काँग्रेस के नेतृत्व में सशस्त्र क्रांति के आह्वान भइल। हमरा गाँव के दूजने नेता भागवत यादव आ हरिहर यादव के नेतृत्व में बारा-रौतहट में क्रांति चलत रहे। हरिहरजी से सुनल अनुसार उनके नेतृत्व में कचोर्वा थाना पर कब्जा भइल रहे। बाँकिर दिल्ली में राजा-राणा-काँग्रेस के बीच में सम्झौता होके क्रांति रोका गइल। एह विषय के लेके नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी त विरोध में रहले रहे, नेपाली काँग्रेस के भी बहुतो लड़ाका लोग हथिआर डाले के ना मनले जिनका पर दमनो भइल। एही क्रम में बारा-रौतहट में हरिहर यादव सहित कुछ लोग नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी में समाहित हो गइलन।

ओह बेरा के अर्थतंत्र मूलतः कृषि पर आधारित रहे कुछ मात्रात्मक बदलाव का बादो आजो हालत उहे बा।

जमीन का व्यवस्थापन का संबंध में अगर देखल जाओ त ए भारतीय उप-महाद्वीप में जब कृषि व्यवस्था के जनम भइल,आ कृषि व्यवस्था के सुरुआत भइला का बाद में खास कके सामंती प्रथा जब आइल,जेकरा के बुझेवाला हिसाब से जमींदारी प्रथा भी कहल जा सकता,त मुठीभर लोग का लगे एतना जमीन रहे कि सारा जमीन सय में पाँच प्रतिशत का लगे रहे आ सारा जमीन के मालिक ऊ लोग रहे। बाँकी पंचानबे प्रतिशत लोग ओही जमीन पर आश्रित होके, काम कके, मजदूरा के रूप में, जानाजुटी का रूप में काम करे के अवस्था रहे।यानी सय में पंचानबे लोग जमीन के मालिकत्व से बाहर रहे। नतिजा ई होखे कि एक तरफ एक टुकड़ा जमीन अगर रहित त हम ओ में काम करके कुछ उबजाके खइती कहके पंचानबे प्रतिशत लोग के एक तरफ आस रहे, त दोसरा तरफ जमीन उब्जावे ना सकला के चल्ते बिगहा के बिगहा जमीन पर्ती रह जाए।

राणाशाही प्रथा के अंतिम काल तक आ राणाशाही खतम भइला के कुछ काल तक खास कके राजा महेंद्र के भूमि सुधार लागू कइला तक के ई अवस्था रहे अपना देश में,मधेश में। ओह बेरा जमीन के कमी का चल्ते एक तरफ लोग भूखे मरे त बेसी जमीनवाला लोग के जमीन पर्ता रहला का चल्ते उत्पादन ना होखे। त ओह बेरा जब कम्युनिष्ट पार्टी के जनवर्गीय संगठन अखिल नेपाल किसान संघ के १९५१-५२ में स्थापना भइल त १९५२, १९५४ आ १९५६ बार-बार किसान आंदोलन देश में भइल जे बारा-रौतहट में उफान पर रहे। ओ सुरुआती किसान आंदोलन के नारा रहे कि ब्याज कम कर,मन के नौ करजा दे ना त गद्दी छोड़ दे। भइआ महाजन हो तोरा खेतवा में आधा हमार बा,तोरा धनवा में आधा हमार बा। बैठ-बेगारी बंद कर, हरौरी-जनौरी खारीज कर। बटइआ हक कायम कर।

आंदोलन में ऊर्जा भरे खातिर ओह बेरा हरिहर यादव के ई किसान गीत बहुते मसहुर रहल आ आजो लोग के जुबान पर बा-

हँसुआ-हँथौड़ा के चिनब्रऽ किसानावाँ,
ललका निसानावाँ ना।

ओ में ललका सलाम, लेवे मुठिआ के तान
देखके सामंत लोगवा करेला रोदनवाँ,
ललका०

भइले रूस-चीन आजाद, करके सामंतन के बाद
उहवाँ गावे जनता खुसिआ के गानावा,
ललका०

अब ना चलिहें बरिआई, एतहुँ धन-धरती बँटाई
गरीबवा एतहु गाई खुसिआ के गानावाँ,
ललका०

कहे हरिहर गाई, एक दिन एतहु बारी आई
कम्युनिस्ट साँचे करिहें एतहु सपनवाँ,

ललका०

१९५४-५५ के दौरान खास कके मातृका सरकार का बेर बटइआ हक के कानूनी करार देहल गइल। एह संदर्भ में हरिहरजी के किसान गीत आइल जे लोग के जुबान पर अबो सुनेके मिलेला-

हिँस्सा लागी हिँस्सा लागी सपना सुनत रहीं
सेहो विधि अँखिआ देखावले रेकी।

नयका कानुनवा में बँटइआ हकवा कायम भइले
सेहो सुनि सामंत डेराए नु रेकी।

जेकरा बाटे जादा खेत कोठवा-मकानावा हो
सेहो सुनी अन-पानी त्यागे नु रेकी।

जनि रोअ जनि झँखऽ करऽ ना भोजनिआ हो
खाएभर के तोहरो के दिआई नु रेकी।

फेर १९५६ साल में कागज-फाटा किसान आंदोलन भइल हरिहर यादव के अगुवाई में। कचोर्वा बाजार पर धुनी बरत रहे। जाली तमसुक ओही में जरत रहे। बड़ा-बड़ा साव-महाजन लोग अपने काँख में जाँतके तमसुक के मोटड़ी लेके जात रहे। आंदोलनकारी लोग मोटड़ी के धुनी में फेंक देत रहे। एह क्रम में रौतहट के चौधरी बासुदेव-रामस्वरूप यादव के निवेदन पर सरमुजवा से आंदोलनकारिअन के गिरफ्तारी भइल। हरिहर यादव करीब अढ़ाई-बरीस गौर जेल में रहलन। एह दौरान किसानमारा जमींदारन का साथ साथ ओह लोग के कारिन्दन में एगो उमङ पैदा हो गइल रहे। लागल लोग छेड़खानी करे-

हरिहर जरिए के लमेटी, करे मिटिन के खेती
अब त परल बाड़न चौधरी के झउर में
फुलत बाड़न गउर में ना।

जब ई बात हरिहरजी के कान में पड़ल, उनको जवाब आइल-

सामंत तोरा देहिआ पर मांस बढ़ल जाता
हरिहरजी के जुतवा में नाल ठोकाता।

अइसन किसिम से कानून ना मानेवाला लोग के विरुद्ध में किसान लोग संघर्ष कइले रहे आ आंदोलन पर दमनो भइल रहे। अइसनके आंदोलन से डेराके में राजा महेंद्र १९६० में राजनीतिक दल के प्रतिबंधित कर देलन। धीरे-धीरे अर्थतंत्र में एगो बढ़त जनसंख्या आ दोसरा तरफ सामंत लोग के दिमाग में जवन एगो भय उत्पन्न भइल ओकरा चल्ते१९६३ में भूमि सुधार ऐन लेआके राजा महेंद्र भूमि सुधार लागू कइलन। हालाकि ऊ पूरा कारगर ना रहल बाँकिर जेतने कारगर रहल ओतने के हिसाब से ओकर अनेक कमी-कमजोरी के बावजूद मोहियानी हक कायम भइला के चल्ते जमीन के जवन मालिकत्व के सवाल रहे ऊ थोड़ा-सा समाधान होखे के दिशा में गइल। बाँकिर जमीन ओहू बेरा कसके नुका लेहल गइल। बड़का-बड़का सामंत-जमींदारन के परिवार के सदस्य आ कर-कुटुम के बात के करो, नौकर-चाकर आ कुत्ता-बिलाई का नाँवे फर्जी रजिस्ट्रेसन पास करा के भूमि सुधार के चक्मा देत जमीन नुकइले रहलन स। बाँकिर जब ओ लोग के ई भय भइल कि अब नुकइला से काम ना चली त ऊ लोग धीरे-धीरे आपन जमीन बेंचे लागल। बेंचके ओकरा के पुँजीकरण कर देलख।

बाँकिर किसान आंदोलन रूकल ना। १९९० में नेपाली काँग्रेस आ संयुक्त बाम मोर्चा के नेतृत्व में संयुक्त आंदोलन सुरू भइल। पंचायती व्यवस्था के अवसान आ संवैधानिक राजतंत्रात्मक संसदीय व्यवस्था के पुनर्बहाली भइल। ओह आंदोलन में हम संयुक्त बाम मोर्चा के बारा जिला समिति के सदस्य के भूमिका में रहनी। ओकरे कुछ दिन के बाद २०वाँ ईसवी शताब्दी के अंत आ २१ वाँ शताब्दी के सुरुआत होते-होते मोहियानी हकवाला जमीन पर रहल द्वैध स्वामित्व के सरकार ५०-५० प्रतिशत लेके भा देके अंत कर चुकल जेकरा चल्ते आज आधा से बेसी निर्जथिआ लोग कुछ ना कुछ जमीन के मालिक हो चुकल बा।

बाँकिर ई एहीतरे नइखे भइल आ पूरा नइखे भइल। एकरा खातिर पंचायत काल से लेके आ जनयुद्ध काल तक हजारो के खुन-पसेना बहल बा। दस बरीस के जनयुद्ध आ जनविद्रोह के बल पर २००८ में राजतंत्र के विधिवत अंत होके देश में संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र कायम होके कार्यान्वयन में बा। बाँकिर कम्युनिष्ट के नाम पर पूँजीवादी चरित्र अंगीकार करेवाला कुछ लोग का चल्ते नेपाल में क्रांतिकारी भूमि सुधार नइखे होखे सकल त अब अप्रत्यासित जनसंख्या वृद्धि आ राज्य का तरफ से असमान जनसंख्या वितरण के नीति के चल्ते किसान आंदोलन के रूपो विकृत हो चुकल बा।आज के अवस्था में ऊ किसान आंदोलन जे बा, उहो एगो नया मोड़ ले लेलक।अगर बिना नुकावल,छिपावल,चोरावल कहल जाए त जे एक चटाई जमीन जिनगी में कहिओ नइखे देखले ऊ लोग किसान के नेता हो गइल बा। फलतः अब सब से चुनउती के विषय हो गइल बा भूमि के व्यवस्थापन। आज ई देखल जा रहल बा कि भूमि के बढ़ियाँ व्यवस्थापन ना भइला के चल्ते हमनी के देश में अब भूमि बँट गइल छोट-छोट कित्ता में। ओ में अब व्यवसायिक हिसाब से खेती कइल संभव नइखे।त दोसर बात बा कि भूमि व्यवस्थापन के बाद अगर कहल जाओ त जवना हिसाब से ही भूमि के व्यवस्थापन बा ओही हिसाब में अगर आदमी खेती करेके चाहे त ओ से पहिले खेती करे खातिर जौन तकनीकी प्रयोग कर रहल बानी ऊ बिल्कुल परंपरागत बा।

पहिले गोबर पटावल जात रहे, राख पटावल जात रहे।आज ओ सब जगह पर जौना बेरा लोग के ज्ञान ना रहे,या लोग चाहत ना रहे,ओह बेरा हमनी के देखल बात बा कि बोरा के बोरा खाद नेपाल सरकार विदेश से लेआके लोग के देत रहे। केहू कहे जे हमरा पाँच किलो चाहीं। त साझा संस्था के हाकिम लोग कहे- 'हय ! पाँच किलो से होई? बीस किलो लेजा, पच्चीस किलो लेजा।' परिणामतः प्रशस्त रूप से अकस्मात एगो नाटकीय ढङ से ऊ लोग उपज बढ़ावल लोग के देखइलक। बाँकिर ओ रासायनिक खाद के प्रचलन का बाद अनेक किसिम के रोग-व्याध भी देखाई पड़ल। ओकरा खातिर फेर विषादि के प्रयोग भइल। आज खाद आ विषादि के चल्ते जमीन के जौन उर्बरा शक्ति बा ऊ ह्रास हो गइल।ओकरा कारण भी जमीन ठीक ढङ से नइखे उबज रहल। बाँकिर समय पर जरुरत अनुसार के खाद आ बीज के मिललो मुस्किल बा। तिसरका देश से आवत नइखे आ भारत

से लेअइला पर सिमाना पर दूनू तरफ के पुलिस प्रशासन के बेरहम दमन सहेके पड़ता। ओकरे जवरे-जवरे आइल बात बा पानी। जब हमनीका पानी के बात करतानी,त ई मधेश,इहाँ के तथाकथित अपना के दौरा-सुरुवाल में आ खस भाषा में के नेपाली कहेवाला देश विरोधी लोग के एगो उपनिवेश बनके रह गइल बा। पानी के बात अगर कहल जाओ त गजरा-मुरई के भाव में गंडकी बेंचा गइल,कोशी बेंचा गइल। हमनीका देखतानी भोजपुरिआ क्षेत्र में पर्सा,बारा आ रौतहट जिला के सिंचाई करे खातिर १९६४-६५ से सुरू भइल नेपाल पूर्वी नहर जौना के नारायणी अंचल सिंचाई विकास आयोजना के नाम से १९७२ के आसपास भारत सरकार नेपाल सरकार के हस्तांतरित कइलक त बनल नहर बाँकिर ओ में पानी नइखे। पानी ए से नइखे कि समूचा पानी भारत के बेंच देहल गइल। आजअइसनो स्थिति बा जे कौनो कौनो जगह पर त ओ नहर से दक्खिन पाँच सौ मीटर भी नेपाली भूमि नइखे। आ जौन एक-दू आना पानी नेपाल के मिलेवाला भइल,त नहर खनाइल,जमीन बरबाद हो गइल,बाँकिर पानी नइखे। आ ओकर विकल्प के रूप में फेर से संचाई के कौनो व्यवस्था करेके राज्य के अभीन तक ले सकारात्मक सोच नइखे देखल गइल।

अब बिआ का संदर्भ में आइल हाईब्रीड जेएक बेर उब्जा सकतानी। दोहराके फेर अपने ओइसनके बिआ घर में नइखीं राख सकत। त अपने के ऊ जौन बिआ एसो देलख,ओही कंपनी का लगे जाके फेर दोसर नया बिआ माडेके परी। आ ओकरा जौरे-जौरे फेर विषादि के प्रयोग ओ में जादे चाहीं। ऊ बिआ जे लगाएम त ओ में जादा कॉस्ट जादा खाद के जरूरत बा, पानी के जरूरत बा आ जादा से जादा विषादि के जरूरत बा। जेकरा चल्ते एसो रउआ एक कट्ठा में एक किलो विषादि के प्रयोग कइनी,पाँच किलो खाद के प्रयोग कइनी त अगिला साल अपने के दस किलो खाद आ दू किलो विषादि के प्रयोग करेके परी।जेकरा चल्ते ऊ जमीन अब बंजर होत जा रहल बा आ हमनीका आर्थिक रूप से ओइसन लूटेरा कंपनी सब के उपर आश्रित हो गइनी। हमनी के स्वतंत्रता छीना गइल। हमनी के स्वाधीनता छीना गइल। हमनी के खाद्य संप्रभूता छीना गइल। ई सब कइला का बाद भी रउआ अगर कुछ उबजावतानी,त अपने के जौन उबजता,ओकर मूल्य एतना कम बा कि अपने जौन लगा चुकल बानी लगानी, ऊ लगानी अपने के फिर्ता ना होई।

ई विश्व पूँजीवादी साम्राज्यवादी लूटेरन के अधिकार में रहल अइसन मल्टी-नेशनल कंपनी के खाद, बिआ आ विषादि का चल्ते लोग एतना कंगाल हो गइल कि बहुतो देशन में आत्महत्या हो रहल बा। एकर सीधा माने ई भइल कि हमनी आपन सबकूछ छोड़ दीं। खेती छोड़ दीं, टुकुर-टुकुर ताकत रहीं आ ई विश्व साम्राज्यवादी लोग के द्वारा उबजावल गइल सामान हमनीका प्रयोग करत रहीं। ओकर कठपुतली का रूप में हमनी कमात रहीं।

एकरा साथे इहो समस्या बा कि सारा सब खर्चा-बर्चा लगाके रउआ कुछ उबजा लेनी त ओकर भंडारन के कवनो व्यवस्था नइखे। ओकर नतिजा बा कि ई लूटेरन लोग जाले अपने के उपज अपने के घर में रही,त ओकर भाव रही गजरा केआ अपने के घर में से ऊ जब किन ली,ओकरा बाद में ओकर भाव हो जाई सोना के। त एकरा खातिर, लंबा समय तक ले भंडारन करे खातिर कौनो जगह पर भंडारन के सुविधा नइखे।कहीं-कहीं अगर ठंढाघर लोग बनवले बाटे त उहाँ अगर आलू के बिआ एसो रखाता आ अगिला साल निकलता त ऊ आलू के बिआ सड़ जाता ओतही। ओही तरह से आउरी चीज आ खास करके साग-सब्जी के संदर्भ में अगर कहल जाए त ऊ त आज रउआ अगर काट लेतानी भा खेत से उखाड़ लेतानी त बिहान ऊ कामे ना लागी। एह से कौनो भावे अपने के बेंच देवेके परी।

कहे के मतलब ई बा कि राज्य किसान लोग के प्रति, कृषि अर्थतंत्र के प्रति अब तक इमानदार नइखे देखल गइल। परिणाम ई बा कि समय पर उचित समर्थन मूल्य निर्धारण में भी समस्या देखल जाता। त ए सब के पछाड़ी के अगर कारण हमनीका देखेम त जे कहिओ हँथौड़ी देखले नइखे ऊ मजदूर के नेता बा आ जे कहिओ खेत नइखे देखले, हर नइखे देखले ऊ किसान के नेता बा। इहे समस्या बा कि आज काठमांडू के सड़क पर सुकुमबासी लोग कभी नारा-जुलूस लेके आवता त हरेक पार्टी के किसान संघ बड़ले बा लेकिन किसान के समस्या लेके ऊ आवता जे कवनो संघ में नइखे।

अइसन अवस्था में एकेगो आकर्षण के केंद्र रह गइल बा वैदेशिक रोजीगार। बाँकिर ओकरो अपने तरह के समस्या बा। विदेशी मुद्रा केतना आवता ऊ अपना जगे होई, बाँकिर बक्सा में लासो आवता। दोसरा तरफ विदेश में रहेवालन में से बहुतो के परिवार सामाजिक विकृति के कारण टूटतो देखल जा रहल बा। साथेसाथ ऊ लोग जब घरे आई त अपना जमीन पर कमाए के नाम ना ली। अब ओहू कारण से फेर से जमीन पर्ती रहे के अधिक संभावना देखल जा रहल बा। वैदेशिक मुद्रा के तबादला दर के कारण ओह लोग के क्रय शक्ति बढ़ता। फलतः सहरीकरण तेजी से बढ़ रहल बा। एकर सीधा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ रहल बा। पृथ्वी के तापमान दिन प्रति दिन बढ़ रहल बा। पानी के स्रोत सुख रहल बा। फेर वैदेशिक रोजीगार कहिआ ले? चिरस्थायी त होखे के त सवाले नइखे उठत।

एह सब के कारण बा अब भूमंडलीकरण के बहाने पनप रहल वित्तीय पूँजीवाद। जे किसान आंदोलन, मजदूर आंदोलन, अधिकार आंदोलन के बड़ा चुस्त चालाकीपूर्ण ढङ से निस्तेज कर रहल बा।

त अइसन अवस्था में टुकुर-टुकुर ताकेवाला भा अइसन लुटेरन के मददगार होखेवाला राजनीतिक नेतृत्व के अब जरूरी नइखे। अइसन किसिम के नालायक,अइसन किसिम के व्यभिभारी लोग,चाहे ऊ जौना किसिम के भी झंडा बोकले होखे,ओ लोग के विरुद्ध में हमनी के संघर्ष करेके परी। आ ओ से पहिले हमनी के ई सब विषय पर,ई जेतना भी समस्या बा,हमनी के समस्या के समाधान करे खातिर अपना ढङ से फेर एक बेर लागेके परी। राज्य के कौनो हिसाब से बाध्य करेके परी आ अपन कृषितंत्र अपना हाँथ में लेवेके परी। अतः फेर से नया रङ, नया ढङ, नया उचाइ के साथ किसान आंदोलन अवश्यंभावी बा।

***

आलेख

गोपाल जी राय

एगो रहलन सहजानंद...

किसानन खातिर मर मिटे वाला स्वामी सहजानंद सरस्वती क जनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला मे दुल्लहपुर रेलवे स्टेशन का निगचा देवां गांव में 22 फरवरी 1889 के शिराती का दीने एगो किसान परिवार में भइल रहे। छोटहने पर उनकर माई क स्वर्गवास हो गइल रहे। शुरू-शुरू में गांव का लगी जलालाबाद का स्कूल में पढ़ाई शुरू कइलन, ओकरा बाद गाजीपुर का जिला स्कूल में पढ़े खातिर गइले। उहां से मिडिल पास कइलन। ऊ मैट्रिक क इम्तिहान देके आगे पढ़े खातिर बनारस जइतन लेकिन ओहि बीच उनकर मन भक्ति में लग गइल आ पढ़ाई छोड़ दिहलन।

अक्सर इतिहास अपना के दोहरावेला, लेकिन स्वामी सहजानंद सरस्वती एकर अपवाद बाड़न। उनका नियर दूसर केहू किसानन के भलाई करे वाला नइखे देखात। अब आगे का होई कुछ कहल नइखे जा सकत। उनका नियर अदमी का आज बड़ा जरूरत बा। जे किसानन क जीवनधारा बदल दे। केहू माने चाहे ना माने, लेकिन भारतीय राजनीति में जब तब किसानन क बात होई तब तब उनके याद आई। अगर ई कहल जाए की किसानन क पहिला से लेके आखिरी नेता देश स्तर पर रहलन त गलत ना होई। ऊ किसानन क लड़ाई लडे खातिर हरदम खड़ा रहस लेकिन ओकरा बदले कवनो पद लेवे के तैयार न होखस। ऊ कहस की हम संन्यासी हई एह ले बड़ पद का होई।

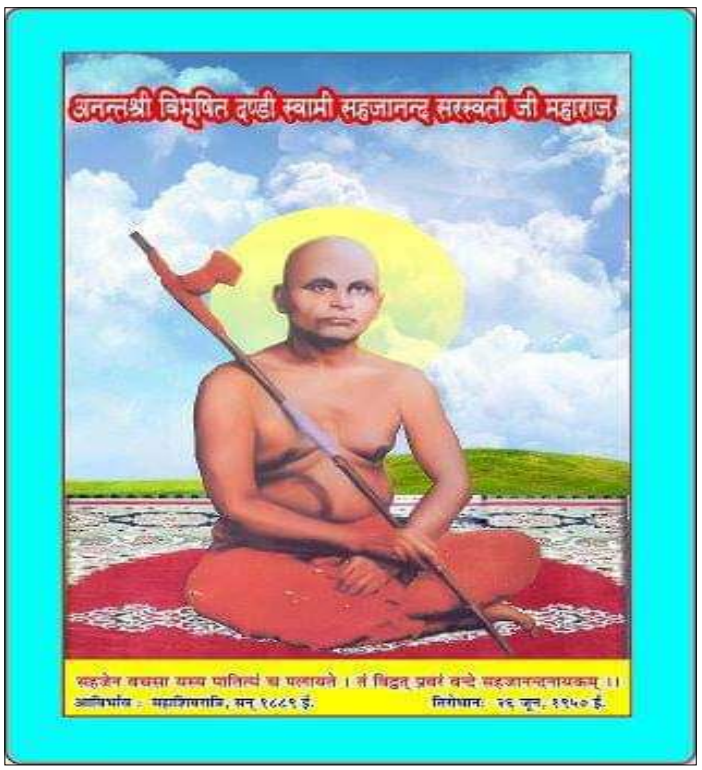

किसानन खातिर मर मिटे वाला स्वामी सहजानंद सरस्वती क जनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला मे दुल्लहपुर रेलवे स्टेशन का निगचा देवां गांव में 22 फरवरी 1889 के शिराती का दीने एगो किसान परिवार में भइल रहे। छोटहने पर उनकर माई क स्वर्गवास हो गइल रहे। शुरू-शुरू में गांव का लगी जलालाबाद का स्कूल में पढ़ाई शुरू कइलन, ओकरा बाद गाजीपुर का जिला स्कूल में पढ़े खातिर गइले। उहां से मिडिल पास कइलन। ऊ मैट्रिक क इम्तिहान देके आगे पढ़े खातिर बनारस जइतन लेकिन ओहि बीच उनकर मन भक्ति में लग गइल आ पढ़ाई छोड़ दिहलन। इनकर नाव नवरंग राय रखाइल। इनकर बाबूजी के नाव बेनी राय रहे। गाजीपुर से बनारस आ गइलन आ सन्यास लेबे के सोचलन। ओकरा खातिर आश्रमन में

घुमलन। जब घर वालन के पता लागल त ऊ लोग गांव पर ले जाके उनकर विवाह क दिहल, लेकिन दू साल में ही पत्नी क देहांत हो गइल। घर वाला दुबारा विवाह खातिर कहे लगलन त ऊ घर से भाग के बनारस चल गइलन आ फिर से संन्यासी बने खातिर घूमे लगलन। आखिर काल उनके एगो गुरु मिल गइलन, जे उनके दीक्षा दिहल आ ऊ नवरंग राय से सहजानंद बन गइलन। बनारस से गंगा किनारे प्रयाग क यात्रा कइलन। देश भर घूम फिर के बनारस अइलन आ अपारनाथ मठ में आके रहे लगलन। संस्कृत, साहित्य, वेद, पुराण, गीता, रामायण क पढ़ाई कइलन।

5 दिसंबर 1920 क दिने पटना में मजरूल हक का घरे गांधी जी से भेंट भइ ल। ओईजहे से काग्रेस का अधिवेशन में नागपुर चली गइलन। लौटी के गाजीपुर अइलन आ गाजीपुर में कांग्रेस के संगठित कइलन। 28 दिसंबर 1921 के कांग्रेस का अहमदाबाद अधिवेशन में गइ लन आ लौटत खानी गिरफ्तार करके जेल में भेज दिहल गइलन। 13 महीना जेल में रहलन, छुटला पर गाजीपुर अइलन आ गाजीपुर में कांग्रेस के गांव-गांव तक पहुचवलन । 1927 में बिहार के किसानन क हालत खराब देख के बिहटा गइलन। ओकरा बाद ओ ईजही क हो गइलन।

बिहार में प्रांतीय किसान सभा बनवले आ ओकर सभापति रहलन। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिहलन आ छह माह जेल में रहलन। 1934 में भारी भूकंप आइल। किसान तबाह हो गइलन, जमींदार किसानन से वसूली करत रहलन, जमींदार क आदमी किसानन के मारते पीटते रहे जेकर स्वामी जी ने विरोध कइलन। जमींदारी क खिलाफ आंदोलन कइलन। 1939 में कांग्रेस अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस क समर्थन कइलन आ सुभाष अध्यक्ष बन गइलन। 1944 में किसान सभा क अध्यक्ष बनलन। सुभाष

जब घर वालन के पता लागल त ऊ लोग गांव पर ले जाके उनकर बियाह क दिहल, लेकिन दू साल में ही पत्नी क देहांत हो गइल। घर वाला दुबारा बियाह खातिर कहे लगलन त ऊ घर से भाग के बनारस चल गइलन आ फिर से संन्यासी बने खातिर घूमे लगलन। आखिर काल उनके एगो गुरु मिल गइलन, जे उनके दीक्षा दिहल आ ऊ नवरंग राय से सहजानंद बन गइलन।

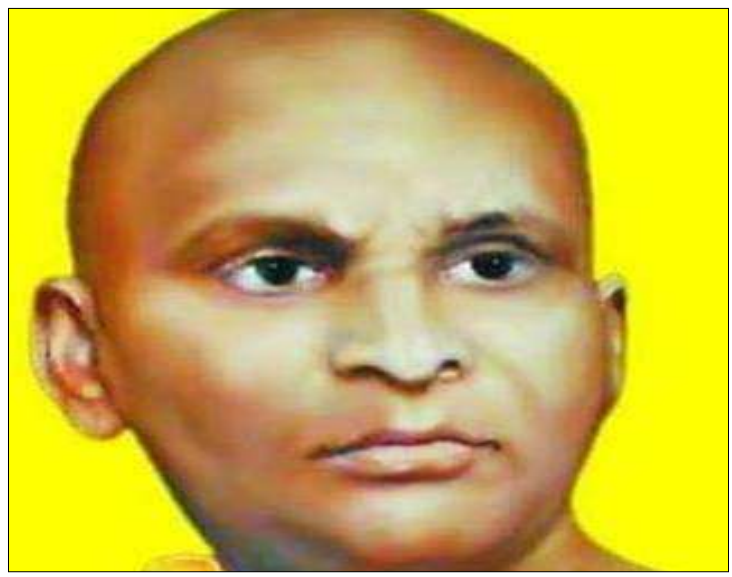

बाबू के देश छोड़ के गइला क उनके बड़ा दुख रहे। स्वामी जी का किसान सभा में बड़े बड़े लोग रहलन। उनका साथे जइसे राहुल सांकृत्यायन, जय प्रकाश नारायण, नागार्जुन, राम वृक्ष बेनीपुरी, ई एम एस नंबूदरी पाद, आदि। स्वामी जी लिखे पढ़े में तेज रहलन। दर्जनों किताब लिखले जइसे भूमिहार ब्राह्मण परिचय, ब्रह्मर्षि वंश विस्तार, कर्म कलाप, गीता हृदय, झारखंड के किसान, किसान कैसे लड़े, आदि। अधिकतर किताब ऊ जेल में रही के लिखले। आजादी के बाद बिहार क मुख्य मंत्री श्री कृष्ण सिंह से जमीदारी हटावे खातिर दबाव बनवले।

जे अन्न वस्त्र उपजाई, उहे कानून बनाई। भारत देश वोही क ह, अब शासन ऊहे चलाई। स्वामी जी क ई नारा गांव-गांव खूब चलल। स्वामी जी क कहना रहे की मुनि लोग त स्वामी बनके अपना मुक्ति खातिर एकांतवास करेलन, लेकिन हम अइसन कबो ना करब, किसानन क दुख क आगे हमके मुक्ति न चाही, हम उनकरे संगे मरब आ जीयब।

स्वामी जी आपन आत्मकथा, मेरा जीवन संघर्ष में अपनी जीवन यात्रा क पूरा विवरण लिख देले बाड़न। देश में किसान आंदोलन त बहुत भइल लेकिन अधिकतर अपने क्षेत्र तक रही गइल। स्वामी जी 1946 तक कांग्रेस मे रहलन। ओकरा बाद कम्युनिस्टो के साथ रहलन लेकिन कबो सदस्यता ना लेहलन, लेकिन लोग उनके कहे लगल मार्क्सवादी संन्यासी। उनकर पूरा जीवन सामाजिक क्षेत्र में पुरोहितवाद आ आर्थिक क्षेत्र में सामंतवाद क खिलाफ लड़ाई लडे मे गुजर गइल। स्वामी जी समझौतावादी ना रहलन। स्वामी के शंकराचार्य बने खातिर कई बेर बुलावा आइल, लेकिन उनकर कहनाम रहे की हमार भगवान किसान हौवे, हम वोही क सेवा में लगल रहब, हमके वोही मे खुशी मिलता। स्वामी जी एक ओर अंग्रेजन से लड़ते रहलन, दूसरी तरफ छोट किसान आ मजदूर खातिर जमींदारन से लड़स।

स्वामी जी 26 जून 1950 के बिहार के मुजफ्फरपुर में आपन शरीर के छोड़ दिहलन। पटना के बिहटा में सीताराम आश्रम में उनकर समाधि बनल।

***

आलेख

प्रकाश उदय

खेती-किसानी के लोकधुन

लोकगीतन में जवना के श्रमगीत कहल जाला ऊ अक्सर खेती के गीत ह। इहाँ ले, कि जवना के श्रमगीत ना कहल जाला, संस्कार-गीत भा ऋतुगीत भा कुछ अउरू कहल जाला, ऊहो, कहल कठिन कि कइसे खेतिए के गीत ना ह! एहू से बुला, कि हमन किहाँ गीत, खास क के लोकगीत, गिर्हस्थी से उपजेला, ओसहीं जइसे गिर्हस्थी खेती-किसानी से।

लोकगीतन में जवना के श्रमगीत कहल जाला ऊ अक्सर खेती के गीत ह। इहाँ ले, कि जवना के श्रमगीत ना कहल जाला, संस्कार-गीत भा ऋतुगीत भा कुछ अउरू कहल जाला, ऊहो, कहल कठिन कि कइसे खेतिए के गीत ना ह! एहू से बुला, कि हमन किहाँ गीत, खास क के लोकगीत, गिर्हस्थी से उपजेला, ओसहीं जइसे गिर्हस्थी खेती-किसानी से।

किसानी से कविताई के रिश्ता, पता ना, जब से किसानी बा तब से बा कि जब से कविताई बा तब से। तरह-तरह से, तरह-तरह के काम-काज के अटूट एगो सिलसिला ह किसानी, आ एही नाते, तरह-तरह के, तरह-तरह से संभव कविताई के साथे बहुरंगी ओकर रिश्ता, बहुढंगी। रोपनी, सोहनी, कटनी के गीत में, भा खेतिए के खटकरम में शामिल ढेंकी, जाँता, कोल्हू के गीत में ऊ रिश्तेदारी सनाम बा, त अनामो बा, ओ गीतन के रूप में, जवन होखे चाहे जवना तरह के, बाकिर खेती-किसानी के तमाम तरह के काम-काज से अनभावतो जुड़ जाला। की त ए नाते कि उन्हनी के ताल खेती के कवनो काम के ताल से मिल जाला भा ए नाते कि ओह काम के ताल ओ गीतन के ताल से मिल जाला। ईहो हो सकेला कि दुन्नो के ताल एक-दूसरा से मिला लिहल जात होखे। काम के ढंग-ढर्रा के कुछ एहर-ओहर क के, गीत के लय-धुन के कुछ सरका के, खरका के।

कुछ अइसन गीत बा जवन मेहनत के दौर में गावल जाला, त कुछ अइसनो गीत बा जवन मेहनत के तौर प गावल जाला, जवना के गवला के मेहनताना होला। खटनी के साथे के गाना बा, पहिले के बा, बाद के बा। पहिले के, माने समहुत के, सुमिरन के, राम के जगावे के गीत। बाद के, माने आराम के जगावे के गीत। राम के जगावल अपनो के जगावल ह, अपना आत्माराम के जगावल ह। भोजपुरी में ई 'आत्माराम' अपना खातिर आवेला, आ अपने खातिर आवेला 'अपनाराम'। राम के जगावल एह अपनोराम के जगावल ह, अपना चुस्ती के, अपना फुर्ती के जगावल ह। खटनी के बाद के गीत सुस्ती जगावे के गीत ह।

श्रम के साथे संगीत, कहल जाला कि ओकरा थकइनी के दुरावे खाती होला, ओकरा के भुलवले राखे खाती। हो सकेला, बाकी आजे के ना, आज के बहाने आज तक के थकइनी के। श्रम-संगीत के ई संगति एहू खाती कि कई-कई जन के आ कबो-कबो त कई-कई तरह के 'कार' के 'सहकार' के सुरूप मिले, मिलल रहे। ई कहे खातिर, कि ना तू खटले में अकेल, ना तू थकले में अकेल। कि जवन होई, भा ना होई, तवन ना तहरा अकेल के कइले, ना तहरा अकेल के ना-कइले। कि सबके कइल सबके कइला से, सबके गावल सबके गवला से आ सबके कइला से सबके गावल, सबके गवला से सबके कइल गुँथाइल बा। श्रम के साथे संगीत एहू नेवर्तक कि तन से जुड़ल जवन खटनी तवन मनवो से जुड़ जाय, कि जांगर से जुड़ल रहे जिया, कि भले जूझत रहे, बाकिर जुड़ाइल रहे। कि श्रम से जुड़ल सब सबसे जुड़े, जुटान के जरूरत जनाय त जुट जाय, एकजुट रहे। कहल जा सकेला कि श्रम के संगत बनवले राखे के जवन जतन बा संगीत के, तवने के नाते संगीत 'संगीत' ह। बाकिर, श्रम हमेशा संगते होखे, अइसन त होला ना, आखिर बेगारियो नाँव के एगो चीज त बड़ले बा दबंगन के एक दुनिया में ! ई जवन जबर्दस्ती के मजूरी बा, बेगारी, तवनो के अगर संगीत के साथ मिलेला, त तन से जुड़ल मेहनत के मन से जोड़े खातिर ना, मन के अनते कहीं अझुरवले राखे खातिर। जेकरा के दबवले बानीं रउआ, ओकरा के गावत अगर पाईं त मानियो लीं, आ जानियो लीं, कि मोका पाई त रउआ के ऊ बजइबो करी निकहा, धउरा के। त तय जानीं कि असंगति के खिलाफ एगो जबर्जंग ह ई -- श्रम आ संगीत के संगति, हर तरह से आ हर तरफ से। संगीत, बाकिर, बिना कवनो साज-बाज के ! मेहनत के दौरान के गीतन के बारे में त कम से कम ईहे सही बा। चुटुकियो-थपरी के कमे मोका मिल पावेला। तब्बो, जब होत रहन स बैल, त बैलन के गर के घंटी त कम-से-कम होते रहे। अब त खैर ट्रैक्टर बा, संगीत के कइसनको सामियाना के उखाड़ देबे के सकान से संपन्न। केदार जी के एगो बेचैन क के रख देबे वाला कविता ह "बैलों का संगीत-प्रेम", ओमें बैलन के अचके थथम के ट्रैक्टर के संगीत सुने लगला के एगो दृश्य बा। कसाईखाना के हवाले हो गइला के पहिले बैलन के ई आखिरी दर्शन रहे, जवना के केदार जी कलमबंद कइले। हो सकेला कि जइसे डलिया-मउनी आ सूप-कलसुप के हमन के ड्राइंग-रूम के सजावट बने के सोहागभाग जागल, ओसहीं कहियो बैलन के गर-घंटियो के जागे! ओंइसे, केहू चाहे त रोपनी खातिर हाथ के पानी में डुबला-निकलला के, जाँता के जुआ के चढ़ाँव-उतराँव के, घोनसार में दबिला के द्रुतदौड़ान के आ एह सबकुछ के साथे साँस के अलग-अलग तरह से आवाजाही के अलग-अलग 'साज' के अलग-अलग 'बाज' मान लेबे। आ एकरा अलावहूँ, कुछ अउरियो-अउरी साज-बाज त रहले बा -- **"पाकि गइले खेतवा, जरन लागे रेतवा, झनकि बाजे हो धनि खेते-खेते चुरिया... झुकि गइले गेहुँआ, लटकि गइले जउआ, चटकि बाजे हो धनि मटरा के छिमिया..."।**

खेती के गीत जरूरी नइखे कि खेती के बारे में होखे। श्रमगीत श्रम के महिमा के बखान के गीत ना ह। होखे के हो सकेला कि जवना तरह

के काम-काज से जुड़ल ऊ गीत ह, तवनो के बारे में ऊ कबो-कबो कुछ-कुछ बतिया ले, ना त बाकी के गीतन के जवन आपन बात, तवने बात उन्हनियो के। ऊहे रीझ-खीझ, सुख-दुख, मान-मनुहार, आस-निरास, ऊहे भिड़ला-भगला के बात-बतियाँव। खटनी के साथे खटनिए के बारे में गाके खटनी के खटानी के अउरू डेढ़ा-दोगिना क लेबे, अइसन समझदारी कवनो खटनिहार के त नाहिंए हो सके, छाँहा में बइठ के ओकरा खटला के कवनो निरखनिहार के, बेशक नमनयन निरखनिहार के होखे त होखे। ई जरूर बा कि कुछ खास तरह के गीतन से कुछ खास तरह के मनोभाव, कि दो मनोदशा, के जुड़ाव हो जाला। केहू चाहे त ओह खास तरह के मनोदशा के ओह खास तरह के कामकाज से जोड़ सकेला। जइसे जाँता के चलला के जवन लय होला, जवन धुन होला, ओही में बुला, हहरला-मतिन अइसन कुछ बा कि दुख जइसे उभर के, उमड़ के, कलेजा से कढ़ के आ जाला। भिखारी ठाकुर एही के लखले, जब लिखले कि **"केइ मोरा जरवा में भिरवले बाटे अरिया हो, चकरिया दरि के ना... दुख में होला जँतसरिया हो, चकरिया दरि के ना..."**। रोपनी-कटनी के दौरान के भा लौटानी के गीत, रोपला में एगो असरा के लगला के आ कटला में लागल असरा के पुरला के जवन पुलक होला, तवना के नाते जवना आरी-डँड़ारी से आवेली रोपनिहारिन-कटनिहारिन, तवनो के अपना लहक-लहार में हाथ भ उठवले आवे त का अचरज! ईहो ना कि गीत के कहन प जवना काम से ऊ जुड़ल बा तवने के असर। रोपनिहारिनन मे नवतुरिया बेटी-पतोहन के भा ननद-भउजाइन के जुगल जोड़ी के मौजूदगी अगर बढ़ के बा, त होइए ना सके कि गीतन में चुहल-चकल्लस, हँसी-ठिठोली कुछ बढ़-चढ़ के ना होखे।

श्रम के भूमिका श्रमगीतन में सबसे बढ़के ओकर संरचना तय करे में होला। ऊहे तय करेला कि का गावे के बा, कइसे, आ कतना। ऊहे तय करेला कि चलला-मतिन गावे के बा, कि धउरला-मतिन, कि धउरवला-मतिन। ललक के कि ललकार के। अक्सर त ओही-ओही काज-परोजन के सँपरावहीं-सल्टावे के दौरान-दरमियान के जनमल-जनमावल ई गीत, उपजल-उपजावल। ओसहीं उपजल-उपजावल जइसे तीसी भा सरसो भा तरोई। खेतन में उपजेला खेती के गीत। खरिहानन में गँजेला-सजेला किस्सा-कहनी। के जाने कतने कहाउत के जिम्मे बा खेती-गिर्हस्थी के साज-सम्हार, जइसे कि 'जे जोते हर, खेती ओकर, अवरू ना त जेकर-तेकर'...।

रचयिता ह कवि, रचयिता ह किसान। कठिन काम रचल। कठिन से ई जवन सामना बा, कवि आ किसान दुन्नो के, ऊहे बुला दुन्नो के एगो

एह देश में दरअसल, खेती आ किसानी के सदा संभव राखे वाला एक चीज अउरू बा, अउर-अउर चीजन के अलावा -हठ। ताल में रहे के, ताल में राखे के हठ। हठी ना भइल त काहे के कवि, काहे के किसान ! हठयोग जवन कहाला, तवने के एगो प्रकार ह किसानी। कविताई।

रिश्तेदारी में बन्हले रहल बा। बाकिर, सुने में आवत बा कि कठिन दिनन में कायम रिश्तेदारी के ई रंग, अब कुछ उचटत-उड़त-अस जनाय लागल बा। अइसन अगर बा त एकर एक मतलब ईहो बा कि जवना 'कठिन' से जूझत एह दूनो

बिरादरी के रिश्तेदारी बनल रहे, तवन, एह दूनो में से कवनो एगो बिरादरी खातिर ओतना कठिन नइखे रह गइल। खटकल बा अगर कुछ एह दूनो में, त तय बा कि एमें से केहू के सोझा ऊ जस-के-तस बा, केहू के सोझा से ऊ पधिले लागल बा। सवाल बा कि कठिन से केकर जूझ कम भइल बा? किसान के? हो सकेला। कतने दो आइल मशीन, रंग-बिरंग के बीया-खाद-औखध, एह कुल्ह से खेती-किसानी में के कही कि सहूलियत नइखे भइल! बाकिर, मुश्किल ई बा कि बड़का जोत वाला जमीनबाज किसानन के, जे करस ना किसानी, करवावेले, छोड़ दीं, त खेतिहर-मजूरन के हत्या-आत्महत्या से लेके खटत-खटत मर जाय के अभंग आ अमंद जवन एगो सिलसिला बा, 'गोदान' वाला होरिए के जमाना से चलल आवत, तवना के रहते, के कही, कवना मुँहे कि खेती-किसानी के काम में आसानी कवनो आइल बा ! पता ना कि ए सहूलियत सब के बावजूद, कि इन्हनिए के चलते, जतना कठिन रहे किसानी ओकरा से अधिके कठिन भइल जाता दिने-दिने। तब, कविताइए बुला, किसानी से रिश्तेदारी निबहे, एकरा खातिर, अपने ओतना नइखे कठिनाय पावत, जतना किसानी कठिनाइल जाता। नइखे मिलावे पावत ऊ ताल से ताल। हो सकेला कि ई बात ना होखे। बात बस अतनवे होखे कि कविताई, जवना के सहूलियत कहल जाला तवना के अपना भितरे आवत जाय से बरिजे ना पावत होखे। कहीं त, कुछ त गड़बड़, बड़ गड़बड़, भइल बा जरूर, बाकिर ओकरो से बड़ गड़बड़ ई बा कि एह गड़बड़ के बूझल-बतावल-बुतावल ना काव्यशास्त्री लोग अपना जिम्मे लेता, ना कृषि-वैज्ञानिक लोग अपना जिम्मे, ना मिलजुल के रस्ता निकालत बा कवनो !

तब्बो, टुटिए नइखे गइल ई रिश्ता, एकदम-से। बनलो बा, आ नया हवा-पानी के हिसाब से नया-नया तौर-तरीका से बनतो बा। एह देश में दरअसल, खेती आ किसानी के सदा संभव राखे वाला एक चीज अउरू बा, अउर-अउर चीजन के अलावा -- हठ। ताल में रहे के, ताल में राखे के हठ। हठी ना भइल त काहे के कवि, काहे के किसान ! हठयोग जवन कहाला, तवने के एगो प्रकार ह किसानी। कविताई।

केहू के लागत बा कि गइल गवनई, त एक त कि गइल ना। ई जरूर बा कि कुछ लोग अपना हड़बड़ी में 'नया' के 'गया' बूझ लेला। दोसरे ई कि कबो-कबो 'अरज' के चल गइल आ 'तरज' के रह गइल, 'तरज' के चल गइल आ 'अरज' के रह गइल; जतना चल गइल ह, ओतने रहियो गइल त ह। तिसरे, कि हरवाही के गीत गइल, जँतसार गइल, कोल्हुआही के गीत गइल, ई त बाद के बात ह, पहिले त हर गइल, जाँता गइल, कोल्हू गइल। जे जँतसार के गइला के रोना रोए ऊ जाके जाँता ना ले आवे पावे त बाज आवे। चउथे, कि अइसन थोरे कि जँतसार गइल त जँतसार के बतियो गइल। हो सकेला कि ऊ बतिया गोरख पाँड़े के, कैलाश गौतम के, आनंद संधिदूत के, अशोक द्विवेदी के कवनो गीत में डेरा जमा के बइठल होखे। पँचवे, कि मान लीं कि चलिए गइल गवनई, त गइल गवनई ना, गइल आनंद। सावन से आनंद गइल त कजरी गइल। ना गइल आनंद त ना गइल कजरी। आनंद के दिखावा भर बा, त तय मानीं कि कजरी के दिखावा भर होई। अब अइसन का, कि बेमजा होखे मेहनत, आ मन चाहे कि मेहनत के गीत रहे ! जेकरा ए गीतन के बचावे के होखे, से आपन कैमरा-रिकार्डर के बाद में उठावे, पहिले ओह मजा के जियावे, मनसायन के उपरावे, जरूरत जनाय त 'मेहनत के बारहमासा' गावे !

खेती-किसानी के लोकधुन के एक धुन ईहो कि जवना व्यवस्था में अधम चाकरी वाला साहेब-सूबा के सोझा उत्तम खेती वाला हरवाहा हथजोरिया में लउके, तवन धुन लायक ना, धुने लायक !

***

आलेख

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

रोपनी आ सोहनी के गीत:

हरवा जोतत तोर गोड़वा पिरइले

रोपनी आ सोहनी आजुओ खेती के अनिवार्य अंग बा, बाकिर अब एह अवसर के गीत कान में कबो-कबो सुनाई परता काहेंकि अब रोपनी आ सोहनी करेवाली मेहरारुन के जगह नया-नया मशीन ले लेले बाड़ी सन। अब लोकगीतन के ऊ रस खेतन का सङ्हीं हमनी का जिनगियो से गायब हो रहल बा। साइत इहे आधुनिकता के कमाल ह भा विकास के पहचान। ई 'साइत' चाहे जवन होखे, बाकिर एह युगसत्य से इनकार नइखे कइल जा सकत कि वर्तमान का सङ्हीं आवेवाली पीढ़ियो एह गीतन के उल्लेखे भर इतिहास आदि में पढ़िके आपन जिज्ञासा पूरा करी; एहमें मिलल साहित्य के सहजे में समाविष्ट तरह-तरह का रसन के स्वाद लिहल ओह लोग का भाग्य में ना होखी।

जँतसार, रोपनी आ सोहनी का गीतन के चर्चा मजदूर गीतन में होला। ई गीत कवनो खास काम का प्रदर्शन के समय गावल जाला; जइसे जाँत पीसत घरी जँतसार, खेत में बियड़ी रोपत खा रोपनी आ फसल से भरल खेत में खर-पतवार बीछत घरी सोहनी। श्रम गीत का प्रक्रिया के बारे में हमरा डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के राय अधिका सहज लागेला। मजदूर लोग खाली आपन शारीरिक थकान दूर करे खातिर काम करत गीत गावत रहेला। एकरा चलते मन काम में लागल रहेला अउर मेहनतो के पता ना चले। एह तरह से देखल जाउ त हमनी का लोक कार्य के परंपरा चेतनासंपन्न आ विज्ञानसम्मत लागेले।

खेत में पानी लागल बा। कबो-कबो ऊपर से बरखा हो रहल बा। निचहूँ पानी आ उपरो पानी। अइसना में रोपनी वाली मेहरारू धान के हरियर बियड़ी लेके खेत में रोपतारी सन आ अपना सुन्नर गीतन से पानी में भींजल श्रोता लोग के अउर रसमय बनावतारी सन। रोपनी आ बोवाई के काम घर का बाहर खेत में करेके परेला। साइत एही से मरद लोग का ओर से मेहरारुन के छेड़े के प्रसंग कई बेर एह गीतन में आइल बा। अपना मरद का बियोग में कवनो मेहरारू उदास होके खाड़ बिया। एगो राहगीर आके ओकरा के अनुचित प्रस्ताव देता। तब मेहरारू जवाब देतिया कि जो हमार मरद आ गइल त हम तोहरा के एह उद्दंडता के उचित इनाम दियवाइबि, पनही से पिटवाइबि।

कबहीं त लवटिहें मोर बनिजरवा
पनही से तोहके पिटवइबो हो राम।
(भोजपुरी लोक साहित्य)

उपाध्याय जी के ई संदर्भात्मक विश्लेषण जायज बा, बाकिर हमरा लागता कि एह घटना के संबंध समाज का नैतिक स्थिति से सीधा जुड़ल बा। आजुओ घर से बाहर रहला का कमजोरी के फायदा गंदा मानसिकता वाला आ तथाकथित अमीर बाप के बिगड़ल बेटा लोग उठावेलन। ई संतोष के बात बा कि वर्तमान में महिला सशक्तीकरण में प्रगति हो रहल बा आ एह स्थिति में तेजी से बदलाव आइल बा।

खेत में धान रोपत घरी जवन गीत गावल जाला ओकरा के रोपनी का नाम से जानल जाला। एगो गृहस्थ का जीवन के चित्रण एह गीतन में खास तौर पर मिलेला। ससुराल का दुख के निहोरा करत एगो औरत अपना पति से कहतिया कि जबसे हम इहाँ आइल बानी, काम करत-करत हमार देह सूख गइल बा अउर सुख त सपने हो गइल बा। आज तक पइसा के मुँह नइखीं देखले। अब हम अपना नइहर जाके गोइँठा पाथिके आपन जिनिगी बिताइबि।

जहिया से अइलीं पिया तहरी महलिया में
राति दिन कइलीं टहलिया रे पियवा।
घर के करत काम सूखल देंही के चाम
सुखवा सपनवा होइ गइले रे पियवा।
हरवा जोतत तोर गोड़वा पिरइले
रुपया के मुँह नाहीं देखनी रे पियवा।
चिपरी के पाथि-पाथि दिन हम काटबि
अब नाहीं आइबि तोर दुअरिया रे पियवा।

नारी के अटूट अउर शुद्ध प्रेम त बहुत लउकेला, बाकिर पति के पत्नी से प्रेम अक्सर दुर्लभ वस्तु होखेला। बाकिर, रोपनी का गीतन में एह शुद्ध स्त्री का प्रेमो के झलक देखे के मिलेला। कवनो पति परदेश गइल बाड़े। एही बीच ओकरा माई से खिसिया के मेहरारू अपना नइहर चल जातिया। परदेश से लवटला पर जब ऊ घर में अपना मेहरारू के नइखे पावत त मनिहार का भेस में ओकरा के खोजे में लाग जाता आ आखिर में मेहरारू के पाइए लेता।

देहु ना आमा हो ढेबुआ रे पइया
चुरिया बहाने धनि देखबि हो राम।
खोरियन-खोरियन फिरेला चुरिहरवा
चुरिया रे पहिरबे गहकिनिया हो राम।

एह गीतन में ओह समय का मेहरारू लोग के निडरता आ स्पष्टवादिता का सङहीं उनुका चरित्र के उत्कृष्टता साफ-साफ लउकत बा-

ऊँचे मंदिल चढ़ रनिया पुकारे
ऊपर बैगन लै आवहु हो राम।
कइसे में मंदिल बैगन ले आईं
तोरा घर राजावा छिनार हो राम।

लोकगीतन के भंडार नारी के उज्ज्वल, पवित्र आ आदर्श सतीत्व का वर्णन से भरल-पूरल बाटे। एगो बानगी देखल जाउ-

लेहु ना साँवरि डाल भरि सोनवा
छोड़ु परदेसिया के आस हो राम।
आगि लगइबो में डाल भरि सोनवा
करबो परदेसिया के आस हो।

आषाढ़ में बोवल खेत जब नीके जामि जाला त ओहमें उपजल घास आ अनेरिया पौधन के खुरपी भा हँसुआ से काटिके फेंक दिहल जाला। एही काम के 'सोहनी' कहल जाला। एह घरी जवन गीत गावल जाला, ओकरा के 'सोहनी' का नाम से जानल जाला। एह गीतन पर आपन टिप्पणी देबे से पहिले लेखक डा.कृष्णदेव उपाध्याय के आभार व्यक्त कइल चाहत बा, जेकरा एह मौलिक साहित्य के लिपिबद्ध करे खातिर कई बेर खेतन का मेड़ पर बइठे के परल बा।

सोहनी के गीत कवनो संक्षिप्त कथानक का सङे लिखल गइल बा। ईहे कारन बा कि ई गीत आकार में बड़ होखेलें। एह गीतन का वर्णन के विषय भी ऊहे बा जवन रोपनी का गीतन के बा। कहीं मुगलन का अत्याचार के बरनन बा त कहीं उहनी से लड़िके कवनो अबला के उद्धार करेके। कहीं पतोह के सास द्वारा सतावे के बरनन मिलता त कहीं मरद द्वारा अपना मेहरारू का चाल-चलन पर शक कइके ओकर अग्निपरीक्षा लेबे के उल्लेख।

कबो-कबो त ई समुझले बहुत कठिन हो जाला कि नायिका का मन में का चलत बा। एगो प्रोषितपतिका स्त्री बिया। ओकर पति परदेश चल गइल बा। ओकरा एह बात के चिंता बा कि ओकर रोजमर्रा का जिनिगी के जरूरत कइसे पूरा होई। तब ओकरा ध्यान आवता कि ओकरा

खेत में पानी लागल बा। कबो-कबो ऊपर से बरखा हो रहल बा। निचहूँ पानी आ उपरो पानी। अइसना में रोपनी वाली मेहरारू धान के हरियर बियड़ी लेके खेत में रोपतारी सन आ अपना सुन्नर गीतन से पानी में भींजल श्रोता लोग के अउर रसमय बनावतारी सन। रोपनी आ बोवाई के काम घर का बाहर खेत में करेके परेला। साइत एही से मरद लोग का ओर से मेहरारुन के छेड़े के प्रसंग कई बेर एह गीतन में आइल बा।

पति के दोस्त त हर क्षेत्र में बाड़ें, ओकर काम चलि जाई।

पातर कुअँवा ननदो खिलेला पतलवा हो
पनिया कइसे भरबों।

हमरो छयलवा बिदेशवा हो पनिया कइसे भरबों।
हमरो छयलवा के रंगरेजवा यार हो चुनरी रँगि देला।

हमरो छयलवा के केवटा यार हो मछरी मारि देला।

असमंजस के स्थिति त तब होखतिया जब ऊ कहतिया कि मछरी खइला से हमरा गर्भ रहि गइल बा। बहुत सोच-बिचार का बाद ऊ तय करतिया कि ऊ एकर दोष अपना जेठ का माथे मढ़ि दिही।

मछरी खात ननदी रहि गइले पेट हो, केकरा सिर ढारो।
हमरो छयलवा विदेश हो, केकरा सिर ढारो।
ससुर मोर बुढ़वा देवरा नादान हो, केकरा सिर ढारो।
हमरो छयलवा विदेश हो, केकरा सिर ढारो।
ससुर मोर बुढ़वा देवरा नादान हो, भसुरा सिर ढारो।
हमरो छयलवा विदेश हो, भसुरा सिर ढारो।

एगो गीत में सौतियाडाह के झाँकी मिलता। पति सौत का घर में सुतल बा। अइसना में पहिलकी मेहरारू से ओकर बातचीत सौतियाडाह के जवना मनोरंजक आ जीयत-जागत गतिशील बिंब के सर्जना करत बा, ऊ साहित्य में कहीं अउर दुर्लभ बा।

अमवा महुइया के लगली केवड़िया
लोहवा के लागल जंजीरिया ए बालम।
खोलहु प्रभु रे बजर केवड़िया
ओसिए भिंजेले लामी केसिया ए बालम।
कइसे हम खोलीं धनि बजर केवड़िया
मोरा गोदी सवती सँवलिया ए बालम।
खोलहु प्रभु रे बजर केवड़िया
सवती के रुपवा दिखावहुँ ए बालम।
का तुहूँ देखबू धनि सवती के रुपवा
चानवा सुरुजवा के जोतिया ए बालम।
ओही भोजपुरवा से लोहवा मँगइबो
लोहवा के टाँगावा गढ़इबो ए बालम।
ओही रे टाँगावा प शान चढ़इबो
ओही से जंजीरिया कटइबो ए बालम।
एक हाथे धरबो में सामी के जुलुफिया
एक हाथे सवती के झोंटवा ए बालम।
सवती के छतिया प सड़क कुटवइबो
लाख आवेला लाख जाला ए बालम।
सवती के छतिया प ओखरी धरइबो
कुटबो कमरिया लचकाइ ए बालम।
सवती के छतिया प जाँतावा गढ़इबो
पिसबो लहँगवा फहराइ ए बालम।

सवति का छाती पर ओखरि धइके कूँटे आ ओकरा छाती पर जाँत गढ़वावे में ओकरा सहज क्रोध के अभिव्यक्ति त जरूर मिलता बाकिर कमर लचकाइ के कूँटे आ लहङा फहरा के पीसे में ओकरा क्रोध के चरम स्थिति क्रूरता में बदल जात बिया।

रोपनी आ सोहनी आजुओ खेती के अनिवार्य अंग बा, बाकिर अब एह अवसर के गीत कान में कबो-कबो सुनाई परता काहेंकि अब रोपनी आ सोहनी करेवाली मेहरारुन के जगह नया-नया मशीन ले लेले बाड़ी सन। अब लोकगीतन के ऊ रस खेतन का सङहीं हमनी का जिनगियो से गायब हो रहल बा। साइत इहे आधुनिकता के कमाल ह भा विकास के पहचान। ई 'साइत' चाहे जवन होखे, बाकिर एह युगसत्य से इनकार नइखे कइल जा सकत कि वर्तमान का सङहीं आवेवाली पीढ़ियो एह गीतन के उल्लेखे भर इतिहास आदि में पढ़िके आपन जिज्ञासा पूरा करी; एहमें मिलल साहित्य के सहजे में समाविष्ट तरह-तरह का रसन के स्वाद लिहल ओह लोग का भाग्य में ना होखी।

***

आलेख

रामेश्वर गोप

एक मुट्ठी सरसों, पीट-पीट बरसो..

खेती किसानी से जुड़ल गीत-संगीत के आपन एगो परम्परा बा। खास कर भोजपुरी क्षेत्र के बात कइल जाव त बोअनी कटनी से लेके विभिन्न अवसरन पर किसान आ मजदूर बिहरत आपन काम करत रहेला। एह विषय पर लोकगीतन के अलावे भोजपुरी आ हिंदी फिल्मन में बहुत सारा गीत देखे सुने के मिल जाई। देश के आजादी के बाद खाद्यान्न के आत्मनिर्भरता खातिर स्वतंत्र देश के सरकार जेतना जागृत भइल ओकरा संगे-संगे साहित्य फिल्म आ गीत-संगीत के योद्धा भी लागल रहले। साठ के दशक में हरित क्रान्ति के दौरान भोजपुरी क्षेत्र के गीत गवनई में हर तरफ ई फसाना गवाये लागल रहे-

किसानवा किसनवा किसानवा
जागअ जागअ मोरे देश के किसानवा
नया नया खाद ले ल नया लेल बियवा.
वैज्ञानिक रूप से खेती कर के
उपजाव तूहूं अनवा किसानवा...

एह तरह के गीत अनायास रेडियो टीवी चौपाल में सुने के मिल जात रहे। आईं, खेती-गृहस्थी से जुड़ल कुछ पारम्परिक गीत, संगीत मुहावरा लोकोक्ति आदि के देखल जाव। खेती किसानी के विकास के दौर में हमनी के किसान का सोचत रहे, केतना जागृति रहे, ई सब पारम्परिक गीत आ मुहावरन में देखे के मिल जाई। जेठ के तपत गरमी के बाद जब आषाढ़ चढ़ जाला आ मानसून के आगम हो जाला, आकाश में बादल मेड़राये लागेला त देख के किसान खुश हो जालें आ लइका उछल-उछल के कहेलन स..

एक मुट्ठी सरसों, पीट पीट बरसो..
रामजी रामजी पानी द सुगवा पिआसल बा..

जब पानी पीट-पीट के बरसे लागल आ छुटे के नाम ना लेवे त लइकन के टोली कहे लागेला-

एक मुठी लाई ओनिये के बरखा ओनिये बिलाई..

ई त भइल लइकन के बात अब आईं कुछ गंभीर बात आ मुहावरा देखल जाव-

तेरह कार्तिक तीन आषाढ़...

एह मुहावरा के प्रयोग आज भी गांव में कइल जाला। रबी अथवा गेहूं के फसल के बोअनी आ मकई के बोअनी खातिर ई मुहावरा किसान के याद आवेला। रबी फसल खातिर कार्तिक में तेरह दिन आ भदई फसल मकई खातिर आषाढ़ के तीन दिन महत्वपूर्ण होला।

हमनी के देस भारत मानसून से जुड़ल बा। एकर इंतजार बेसब्री से किसान करेला। देर भइला पर लोग इंद्र भगवान से गोहरावेला। लोग तरह-तरह से भगवान से मिनती करेला आ धार्मिक अनुष्ठान करेला। मौसम आ कृषि वैज्ञानिक के रूप में ख्याति प्राप्त घाघ के कहल बात आज भी अक्षरशः सही मानल जाला।

सावन में लगातार पुरवइया बहेले त बरखा के कमी के आभास मानल जाला। घाघ कवि के ई कहाउत आज भी भोजपुरी क्षेत्र में प्रसिद्ध बा-

सावन मास बहे पुरवइया बरधा(बैल) बेच किने धेनु गइया

एगो आऊर उनकर लोकोक्ति मशहूर बा-

रात निबदर दिन में छाया, कहे घाघ कि बरखा गया..

बरखा के आगमन खातिर भी घाघ कवि कहनी कि-

उत्तरा बरसे चित्तरा मेड़राय
घर बइठल धनहा अगराय

आदमी के समय काटे खातिर आज बहुत साधन उपलब्ध बा। पहिले के जमाना में खेती-गृहस्थी में दिनभर हारल थाकल लोग के मनोरंजन के साधन लोक-कथा, कहानी, बुझउल रहे जवना में ज्यादा फल फलहरी बाग बगइचा से जुड़ल रहे। आईं कुछ उदाहरण देखल जाव

1-फरे ना फूलाव, एक ढ़ाका तुराव (पान)
2- हरियर सुगा आकाशे खिले नीचे पारे अंडा (महुआ)
3- बाप के नाम से बेटा के नाम, नाती के नाम कुछ आउर (महुआ)
4- जवना मद से हाथी माते तेलीन लगावस घानी (कोईना यानी महुआ)

5- शीश काट धरा पर धरा, शव गया नहाने
हड्डी जल राख भई.....चमड़ा गया बिकाने (सन या सनई या जूट पाट)..
6- मारे के डंटा खाये के मिठाई, ई अपना खेत में उगाईं (ईंख)

पहिल पानी में मकई आ धान के बिया खेत में गिर जाला। धान के बिचड़ा एक बीता के होते बोआई शुरू हो जाला। पहिलका दिने धान के बोआई के खुशी जवन किसान के मिलेला ऊ खुशी शादी बियाह से बढ़ के खुशी मानल जाला। ई खुशी बनगरी के रूप में मनावल जाला। बनगरी मतलब धान के बान खेत में गाड़ल मानल जाला। ई ध्यान देहल जरुरी बा कि धान के पहिल बान यानी पौधा खेत के मालिक गाड़ेला आ धान बोवे वाली जाना या मजदूर गीत गावेला। सांझ के किसान के दुआर पर भी गीत मंगल होला आ भाई भवधी खाला। एह मौका पर मजदूर सब के बढ़ा चढ़ा के मजदूरी देबे के भी संस्कृति देखे के मिलेला। भोजन में भात-कढ़ी, बोजा-बजका सब बनेला। दुआर पर सोहर मंगल आ खेती

किसानी से जुड़ल गीत गावल जाला।

राजवा के बेटवा फलाना बाबू ना
राजवा के बेटी हई फलाना देई ना।
दइया चउरा फटकी बन (मजदूरी) देली हो ना

एह मौका पर कुछ हंसी-मजाक के मुड में घर के भौजाई सब के टारगेट करत गवाला-

गरीबवा के बेटी फलाना देई ना
दइया कोदो फटकी बन देली हो ना

एह मौका पर भौजाई ननद के चुहलबाजी करत कहेली-

धाने के भात मटरवे के गादा (मटर के दाल या तरकारी)
नइहर के माजा ना मिली हो दादा

धान के बोआई कुछ दिन तक चलेला। समूह के रूप में महिला मजदूर लोग तरह-तरह के गीत गावेला, जवना में महिला के ससुरा आ नइहर के संवाद आ दरद छिपल रहेला। ई सब आज भी सुन के रोंवा खड़ा कर देला। अइसहीं एह गीतन में जतसार विधा के गीत प्रमुख रूप से होला। आई, एगो जतसार गीत पर नजर डालल जाव। (जतसार चुंकि जात चला के गावल जात रहे पर ई गीत धान रोपनी में भी परम्परा से गवाला।)

(गीत के प्रसंग बा कि बहिन से भाई भेंट करे गइल बाड़न। बहिन आपन दुख रोअत गीत में कहत बाड़ी..)

पिछली टिकड़िया ए भइया हमरो भोजनवा नू हो
छव मन कुटनी ए भइया, छव मन पिसनी नू हो।
छव मन आहो ए भैया भोजन बनवनी नू हो।
पिछली टिकड़िया ए भैया, हमरो भोजनवा नू हो।
इहो ओरहनवा ए भैया माई से जनी कहीह नू हो।
काहे कि अलगे बिलगे ए भइया माई रोवे लगीहे नू हो।
इहो ओरहनवा ए भइया भाभी से जनी कहीह नू हो।
काहे कि अइले गइले ए भइया भाभी ताना मरीहे नू हो।
इहो ओरहनवा ए भइया चाची से जनी कहीह नू हो।
काहे कि टोलवा परोसवा ए भइया चाची सभे हंसीहें नू हो।
इहो ओरहनवा ए भइया चाचा आगे कहीह नू हो।
काहे कि जेही चाचा कइले हो भइया हमरो अगुवइया नू हो।

उपरोक्त गीत के अरथ सुधी पाठक जरुर समझत होखब कि बहिन दुनों कुल के इज्जत राखे खातिर आपन दुख-दरद केकरा आगे कहे के चाहत बाड़ी आ काहे...।

जतसार से हट के कुछ आऊर पारम्परिक गीतन पर विचार कइल जाव त ऊ किसान आ किसानिन या मरद मेहरारू से जुड़ल बा। ई सब गीत रेडियो पर खेती गृहस्थी कार्यक्रम में ज्यादा सुने के मिलत रहे। एगो पारम्परिक गीत बहुत ही प्राचीन बा जेमें ऊंख बोआई के लेके नया नवेली दुलहिन किसानिन के कुछ शिकायत बा-

ऊंखिया जनी बोअ हो गएड़वा

बेरी बेरी बरजीले तोहरा के बलमुआ से ऊंखिया जनी बोअ हो गयेड़वा (घर के नजदीक)।
कोड़त जोतत लागे छव रे महीनवा, बरीस दिन लागे हो कोलूहड़िया।
सोरहो सिंगार क के गइनी कोलूहड़िया, घुमा के उंखिया मारे हो कुल बोरना।
हाथ तोहके जोड़ीला गोला (बैल के एगो प्रकार) रे बैलवा
तुरा तूहूं अइह हो अपना घरवा।
तोहरा के देब बैला खरी बनऊरवा (बैल के प्रिय खोराक)
बलमुआ लेके सुतब भर आंकवरिया।

अब देखीं एगो आऊर श्रृगांरिक गीत में किसान किसानिन के संवाद। किसानिन के ऊपर गहना कीने के भूत सवार बा। एने किसान भाई खेती में अझुराइल बाड़े। बाकिर खेती भी कइल जरूरी बा आ मेहरारू के गहना भी किनल जरूरी बा। रूसल फूलल मेहरारू से मनावत कहतारे एह गीत में-

काहे खिसिआइल बाड़ू धीरज धरअ मन में
कंगना आ नथुनी गढ़ा देब अगहन में।

पाकी जइहें धानवा, खुशी होई मानवा
सोनरा से कह देब तैयार क दी क्षण में

उंखवा के लादी लादी मिल पर ले जाएब
मिलवा पर जाके हम परची भंजाएब
रात दिन बानी हम तोरे जतन में।

एगो पारम्परिक कृषि गीत में किसानिन के कुछ आऊर दरद झलकेला। एह किसानिन के मरद प्रदेश में बाड़े। किसानिन आपना खेत में धनिया बोअले बाड़ी। फरत फुलात धनिया फसल से ही ई किसानिन आपन दरद के संवाद गीत में करत बाड़ी। गीत के ई विधा झूमर कहाला।

एक किआरी हम रे धनिआ बोअनी
धनिया ए फरेला बरजोरी से।
का तूहूं धनिया हो फरेलअ बरजोरी से
पियवा ए भइले परदेशिया।
बारहो बरीस पर हो पिया मोरे अइहें
ले अइहें मोहे हरी हरी चुड़िया।
चुड़िया पहीरी हम हो चलनी बजरिया
लोग सबे हमके मारेला नजरिया।

फसल जब थोड़ा बढ़ जाला त सोहे के काम लाग जाला। एकरा खातिर जमीन में नमीं के जरूरत पड़ेला। एगो पारम्परिक गीत में प्रसंग बा कि बारिश कम भइला के कारण जमीन बजर हो गइल बा। खेत में खुरूपी नइखे लागत। गावल जाला-

दीदी गइली खेत में खुरूपियो ना लागे रे।
बइठी जंगल में खुदा से पनिया मांगे रे..

खेत के बोअनी के जतना खुशी रहेला ओसे दुगुना खुशी फसल के कटाई में मिलेला। बाकिर ई काम अकेले नइखे हो सकत। एह खुशी में ओह परदेशी सवांग के रहल जरूरी होला। अभी भी फसल के कटाई दवाई पर परदेशी किसान कहीं भी रहे जरूर आवेला। पर एह किसानिन के पति बेचारा त पलटनिया बाड़े। बोर्डर पर देश के रखवाली फौजी बन के करत बाड़े आ एने गहूं के कटनी लागल बा। लाजिमी बा कि किसानिन ई बात कहबे करी एह पारम्परिक गीत के माध्यम से-

लागल बावे चइत के कटनिया हो,
पियवा भइले पलटनिया।
पिया मोरे रहीते त करते कटनिया
पछुआ में करीते दंवरिया हो...
आपना बलमुआ के जेवना जेवइती
आमवा के पिसती चटनिया हो....

धान के फसल कटाये के पहिलही एक प्रकार के चिऊरा तैयार हो जाला जवना के सुरूका चिऊरा कहाला। यानी लागल फसल में से ही सुरूक के चिऊरा कुटा जाला। पहिल अन्न देवता के परोसल जाला। ई पारम्परिक गीत देखीं-

सुरूका ही धानवा के चिऊरा रे चिऊरा
ऊपर सोरहीया गाय के दूध।
जेवे ही बइठेले सब देवता लोग
पतल गइले उधियाय

धान गेहूं के साथे मकइ एगो मुख्य फसल हमनी के इहां मनाला। ई मोट अनाज में आवेला। ई प्राचीन काल से हमनी के मुख्य भोजन ह। परिवर्तन के दौर में एह फसल के वैकल्पिक प्रयोग सब कंपनी तरह-तरह से कर के लोग के परोसत बा आ पइसा अईंठत बा। बाकिर ग्रामीण क्षेत्र में कबो सतुआ, भूंजा, रोटी आ एकर भात बड़ा प्रेम से लोग खात रहे। एकर गुण एतना रहे कि एह फसल पर तरह-तरह के गीत आ लोकोक्ति कहल गइल बा। जेमें भिखारी ठाकुर जी के गीत भी प्रसिद्ध बा-

मकईया रे तोर गुण गावलो ना जाला।
भात करे डभर डभर रोटी छितराला
भईसीं के माठा पर सट सट घोंटाला।

मकई पर प्रसिद्ध बुझउल बा जवन आज भी प्रसिद्ध बा-

हरी थी मनभरी थी, लाख मोती जड़ी थी
राजा जी के बाग में दुशाला ओढ़ के खड़ी थी।

खेती-किसानी से जुड़ल अइसन अनगिनत गीत बा, जवना के संग्रह-संकलन के जरूरत बा।

***

आलेख

ओमप्रकाश अश्क

आज के किचन गार्डन, पहिले के फरहरी... झट से तूरीं, पट से पकाईं !

फरहरी रहला पर केहू के कवनो कबो ई फिकिर ना रहे कि तियन-तरकारी ना रहला पर का होई। झट से लोग फरहरी में जाव आ जरूरत भर के मरिचा, धनिया भा मुरई तूर, खोंट भा उखार के ले आवे। एह फरहरी के सबसे बड़ फायदा ई रहे कि एइमें कवनो अंगरेजी खाद ना परे। अइसहीं पानी में दह-बह के आइल माटी से फरहरी में तियन-तरकारी उपजत रहे।

एह घरी शहरी लोग का सिर पर रूफ गार्डेन आ किचन गार्डेन के सवख सवार बा। केहू गमला में टमाटर रोप के दू-चार गो फरल टमाटर देखावता त केहू झबरल मरिचा के गाछ पर लहालोट होता। इहे काम गांव में पहिले फरहरी में होत रहल हा। ओकरा खातिर कवनो बेसी मेहनतो ना करे के परत रहल हा। सभका घर का इगुआरी-पिछुआरी भा दायें-बायें कम से कम दस-पनरह धूर जमीन खाली रहत रहे। अबहियो लोग एतना भा एकरा से बेसी जमीन छोड़िए के घर बनावता। बाकिर पहिले आ अब में फरक इहे बा कि घर के इगुआरी-पिछुआरी भा अगरी-कगरी जमीन अब मटिहा नइखे रह गइल। चारो ओर चीकन राखे खातिर लोग जमीन के गिट्टी-बालू-सीमिट से पक्का बनवा देता। एकर फायदा एतने बा कि घर-दुआर चीकन हो जाता। धूरा-माटी के झमेला नइखे रहत। गमला में फूल-पत्ती रोपला से घर के सोभा त बढ़ जाता, बाकिर एकर नोकसान केतना होता, ई लोग का तब बुझाता, जब गर्मी में केहू के बोरिंग सूख जाता भा केहू के चापाकल सूखले ढकर-ढकर करे लागता। पकिया घर-दुआर आ पक्की सड़क के लोभ-लालच में पर के आदमी आपन केतना नोकसान करता, ई त तनीमनी अबे लउके लागल बा, जब पानी के बोरिंग, चापाकल भा कुइयां-पोखर सूख जा

तारे सन। बरखा के पानी धरती के भीतर जाव कइसे, सगरी जमीन पर त चीकन राखे खातिर लोग पक्का पिटवा लिहल। पानी धरती में जाए के बदला बह के जियान हो जाता। धरती के भीतर के पानी बोरिंग से टान के लोग निकाल लेता। एह से पानी पाताल धइले जाता। खैर, दोसरका नोकसान अइसन बा, जवना पर हम रउरा सभन के बतावे जा तानी।

अब संजोगे से केहू के घरे लउकेला फरहरी

पहिले आ अब में फरक इहे बा कि पहिले घर मड़ई-पलानी भा खपड़ा-नरिया से छावल माटी के होखे। अरिया-कगरी घर के जरी जवन दू-चार धूर जमीन खाली होखे, ओइमें घेंवड़ा, तरोई, मरिचा, धनिया, मुरई, बगला, राम तरोई, टमाटर, मुरई आ किसिम-किसिम के साग-भाजी के बीया छींट भा रोप दीहल जाव। लउकी-कोंहड़ा, भथुआ आ सेम-कवाछ जइसन लत्तर वाला तरकारी त छान्ही-टाटी पर अपने से पसरत-लमरत चढ़ जाव। एगो तरकारी होखे- सेमरहरिया। ई सगरी किसिम के साग-तरकारी खातिर बाजारे भागे के ना परे। जब से लोग नोकरी-चाकरी खातिर शहर में आवाजाही करे लागल, ओइजा के साफ-सफाई आ पकिया घर ओइसने बनवावे लागल। थोर दिन ले तबो फरहरी लउके, बाकिर जब लोग घर के बाउंडरी आ अगुआर-पिछुआर के पक्का करावे लागल, तब से गांव के फरहरी से नाता टूट गइल। फरहरी रहला पर केहू के कवनो कबो ई फिकिर ना रहे कि तियन-तरकारी ना रहला पर का होई। झट से लोग फरहरी में जाव आ जरूरत भर के मरिचा, धनिया भा मुरई तूर, खोंट भा उखार के ले आवे। एह फरहरी के सबसे बड़ फायदा ई रहे कि एइमें कवनो अंगरेजी खाद ना परे। अइसही पानी में दह-बह के आइल माटी से फरहरी में तियन-तरकारी उपजत रहे।

विलायती खेती से कई गो बेमारी के खतरा

सभे आपन घर-दुआर भा आंगन अब मटिहा का जगहा पक्का रखले बा। पहिले माटी से केहू का एतना घिरना ना रहे त घर-आंगन रोज गोबर-माटी से लिपाव। अब त विलायती घर में आंगन के सवाले नइखे। लोग पढ़-लिख के बाहर कमाये चल जाता त खेती-बारी के करे। फरहरी ओराइए लगली सन। तियन-तरकारी खातिर लोग के अब बाजारे के आस बा। बाजार में जवन तरकारी-भाजी बिकाता, ओकरा के उपजावे में लोग हड़ाहे अंगरेजी खाद डालता। कीरा-फतिंगा मारे खातिर जहर के छिरकाव होता। अब केहू अइसन तरकारी भा साग-भाजी खाई त ओकरा बेमार पड़हीं के बा। पहिले पांच-दस कोस में केहू के कैंसर के बेमारी सुनाई। अब त कैंसर के बेमारी अइसन फइल रहल बा कि दूर-चार गांव में एगो-दूगो केस मिलिए जाता।

एह घरी शहरी लोग का सिर पर रूफ गार्डेन आ किचन गार्डेन के सवख सवार बा। केहू गमला में टमाटर रोप के दू-चार गो फरल टमाटर देखावता त केहू झबरल मरिचा के गाछ पर लहालोट होता। इहे काम गांव में पहिले फरहरी में होत रहल हा। ओकरा खातिर कवनो बेसी मेहनतो ना करे के परत रहल हा। सभका घर का इगुआरी-पिछुआरी भा दायें-बायें कम से कम दस-पनरह धूर जमीन खाली रहत रहे।

खान-पान गड़बड़इला से बढ़ल जाता कैंसर

सरकारी आंकड़ा बतावता कि अपना देस में अगिला पांच साल में कैंसर बेमारी के केस 12 परसेंट बढ़ जाई। एकर माने ई भइल कि साल 2025 ले देस में 15.69 लाख से बेसी कैंसर से बेमार लोग हो जाई। अबे 14 लाख से भी कम लोग के कैंसर बा। अब त बड़का शहरन में कमे उमिर में कैंसर के बेमारी धराए लागल बा। लइकन में सबसे बेसी कैंसर के बेमारी दिल्ली में लोग बतावता। साल 2021 में कैंसर वाला 14.26 लाख लोग रहे। साल 2022 में ई बढ़ के 14.61 लाख हो गइल। साल 2020 में देस में कैंसर से 7.70 लाख लोग मुअल रहे। साल 2021 में ई बढ़ के 7.89 लाख आ 2022 में 8.8 लाख ले पहुंच गइल।

तमाकू बा कैंसर बढ़े के सबसे बड़का कारन

डागदर लोग कैंसर के बेमारी पर रिसर्च करता। ओह लोग के कहनाम बा कि 40 परसेंट कैंसर के केस तमाकू से होता। तमाकू में खाली खैनीए ना आवे, ओह में बीड़ी, सिगरेट, गांजा जइसन चीज भी आवेला। तमाकू के सेवन कइला से अब 20-25 साल के जवान लोग में भी ई बेमारी लउके लागल बा। तमाकू के सेवन करे वाला लोग ई ना जाने कि एकर नोकसान 10-20 साल बाद झेले के परी। तमाकू से होखे वाला कैंसर तुरंते ना पता चले। एकरा आपन लच्छन देखावे में 10-15 साल लाग जाला। जरदा वाला पान, खैनी, गुटका अइसन बिना धुआं वाला तमाकू के सामान भी कैंसर बढ़ा रहल बा।

खान-पान पर राखीं धेयान, तबे बांची राउर जान

डागदर लोग के कहनाम बा कि खाये-पीये में लोग धेयान ना राखी त एह बेमारी के आवे वाला समय में महामारी बने से केहू ना रोक पाई। पानी में आरसेनिक नांव के कवनो जहर कहां से आ गइल बा। बेसी उपज खातिर लोग खाद-दवाई के छिरकाव फसल पर करता। एह से कैंसर बढ़ल जाता। अब बुझाता कि पहिले के फरहरी के साग-बाजी आ तियन-तरकारी केतना नीक रहे। ना कवनो अंगरेजी खाद आ ना कवनो दवाई के छिरकाव। गोबर-माटी से उपजल फरहरी के तरकारी में कवनो अवगुन ना रहे। एही से अब लोग कहे लागल बा कि जैविक खेती करीं।

***

आलेख

पृथ्वी राज सिंह

खेती-बारी: तीना के खेती

तीना के जंगली चाउर कहल गइल बा। एह कारण एकर वैज्ञानिक अध्ययन के ख्याल से बड़ महत्व बा। धार्मिक सांस्कृतिक महत्व त एकर बड़ले बा। रोगी के पथ्य के रूप में भी एकर उपयोग होला। छठ के खरना के प्रसाद के रूप में भी एकर प्रयोग होला। एकरा में प्रचुर मात्रा में पौष्टिक तत्व आ खनिज लवण रहेला। क्षेत्र के अनुसार इ लाल भा भूरा छोट बड़ हो सकेला। छपरा के चंवर में तीना के जवन प्रकार हम देखत बानी ऊ भूरा लाल होला। दाना छोट होला। किसान के खेत से उपराजल, कूटल, छांटल चाउर के खुदी अइसन होला।

खेती-बारी शब्द द्वंद समास के उदाहरण में गीनल जाला जइसे कि लोटा-डोरी। दूनों शब्द अलग-अलग जीवन कर्म आ सामाजिकता से जुड़ल बा बाकिर एक के बिना दूसरका के अर्थ पूरा ना हो सके। कुछ अपूर्ण रह जाई। किसान के जीवन के अर्थ के संपूर्णता से समझे खातिर दूनों सबदन के एक साथ राखे के परी। खेती के संबंध अनाज से त बारी के संबंध फर-फरहरी से। सदियन से चलत आ रहल एह आधारभूत जीवन पद्धति से जुड़ल आ बहु प्रचलित दार्शनिक बात तुलसीदास के बा **"क्षिति जल पावक गगन समीरा"**। एह पंचतत्व के साथ जेतना तरह से जेतना आयाम लेले किसान जीवन साक्षात्कार करेला, ओतना साइते कवनो जीवन व्यवसाय में आदमी करत होई। खेती-बारी में गोड़-हाथ चला के माटी के साथ किसान के सक्रिय आ सीधा संवाद होला। प्रकृति के अउर सब चार तत्वन से सीधा ना बलुक मौन आ शामिल मान लिहल गइल संवाद होला। किसान के बस आ कस माटी तक ले ही रहेला। बाकी तत्व के साथ किसान ईश्वर से प्रार्थना के मार्फत जुड़ेला।

समय, परिस्थिति, मौसम, उपलब्ध संसाधन, औजार आदि के अनुसार खेती-बारी के तरीका फलाफल भी बदलत रहेला। खेती-बारी में प्रकृति के अलावे समस्त जीव-जंतु पशु-पक्षी आदि के भी कवनो न कवनो रूप में भूमिका रहेला। ऐसे खेती-बारी एगो सर्वांग पूर्ण सामाजिक प्राकृतिक आध्यात्मिक सांस्कृतिक भूमिका ह मानव जाति के। ईश्वर भा प्रकृति भा पर्यावरण के साथ मेलजोल संस्कार साक्षात्कार के दृष्टि से मानव के दूसर कवनो भूमिका एकरा आगे टीक ना सके। खेती-बारी जीव जगत के बहुत बड़ संसार के अपना में समाहित कईके भा साथ लेके चले वाला क्रिया ह।

मानल जाला कि खेती के काम अधिक बल आ श्रम के जोहेला जबकि बारी वाला काम थोड़े कम मेहनत खोजेला।

एह लेख में हम अलग-अलग खेती आ बारी के बारे में कुछ आपन अनुभवन के साझा करब जवन लगभग 35 बरिस पुरान भइला के बादो हमार मन मस्तिष्क में टिकल बा।

खेती आदमी के सबसे आदिम वृत्ति (primeval engagement) ह। एह आदिम वृत्ति के ओइसने एगो आदिम तरीका के बात करब। हां, तीना के खेती आ संग्रह के बारे में। खेती एगो वृत्ति के साथ एगो संस्कृतियो ह। एह में कुछ निश्चित तरीका, प्रविधि, टेक्निक अपनावल जाला, अनाज के बोए, पटावे, संग्रहण,

उपभोग जोग बनावे के क्रम में। तीना के संग्रह में खेती के संस्कृति के 2, 3 गो अवस्था के जरूरत ना परे। सीधा संग्रह कइल जाला। संग्रह करे के तरीका औजार थोड़े अलग होला। बहुत लोग जे एह तरीका के नजदीक से ना देखले होखी, त हमरे नियर अचंभा के दौर से गुजरी। हम जब पहिलका बेर देखनी त हमार मन अचरज से भर गइल रहे।

तीना के बन उपज कहल जाला। पोखरा, गडहा, धनहर खेत के ऊ खाली भाग जहां हर बैल ना चले, पानी लागल रहेला, ओहिजा तीना घास खानी जामेला। जमीन के मालिक एसे कवनो मतलब ना राखस। तीना के ऊपज के क्षेत्र बा, हिमालय के तराई वाला भाग जहां पहाड़ से टघर के आके पानी जमा होला। चूंकि बन उपज के श्रेणी में आवेला, एसे खेत जोड़े कोड़े के जरूरत ना परे। हर बरसात में अपने आप पिछिलका बरिस के झरल बिया अपने आप बरसात में जाम के बढ़ जाला।
कृषि संबंधी अध्ययन में एक जगह रिपोर्ट में लिखित बा कि तराई वाला भाग में मुख्य रूप से भर जाति के लोग एकर संग्रह करेला। ओहि लोग के मार्फत ई अनाज वितरक आ दुकानदार के लगे पहुंचेला। जहां से छठ व्रती लोग कुछ ग्राम छटाक कीन के आपन भूखला के खरना के प्रसाद खाती उपयोग करेला।

खेती-बारी में गोड़-हाथ चला के माटी के साथ किसान के सक्रिय आ सीधा संवाद होला। प्रकृति के अउर सब चार तत्वन से सीधा ना बलुक मौन आ शामिल मान लिहल गइल संवाद होला। किसान के बस आ कस माटी तक ले ही रहेला। बाकी तत्व के साथ किसान ईश्वर से प्रार्थना के मार्फत जुड़ेला।

चूंकि अब जमीन कम हो रहल बा, बहुत परती गडहा भी जोत के खेत बनावल जा रहल बा, साथे साथे छठ व्रत करे वाला लोगन के भी संख्या में बहुत वृद्धि हो रहल बा, एसे खरना के प्रसाद खातिर अब दोसरो प्रकार के चावल के मीठा में भा ऊख के रस में मिलाके पकावल जा रहल बा। बाकिर पारंपरिक मान्यता के अनुसार जहां सहज उपलब्ध बा आजो ऊ परिवार, तीना के चिन्हत तीने के खरना के प्रसाद के रूप में तैयार करेला।

छपरा के प्रभुनाथ नगर में जहां हम आपन नया निवास में बानी उहाँ भी दिवाली के आसपास तीना संग्रह करत कुछ लोग के देखे के अवसर हमरा मिलल बा। खेती-बारी में स्वाभाविक रूचि भा उत्सुकता से एक बेर हम पूछनी तब पता चलल कि ई लोग जवन चीज के झार के संगरह कर रहल बा ओकर नाम तीना ह। ऊ लोग नगर के पास वाला दलित बस्ती के ह। छपरा जंक्शन के उत्तर के तरफ भी चंवर में आ छपरा पटना फोरलेन राजपथ के आसपास वाला भाग में बहुत बड़ चंवर बा जहां तीना उपजेला। पास के गांव के लोग के स्थानीय लोग बिन टोलिया कहेला। माने ओह टोला में बास करे वाला लो बीन जाति के ह आ इहे लोग तीना के संग्रह करेला।

तीना संग्रह के प्रक्रिया शुरू होला दिवाली के आसपास जब खेतन में बरसात के पानी

कम होखे लागेला। तब किसान चंवर में उतर जाले। जोंक कीट सांप आदि से बचे खातिर ऊ लोग ओही हिसाब से आपन कपड़ा भा साड़ी के व्यवस्थित कर लेला। मेहरारू आपन साड़ी के लपेट के मर्द के धोती अइसन पोंछिटा बांध ले ली। कुछ मेहरारू के हम पुरान फुल पैंट पेन्ह के भी चंवर में काम करत देखले बानी। टीना के पवधा चार साढे 4 फुट के होला। ओकर माथ के समेट के ऊपर से धान के अंटिया अइसन बांध दिहल जाला। ई तीना बटोरे के पहिलका अवस्था ह। ओह समय जब शीतकाल के आगाज के संभावना लउके लागेला। पतई पीयराए लागेला। तीना के बाली विकसित धान के बाली नियर मोट आ बड़ दाना के ना होला। छोट बाली में कुछ धान फरेला। हर दाना में एक इंच ले टुंड़ होला जवन कवनो भी दोसर मुलायम वस्तु से सट जाला भा गूंथा जाला। खोइया आ टुंड़ हटा देला पर एगो तीना के चाउर सामान्य चाउर के पांचवा भा छठा हिस्सा के बराबर होई।

दोसरका अवस्था में तीना के बटोरल जाला। बटोरे में बांस भा बेंत के एगो धनुष जस मोड़ल आ बीनल औजार के प्रयोग होला जवना में तीना के झार लिहल जाला। औजार के कार्यप्रणाली देखे खातिर साथ में लागल फोटो भी देख लीहीं।

तीना संग्रह करे के एगो दोसर तरीका भी बा। औजार के दोनों छोर पर दुगो रस्सी बांहल रहेला। तीना झारे वाला दूनो छोर के रसियन के पकड़ के ओकरा के पाकल तीना के फसल पर एगो आधा चक्र नियर मार्ग में घुमावेले, बहारेले। चूंकि तीना के दाना के ऊपर गेहूं जस टुंड़ होला, तीना झर के एक दूसरा से अझुरा के औजार के गहिर भाग में झर के बटोरा जाला। कुछ देर किसान ओह के बटोर के एगो छईंटी भा टोकरी में जमा कर ले ले।

छपरा के प्रभुनाथ नगर में जहां हम आपन नया निवास में बानी उहाँ भी दिवाली के आसपास तीना संग्रह करत कुछ लोग के देखे के अवसर हमरा मिलल बा। खेती-बारी में स्वाभाविक रूचि भा उत्सुकता से एक बेर हम पूछनी तब पता चलल कि ई लोग जवन चीज के झार के संगरह कर रहल बा ओकर नाम तीना ह। ऊ लोग नगर के पास वाला दलित बस्ती के ह। छपरा जंक्शन के उत्तर के तरफ भी चंवर में आ छपरा पटना फोरलेन राजपथ के आसपास वाला भाग में बहुत बड़ चंवर बा जहां तीना उपजेला। पास के गांव के लोग के स्थानीय लोग बिन टोलिया कहेला। माने ओह टोला में बास करे वाला लो बीन जाति के ह आ इहे लोग तीना के संग्रह करेला।

वैज्ञानिक अध्ययन

तीना के जंगली चाउर कहल गइल बा। एह कारण एकर वैज्ञानिक अध्ययन के ख्याल से बड़ महत्व बा। धार्मिक सांस्कृतिक महत्व त एकर बड़ले बा। दलित लोगन में पर्व त्योहार में एकर प्रयोग भोजन भा प्रसाद के रूप में होला। रोगी के पथ्य के रूप में भी एकर उपयोग होला। छठ के खरना के प्रसाद के रूप में भी एकर प्रयोग होला। एकरा में प्रचुर मात्रा में पौष्टिक तत्व आ खनिज लवण रहेला। कुछ सरकारी औपचारिक सांस्कृतिक संस्थान पारंपरिक पारिस्थितिकी इकोलॉजिकल ज्ञान के अध्ययन के अधीन पूर्वी उत्तर प्रदेश के भागन में एक अध्ययन कइले बा। पावल गइल बा कि भर समुदाय के लोग एह जंगली चावल के पारंपरिक रूप से संरक्षण करता बा। क्षेत्र के अनुसार इ लाल भा भूरा छोट बड़ हो सकेला। छपरा के चंवर में तीना के जवन प्रकार हम देखत बानी ऊ भूरा लाल होला। दाना छोट होला। किसान के खेत से उपराजल, कूटल, छांटल चाउर के खुदी अइसन होला।

कृषि वैज्ञानिक शब्दावली में पूर्वी उत्तरप्रदेश आ बिहार मे पैदा भइल बन चाउर आनुवांशिक रूप से बेहतर किस्मन (ओरीजा सताइवा एल) के तुलना में मौसम के चरम स्थितियन (उच्चतम निम्नतम तापमान, बरखा) के सामना करे में अधिक सक्षम बा। बन चाउर के सात किसिम के पारिस्थितिक तंत्र(Micro eco system) कृषि वैज्ञानिक लोग पहिचान कइले बा, कारी, बड़ैला, चममो, करमोल, भैसिकी, भैंसाला आ खोडिलिया। तीना के दुगो प्रकार पहचान कइल बा, तीना पातली आ तीना मोती। दूनों प्रकार के तीना आजीविका खातिर उपयुक्त मानल गइल बा।

तीना के चाउर में पोषण के तत्व बहुत मात्रा में रहेला। तीना बिहार के तराई के इलाका, पूर्वी उत्तर प्रदेश आ नेपाल में काफी प्रसिद्ध बा। त्यौहार के दौरान एकर मांग बढ़ जाला। तीना के चाउर हर महीना एकादशी के, आ बरिस में दू बेर नवरात में खाइल जाला। पूर्वी उत्तर प्रदेश में ऋषि पंचमी गणेश चतुर्थी के एक दिन बाद होला। ओह दिन उपवास के बेरा पानी में उगे वाला करमी के साथ खाइल जाला।

आज के दुनिया में जब मूल जीन से छेड़छाड़ कइ के नया उपज हासिल कइल जा रहल बा, तीना के चाउर के महत्व बढ़ जात बा। मूल आनुवंशिक जीन के संरक्षण खातिर आ एह में पावल जाए वाला कई प्रकार के गुणन के उपयोग से आजकल कई प्रकार के अधिक उपयोगी प्रकार के बिकास आनुवंशिक इंजीनियरिंग के सहायता से कइल जा रहल बा। तीना प्रकृति आ जीव जगत, वनस्पति जगत के अमोल धरोहर बा।

***

आलेख

शशि कांत मिश्र

एलोवेरा के डबल धमाल: चेहरा लाल, जेब मालामाल!

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम एलोवरा के खेती खातिर परफेक्ट बा। बस दूगो बात के खास ख्याल रखे के पड़ी। पहिला, खेत अइसन होखे के चाहीं जेकरा में कौनो सूरत में पानी ना जमा होखे। पानी एलोवेरा के दुश्मन ह। जड़ में तनि मनी पानी जमल ना कि एलोवेरा राम स्वर्ग सिधरलन। एही से बलुई माटी में एलोवेरा के खेती सबसे बढ़िया होला। बलुई माटी में पानी पड़बो कइल त उ तुरंते ससर के नीचे पहुंच जाला। दोमटो आ लाल माटी में एलोवेरा कइला में कौनो दिक्कत नइखे लेकिन इ बात के ध्यान रखे के पड़ी कि जड़ में कौनो सूरत में पानी ना जमे।

कमाल के चीज ह एलोवेरा। कुदरत के दिहल अइसन नायाब तोहफा जेकर रऊंवा रेगुलर सेवन करीं त देही के अंग प्रत्यंग चमक जाई आ कई गो जानलेवा बीमारी रऊंवा लगे फटकबो ना करी। इ करोना काल में त एलोवेरा एतना पॉपुलर भइल कि गांव देहात से ले के बड़ बड़ शहर तक में लोग एलोवेरा के माला जपे लगलन। अभी एलोवेरा के मार्केट में जबरदस्त डिमांड बा जबकि डिमांड के हिसाब से प्रोडक्शन काफी कम हो रहल बा। त रऊंवा खातिर इहे सही मौका बा एलोवेरा से खेती से मोटा माल कमाए के।

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम एलोवरा के खेती खातिर परफेक्ट बा। बस दूगो बात के खास ख्याल रखे के पड़ी। पहिला, खेत अइसन होखे के चाहीं जेकरा में कौनो सूरत में पानी ना जमा होखे। पानी एलोवेरा के दुश्मन ह। जड़ में तनि मनी पानी जमल ना कि एलोवेरा राम स्वर्ग सिधरलन। एही से बलुई माटी में एलोवेरा के खेती सबसे बढ़िया होला। बलुई माटी में पानी पड़बो कइल त उ तुरंते ससर के नीचे पहुंच जाला। दोमटो आ लाल माटी में एलोवेरा कइला में कौनो दिक्कत नइखे लेकिन इ बात के ध्यान रखे के पड़ी कि जड़ में कौनो सूरत में पानी ना जमे। खेत में तनि ऊंच हांग बनाई के एलोवेरा लगाईं त औरी बढ़िया। काहें कि तब बरखा बूनी के पानी से भी राऊर फसल सेफ रही।

दोसर बा इ बा कि एलोवेरा जादा ठंड बरदाश्त ना कइ पावेला। पाला से त एकर बापो बैर ह। ओस, पाला में एकर फसल बरबाद होखे लागेला। गरम मौसम में एकर फसल लहलहाला। अगर राऊर बेल्ट में बहुत जादा ठंडा पाला पड़त होखे त फेन एलोवेरा रऊंवा खातिर फायदेमंद ना रही। एलोवेरा के फसल खातिर माटी तनि मजबूत चाहीं। पीएच मान 6 से ऊपर होखे त बहुत बढ़िया। माटी कमजोर होखे त ओकरा के कम्पोस्ट से मेकअप कइल जा सकत बा। वर्मी कम्पोस्ट खेती खातिर सबसे बढ़िया बा। वर्मी कम्पोस्ट ना मिले त फेन गोबर के खाद दिहीं।

एलोवेरा के खेती में एगो बढ़िया बात इ ह कि एकरा में कीड़ा फतिंगा के प्रकोप ना होला। गाय गोरू आ बकरी भी एकरा के ना चरेला। एही से एकरा में कौनो तरह के कीटनाशक चाहें केमिकल के छिड़काव के जरूरत ना होला। लेकिन खेत तैयार करे के समय जंगल झाड़ जरूर साफ कर देब। खेत में घास फूस रही त राऊर फसल के प्रॉपर ग्रोथ ना होई। खेत में ढेला माटी भी ना होखे के चाहीं। खेत के बढ़िया से चास लगाइके ओपर हांग चला देब।

एलोवेरा के खेती में एगो बढ़िया बात इ ह कि एकरा में कीड़ा फतिंगा के प्रकोप ना होला। गाय गोरू आ बकरी भी एकरा के ना चरेला। एही से एकरा में कौनो तरह के कीटनाशक चाहें केमिकल के छिड़काव के जरूरत ना होला। लेकिन खेत तैयार करे के समय जंगल झाड़ जरूर साफ कर देब। खेत में घास फूस रही त राऊर फसल के प्रॉपर ग्रोथ ना होई। खेत में ढेला माटी भी ना होखे के चाहीं। खेत के बढ़िया से चास लगाइके ओपर हांग चला देब।

एलोवेरा जाड़ा छोड़ के कबो लगावल जा सकेला। वइसे फरवरी-मार्च आ सितंबर-अक्टूबर एकरा के लगावे के सबसे सूटेबल टाइम ह। अगर रऊंवा पहिला बार फसल करत बानी त कौनो अइसन किसान से एकर बिया ले सकत बानी जे पहिले से एकर खेती करत बाड़न। आपन इलाका के कौनो बढ़िया नर्सरी वाला से भी रऊंवा बिया ले सकत बानी। एक बार दोसरा से बिया ले ला के बाद फेन रऊंवा अपने से बिया तैयार कइ सकत बानी।

एलोवेरा के खेती के सबसे बढ़ फायदा इ होला कि एकबार फसल लगवला के बाद रऊंवा लगातार चार-पांच साल ओकरा से पइसा बटोर सकत बानी। बस ओकर पत्तई आ छोटका गांछ निकलला के बाद जड़ के बढ़िया से खाद पानी देइ के खेत के नया सिरा से तैयार कइ देब। एक पौधा से दोसर पौधा के बीच के दूरी करीब दू फीट रहे के चाहीं।

एलोवेरा बेचे खातिर रऊंवा आयुर्वेदिक कंपनी कुल से संपर्क कइ सकत बानी। आयुर्वेद के दुनिया में अभी एलोवेरा के गजब डिमांड बा। कंपनी कुल किसान लोग के एडवांस देइ के कॉन्ट्रैक्ट फॉर्मिंग भी करा रहल बा। ओकरा खातिर रऊंवा कंपनी से पहिले बतिया सकत बानी।

जहां तक एलोवेरा में लागत आ प्रॉफिट के बात बा त मोटा मोटी एकर खेती में लागत के पांच से छह गुणा प्रॉफिट हो जाला। बाकी बहुत कुछ राऊर फसल आ मार्केट रेट पर डिपेंड करी। एक अनुमान के मुताबिक एक एकड़ खेत से रऊंवा साल में तीन से चार लाख तक आराम से कमा सकत बानी।

***

किसान कवितावली: रेगिस्तान में एक सोंधी ठंडी हवा के बयार जैसा है

किसानों पर, खेत खलिहान और गांवों पर लिखने-पढ़ने की रिवायत इन दिनों लगभग खत्म सी हो गई है। कारण कई हैं पर अभी उसकी चर्चा करना उचित नहीं होगा। गांवों में शहर बनने की होड़ मची हुई है, हमारे रीति रिवाज, तीज त्यौहार, कहावत, मुहावरों के साथ ही क्षेत्रीय बोली भाषाएं भी धीरे-धीरे दम तोड़ रही हैं। ऐसे दौर में देश की एक बेहद सशक्त समृद्ध बोली 'भोजपुरी' में केवल 'किसानों' पर केंद्रित 'रचना-संग्रह' का आना रेगिस्तान में एक सोंधी ठंडी हवा के बयार जैसा है।

देश भर के भोजपुरी बोलने वाले नामचीन लेखकों को ढूंढना, उनसे संपर्क करना और इन अति व्यस्त महानुभावों से किसानों पर केंद्रित कविताओं, लेख, साक्षात्कार आदि लेकर उन्हें भोजपुरी जंक्शन के प्लेटफार्म पर एकत्र करना, और बेहद सधे सुघड़ संपादन के बाद इतने अल्प समय में उसका बेहतरीन रंग-रूप सज्जा में प्रकाशन करवा पाना यह सब बेहद ही श्रमसाध्य, धनसाध्य और असाधारण कार्य है। और यह असंभव सा लगने वाला कठिन कार्य केवल इसलिए संभव हो पाया, क्योंकि इसे करने वाले भाई मनोज भावुक जी भी कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। ईश्वर प्रदत्त बहुमुखी प्रतिभा के धनी भाई मनोज भावुक का परिचय संसार तथा मित्रता का दायरा देश प्रदेश की सीमाओं से परे दिग दिगंत तक बहुत ही व्यापक है। ये भावुक तो हैं ही सो मित्रों का प्रेम भी इन्हें भरपूर मिला है। अपनी इन्हीं क्षमताओं के कारण उन्होंने यह दुष्कर भगीरथ कार्य कर दिखाया है। भोजपुरी जंक्शन के इस अंक में मेरी एक कविता भी प्रकाशित हुई है। इस कविता का बेहतरीन अनुवाद प्रसिद्ध कवि-गजलकार आदरणीय अनिल दुबे 'अंशु' ने किया है। मैं यह कह सकता हूं कि अनिल जी के सशक्त भावानुवाद ने मेरी इस कविता की ताकत में और इजाफा ही किया है।

डॉ. राजाराम त्रिपाठी, डीएनके कालोनी, कोंडागांव बस्तर- छत्तीसगढ़

भोजपुरी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में एक अनूठी पहल

भोजपुरी की आनलाइन साहित्यिक पत्रिका 'भोजपुरी जंक्शन' के ज़िद्दी और जुनूनी संपादक सुपरिचित कवि-गीतकार मनोज भावुक ने इसका मई-जून, २०२३ अंक किसान कवितावली भाग-१ के रूप में जारी किया है। इस अंक को पढ़ते हुए कई बातें जेहन में उभरती हैं। मैंने उन्हीं बातों को यहां दर्ज करने की कोशिश की है ।

दरअसल भारत में कृषि सभ्यता और संस्कृति के भीतर इन दिनों जो संकट गहराया हुआ है, वह प्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण जीवन एवं लोक से ही सम्बंधित है। जब ग्राम्य जीवन एवं संस्कृति का पुराना स्थिर ताना-बाना टूटेगा तो जाहिर-सी बात है कि कृषि व्यवस्था का पुराना ढांचा भी ध्वस्त होता चला जाएगा। दरअसल जो पूरा भोजपुरी क्षेत्र है, वह कृषि व्यवस्था से प्रमुख रूप से जुड़ा रहा है। इस कृषि क्षेत्र की गरीबी, अभावग्रस्तता, समस्याओं,तकलीफों और संघर्षों को भोजपुरी के कवियों-गीतकारों ने हमेशा से सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करते रहने की कोशिश की है। गोरखनाथ, कबीर, महेंद्र मिश्र, भिखारी ठाकुर , मनोरंजन प्रसाद सिंह, मोती बीए, बावला जी, हरिराम द्विवेदी, रमता जी, दुर्गेश अकारी, गोरख पाण्डेय, विजेन्द्र अनिल से लेकर आज तक यह परंपरा अबाध रूप से चली आ रही है।

'भोजपुरी जंक्शन' के संपादक कवि-गीतकार मनोज भावुक ने भोजपुरी के ६२ नए-पुराने कवियों-गीतकारों और गजलकारों की ६२ रचनाओं को अपनी पत्रिका के मई-जून २०२३ अंक में प्रकाशित किया है जो किसान जीवन से सरोकार रखती हैं। यह भोजपुरी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में एक अनूठी पहल है। वे किसान, किसानी के पक्ष को रखते हुए अपने संपादकीय में लिखते हैं --

"पूरा देश के पेट भरे खातिर बोझा ढोवे वाला किसान कबो-कबो अपने खातिर बोझा काहे बन जाला? एह कृषि प्रधान देश में अगर केहू सबसे असहाय, मजबूर आ लाचार लउकत बा त ऊ किसाने बा। ... जोताई से लेके अनाज के दँवाई आ ओसवनी तक सब काम मशीन करे लागल आ बैल राम जनमते रिटायर हो गइलन। जाहिर बा हर, फार, पालो, हरीस, परिहथ, कुदार, खुरपी, हंसुआ, ठेहा, गंड़ासी, नाद, खूंटा ... ई सब नया जेनेरेशन खातिर बुझउअल बा। गनीमत बा कि कहीं-कहीं मटकोर के ई गीत आजो सुनाई पड़ जाता कि 'कहवाँ के पीयर माटी, कहाँ के कुदार हे'... खेती से नवही लोगन के पलायन आ अरुचि त सबसे बड़ समस्या बा। 'जय जवान जय किसान' के नारा बा बाकिर खेती खातिर कतहूँ जय-जय नइखे। ... भूख लगला पर केहू नोट ना खाई। अन्नदाता के तकलीफ समझे के पड़ी।"

इस अंक में कई पुरानी पढ़ी-सुनी गई कविताएं हैं तो कुछ इधर की लिखी कविताएं भी हैं। इनमें कविता की कई शैलियां हैं -- अतुकांत से लेकर तुकांत तक, गीत से लेकर गजल तक। इनमें कुछ में पुरानापन दिख रहा है तो कुछ पहले लिखी जाकर भी नयी और प्रासंगिक हैं। इस संदर्भ में विनय राय बबुरंग का गीत पढ़ सकते हैं -- "माई रे माई बिहान होई कहिया, भेड़ियन से खाली सिवान होई कहिया।" इस अंक को पढ़ते हुए बराबर भोजपुरी भाषा की शक्ति का अहसास बना रहता है। मनोज भावुक की कोशिश एवं उनके नए प्रयोग का स्वागत होना चाहिए। अब समय आ गया है कि हमसब अपनी संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सोचें। संपादक मनोज भावुक को, उनकी पूरी टीम को बधाई और शुभकामनाएं।

चंद्रेश्वर, वरिष्ठ साहित्यकार

भोजपुरी जंक्शन के ई अंक एगो बेजोड़ उपलब्धि बा

भोजपुरी जंक्शन के ई अंक एगो बेजोड़ उपलब्धि बा। जाने, कतना समय आ श्रम के आहुती देके, आ कतना करेज के भाव-चाव के कमल के फूल अरपि के कवनो साहित्य के अइसन दउलत मिलेला। मनोज भावुक जी, राउर ई देन भोजपुरी साहित्य के इतिहास में सोनहुला अच्छरि में लिखाई।

हरेराम त्रिपाठी चेतन, वरिष्ठ साहित्यकार

मील के पाथर

भोजपुरी साहित्य में ई अंक मील के पाथर साबित होई, एमें कउनों संका नइखे। बधाई आ सुभकामना बाटे ।

सविता सौरभ, वरिष्ठ साहित्यकार

एक सांस में पूरा पढ़ी गइनी

बहुत बढ़िया अंक निकलल बा। एक सांस में पूरा पढ़ी गइनी। पहिले लागल संपादकीय बहुत अच्छा लिखल बा। एकरे बाद एक से बढ़ के एक कविता मिलल। गांव आ गांव के लोग आंखी के सोझा आ गइल। किसानी के सुख, दुख आ ओपर आइल संकट, कुल ए अंक में बा। बेहतरीन अंक।

डॉ. दिवा, अहमदाबाद

लहालोट बा मन

हर पेज पर, रचनाकार आ सम्पादक के मेहनत झलक रहल बा, लहालोट बा मन, इतिहास रचत काम काज के देवता (मनोज जी) के शत-शत नमन।

मिथिलेश गहमरी, कवि

ऐतिहासिक महत्व के संकलन

बहुते सुंदर आ संग्रहणीय संकलन के संपादन संभव हो सकल बा। भोजपुरी साहित्य के विकास खातिर एह तरह के संकलनन के ऐतिहासिक महत्व बा। हार्दिक बधाई आ ढेर शुभकामना।

गुरुचरण सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार

किसान कवितावली: केकर चर्चा करी, केकर छोड़ी, बुझाते नइखे !

"भोजपुरी जंक्शन" के किसान कवितावली, भाग-1 के अंक अब तक के सब विशेषांक में सर्वथा अलग आ विशिष्ट बा, ई कहे में हमरा तनिको दुविधा नइखे। 62 कवियन के 62 रचना के संकलन आ चयन करे में संपादक जी के केतना दिमागी कसरत करे के पड़ल होई, ई हम कल्पना क सकेली।

ताज्जुब के बात त ई बुझाला कि संपादक जी "भोजपुरी जंक्शन" के विशेषांकन के जे लाइन लगा देले बानी ऊ संभव कइसे होता? लगातार विशेषांक। विशेषांक के प्रकाशन हंसी-ठट्ठा ना होला।

हम सबसे पहिले संपादक श्री मनोज भावुक जी के भोजपुरी के ई बेमिसाल सेवा खातिर प्रणाम कर तानी आ भोजपुरी से स्नेह रखे वाला सभ लोग से आग्रह करऽतानी कि श्री भावुक जी के लड़ाई में सहयोगी बनी जा। हर विशेषांक खातिर बढ़िया आ खाटी भोजपुरिया खुशबू निकलत रचना के संपादक जी के लगे ढेर लगा दी जा।

"भोजपुरी जंक्शन" के किसान कवितावली विशेषांक, भाग 1, निश्चित रूप से बहुत दिल से पढ़े वाला आ संग्रहणीय बा। हम त अबकी ई विशेषांक के प्रिंट आउट निकलवा लेले बानी। ओसे पढ़े में बहुत आसानी हो गइल बा आ संग्रह लायक भी हो गइल बा। हम त सबका के इहे राय देब कि "भोजपुरी जंक्शन" के प्रत्येक अंक के प्रिंट आउट निकलवा के पढ़ी, जौन लाइन बढ़िया लागे ओकरा के अंडरलाइन करीं, हाइलाइट करीं आ ओतहिए हासिया पर आपन प्रतिक्रिया गोंजत रहीं। फेर आपन प्रतिक्रिया के अपने से संपादित कर शेयर करी। राउर विचार हमनियो के पढ़े के मौका मिली आ रउआ त अच्छा लगबे करी, हमनी के संपादक जी के भी बहुत सकारात्मक फीडबैक मिली। उहाँ के मेहनत के एकरा से बड़का पुरस्कार दोसर का हो सकेला ?

प्रस्तुत विशेषांक के सबसे बड़ा विशेषता ई बा कि 62 रचनाकर लोग के 62 कविता में कौन केकरा से कम बा भा बेसी बा कहल ना जा सकेला। किसान कवितावली के पहिलका कविता "जमीन के गीत" जे डॉ. श्री अवधेश प्रधान जी के रचना ह पढ़ला पर एक-एक अक्षर सीधा करेजा पर लागत बुझाता।

"जमीनिया न देबो जुलुमियन का हाथे।"

कवि का-का ना दिहे आ केकरा-केकरा के ई क्रमिक रूप से बतावताड़न,

"जिनिगिया ना देबो मुदईयन के हाथे"
"परनवा ना देबो कसइयन के हाथे"
"सनेहिया ना देबो निछोहियन के हाथे"
"इजतिया ना देबो पपियन के हाथे"
फिर
"अनेतिया ना सहबो सहेबवन का हाथे
कटोरवा ना थम्हबो लुटेरेवन के हाथे
ई नचिया ना नचबो लफंगवन का हाथे
कनूनिया ना देबो डकुईयन के हाथे"

किसान के धन का होला ?

जिनगी , परान, प्रेम, इज्जत, नैतिकता, कायदे-कानून के प्रति निष्ठा। किसान के ईहे नू ताकत आ संबल ह। किसान केतना आत्मविश्वास से ई सब कौनो जोर-जबरदस्ती से देवे के तइयार नइखे। ई कविता के उ पंक्ति हई स जे किसान के बेबसी आ उ बेबसी के बावजूद आपन वजूद बचावे के ताकत बतावता। केतना ताकत बा ई शब्दन में कि ई सीधा हृदय के गहराई में उतर जाता।

उपरोक्त कविता के बाद संपादकीय बा जे हर बार लेखा श्री मनोज भावुक जी के मन के वास्तविक भाव आ संवेदना प्रकट करत बा। श्री मनोज जी के संपादकीय बार-बार पढ़ेवाला होला। पढला पर बुझाता, मनोज जी बगले में बइठ के बतिआवत बानी।

संपादकीय में मनोज जी सवाल करऽतानी,-"कब होई किसान बनला पर छाती उतान?"

बा केहू के लगे एकर जवाब?

परंपरागत खेती आ आज के खेती, खेती-बाड़ी से अंजान आज के युवा पीढ़ी, अपना खाटी देहाती संस्कृति आ रिवाज से अनभिज्ञता, सरकार आ राजनीतिक पार्टीयन द्वारा वोट खातिर किसान के भावना से खिलवाड़, सबका के भोजन प्रदान करे वाला अन्नदाता के घोर उपेक्षा, ई सब सवाल उठवले बाड़े मनोज जी अपना संपादकीय में, बाकिर एकर कौनो जवाब केहू के लगे नइखे।

अखबारन के हजार पेड संपादकीय पर भारी बा ई एगो भोजपुरिया संपादकीय।

किसान कवितावली में जेतना भी रचना बा सब एक से एक बा। श्री विनय राय बबुरंग जी के "बिहान होई कहिया", डॉ. श्री अशोक द्विवेदी जी के "मड़ईया मोरी झाझर लागे", पंडित श्री हरिराम द्विवेदी जी के "ई फसिलिया न कबहु पियासल रहे", एकरा अलावे डॉ. हरेराम त्रिपाठी "चेतन", श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी, श्री डॉ. चंदेश्वर, श्री मार्कण्डेय शारदेय, डॉ. श्री गोपाल ठाकुर, श्री तंग इनायतपुरी, श्री डॉ. कमलेश राय, डॉ. शिप्रा मिश्रा, श्री मनोज भाउक जी, श्री अखिलेश्वर मिश्र जी, श्री संगीत सुभाष जी आदि विद्वान रचनाकार लोग के साथे सबकर रचना दिल के छूवे वाला बा। केकर चर्चा करी, केकर छोड़ी, बुझाते नइखे।

ई बेहतरीन "किसान कवितावली" खातिर संपादक जी के अनघा बधाई आ साधुवाद। भोजपुरी खातिर रऊआ लड़ाई में हमनी सभे भोजपुरिया रउआ साथे बा।

अजय कुमार पाण्डेय, रामनगर, पश्चिमी चंपारण, बिहार

मार्मिक और जागरूक करने वाली रचनाएँ

बहुत ही सुंदर विषय और उतनी ही सुंदर सुंदर रचनाएँ, कुछ अत्यंत मार्मिक तो कुछ विचारणीय और जागरूक करने वाली रचनाएँ।

वीणा सिन्हा, अमेरिका

बड़ा सुन्नर काम भइल बा

वाह मनोज बाबू, भोजपुरी में खेती किसानी के बात ना होई त कवन भाषा में होई। बड़ा सुन्नर काम भइल बा।

कमलेश पांडेय, सुप्रसिद्ध लेखक

चुस्त दुरुस्त अंक

चुस्त दुरुस्त लक्ष्य पर निशाना वाला संपादकीय। बेजोड़। कमाल के अंक ।

मंजुश्री, वरिष्ठ लेखिका

साहित्य के संविधान जइसन काम

मील के पत्थर वाला काम भाई मनोज भावुक जी कर रहल बाड़ें। भोजपुरी काव्य अउरी साहित्य के संविधान जइसन काम हो रहल बा। हिरदया से बधाई।

डॉ मनोज कुमार सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार

बेजोड़ संग्रह भइल बा !

बेजोड़ संग्रह भइल बा ! जतना बढ़िया ढंग से विषय वस्तु के संपादक जी परोसले बानी ओहू से अद्भुत त ई बात एह पत्रिका में झलकत बा कि सारा कविता अपना गेयता धर्म से ओत-प्रोत बा! ई बेजोड़ प्रस्तुति, संपादक जी के भीतर छुपल सामवेद आ माँ सरस्वती के विशेष कृपा प्रसाद के परिणाम बा, जवना के चलते, पत्रिका "किसान कवितावली" ना रहके ई अब "किसान गीतांजलि" नियन हो गइल बा!! पुनः आभार।

अनिल कुमार दुबे अंशु, कवि

ई काम भोजपुरी के धरोहर बा

मनोज भावुक जी बड़ काम कर रहल बानी। ई काम भोजपुरी के धरोहर बा। आगे कबो एही नेव पर भोजपुरी के राजगढ़ बनी।

मार्कण्डेय शारदेय, वरिष्ठ साहित्यकार

बड़हन आ ऐतिहासिक काम

कमाल के अंक। बहुत कम समय में बड़हन आ ऐतिहासिक काम करेवाला भोजपुरिया रचनाकार के नाम मनोज भावुक ह!

शंकर मुनि राय गड़बड़, वरिष्ठ साहित्यकार

'भोजपुरी जंक्शन' के हरेक अंक बेमिसाल!

'भोजपुरी जंक्शन' के हरेक अंक अपने आप में बेमिसाल बा..अइसन अजगुत कारज खातिर फिर से अनघा बधाई आ शुभकामना

स्यन्दन सुमन, लेखक

'भोजपुरी जंक्शन' प्रयोग के पत्रिका

'भोजपुरी जंक्शन' के कुछ नया करत रहल बड़ा अच्छा लागेला। एकर ई गुण भोजपुरी साहित्य के धरोहर बन जाई।

अंकुश्री, वरिष्ठ साहित्यकार

भोजपुरी जंक्शन के बेजोड़ अंक

रंग ले आई
मेहनत आजु के
डेग बढ़ाई।

बेजोड़ अंक
भोजपुरी जंक्शन
भाव भरल।

रउवा देखीं
का बा भोजपुरी में
माटी के गीत।

भावुक संग
लिखी-पढ़ीं, पढ़ाई
किसान गीत।

खूब बधाई
करीं स्वीकार आप
अभिनंदन।

कनक किशोर, वरिष्ठ साहित्यकार

भोजपुरी का जमीनी भाव लोक के दर्शन

मनोज भावुक जी के 'किसान कवितावली' निकाले के सोच-संकल्प बेजोड़ बा। भोजपुरी भाषा-साहित्य के भंडार, कर्म का स्वर से भरल बा। एकरा लोक राग के त जबाबे नइखे।

सब गीतवे करेजा से फूटल बाड़ें सं। कविता का सरेह से गोटिया के पसारल 'किसान कवितावली नाम के' एह कविता का पथारी पर एगो हमरो गीत पसारल बा।

भावुक जी, राउर सोच भोजपुरी का जमीनी भाव लोक के दर्शन करा रहल बा। भोजपुरी का वैश्विक परिधि पर राउर नजर बा। समग्र भाव लोक के समेट के परोसे के राउर प्रयास सराहनीय बा। शारदा भवानी राउर उत्साह बनवले राखस। ईहे कामना बा।

तार से तार जोड़त रहीं, भोजपुरी के भाव लोक फलक पर झलक जाई। शुभकामना!

हरिंद्र हिमकर, वरिष्ठ साहित्यकार

भाषा की यह मानक, स्थानक और व्यापक पत्रिका

"भोजपुरी जंक्शन" पत्रिका भोजपुरी भाषा की यह मानक, स्थानक और व्यापक पत्रिका है। वर्तमान अंक की साज-सज्जा तो कल्पनातीत है। किसान के जीवन का कोई कोना अछूता नहीं रह गया है। कृषक जीवन और मरण पर कविता के बाद गद्य की विधाओं के लिए मर्द कमर कसकर तैयार है। भोजपुरी भाषा की लुनाई, कुहक, करुणाई, ठटनाई और साफगोई से भरी कविताई अत्यधिक भावप्रवण हैं। छपाई की सफाई, शुद्धता की सोंधाई, चयन की चतुराई और परोसने की सुघराई का भी जबाव नहीं- "चमकवलहीं नइखन, झमकवलहूँ बाड़न।" आचार्य म.प्र द्विवेदी की तरह इस पत्रिका के ये "पीर बावर्ची भिश्ती खर" सभी हैं।
सम्पादकी देखी, बेबाकी देखी, शराफत और लियाकत भी तो लिखने का मन बना तो शाद गाजियाबादी का शेर याद आ गया-

ढूँढ़ोगे हमें मुल्कों मुल्कों मिलने के नहीं नायाब हैं हम।
ताबीर है जिसकी हसरतोगम ऐ हमनफसों वे ख्वाब हैं हम।।
सधन्यवाद, सम्पादक!!

प्रभाकर पाठक, वरिष्ठ साहित्यकार

कवनो भाषा में लीखल गइल किसानी कविता से कवनो माने में कमतर नइखे

आजु भोजपुरी जंक्शन ई पत्रिका के किसान कवितावली अंक मिलल हा। पत्रिका के कलेवर त जानदार बड़ले बा, संपादकीय के मथेला बड़ा जानदार बा-- "कब होई किसान बनला प छाती उतान"। जोरदार समस्या से भरल प्रश्न बा जवना के उत्तर कबो आसान नइखे रहल ना रही।

एकरा अलावे करीब बासठि गो नया-पुरान भोजपुरी के कवि लोगन के गीत, कविता एकरा में परोसल गइल बा,अलग अलग किसानी समस्या आ रूप पर। ई किसानी कविता, गीत, दोसरा कवनो भाषा में लीखल गइल किसानी कविता सभन से कवनो माने में कमतर नइखे लउकत। संपादक मनोज भावुक के मेहनति सुकुलान नजर आ रहल बा। बधाई।।

अनिल ओझा नीरद, वरिष्ठ साहित्यकार

***

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

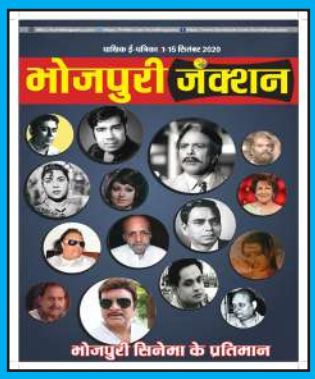
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

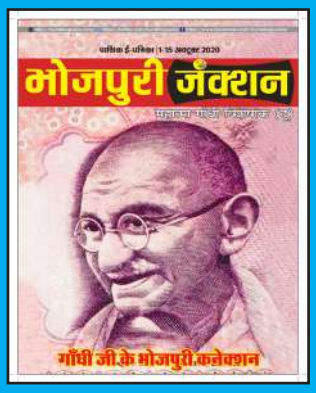
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

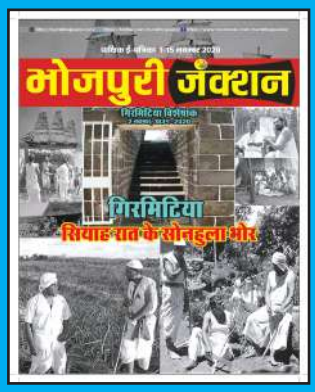
भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

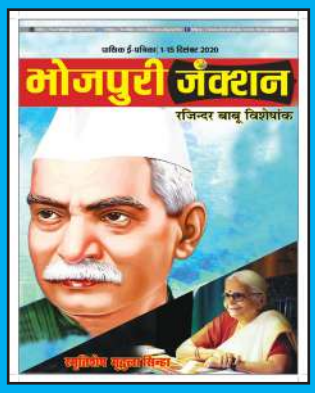
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
भोजपुरी जंक्शन
मईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

भोजपुरी जंक्शन
गाँव से खिचड़ी लाइव

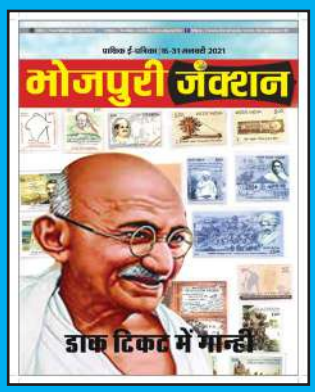
भोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

भोजपुरी जंक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

भोजपुरी जंक्शन
एगो कोरोना रहे...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16 मार्च-15 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-30 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी ?

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोविंग से बेसी
'सोचिंग' के जरूरत बा

पाक्षिक ई-पत्रिका | संतुक्तांक | 1-30 जून 2021
भोजपुरी जँक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

पाक्षिक ई-पत्रिका | संतुक्तांक | 1-31 जुलाई 2021
भोजपुरी जँक्शन
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

पाक्षिक पत्रिका | संतुक्तांक | 1-31 अगस्त 2021
भोजपुरी जँक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 सितंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-15 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 16-31 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
मन के रिचार्ज करीं

Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 नवंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

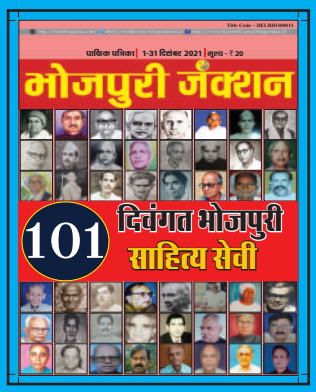
Title Code – DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका | 1-31 दिसंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
101
दिवंगत भोजपुरी
साहित्य सेवी

भोजपुरी जँक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

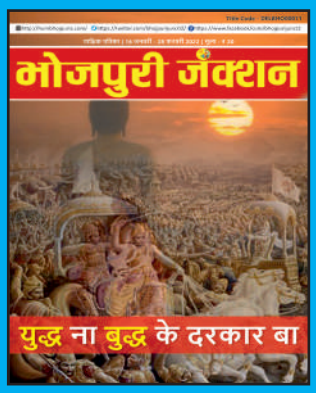
भोजपुरी जँक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जँक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

भोजपुरी जँक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जँक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जँक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -1)
कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो
- कबीर

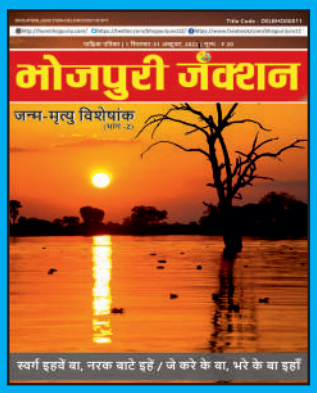
भोजपुरी जँक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -2)
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहे / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

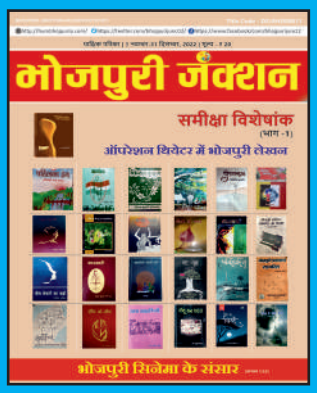
भोजपुरी जँक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी लेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जँक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जँक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जँक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

भोजपुरी जँक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-4)
बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी
भोजपुरी सिनेमा के संसार

STAY HOME STAY SAFE

GOVERNMENT OF KARNATAKA

I protect you
You protect me!

A person suffering from COVID-19 may not show symptoms but can still spread the virus. Wear face masks at all times when you step outside.

#MaskForAll

#KarnatakaFightsCorona

#breakthechain